हिकायते आफ़्ताब

इमाम रज़ा अ०

की ज़िन्दगी पर एक नज़र

लेखक
सैय्यद मोहम्मद नजफ़ी यज़दी
अनुवादकः अब्बास असग़र शबरेज़, सै. मो. हसन नक़वी

प्रकाशक
आस्तान-ए-क़ुद्से रज़वी
मुआविनते तबलीग़ात व इरतेबाते इस्लामी
मशहद, ईरान

किताब का नाम : **हिकायते आफ़ताब इमाम रज़ा अ० की ज़िन्दगी पर एक नज़र**
लेखक : सैय्यद मोहम्मद नजफ़ी यज़दी
अनुवादक : अब्बास असग़र शबरेज़,
सै. मो. हसन नक़वी

प्रकाशक
आस्तान-ए-क़ुद्से रज़वी
मुआविनते तबलीग़ात व इरतेबाते इस्लामी
मशहद, ईरान

फ़ेहरिस्त

भूमिका	9
दो शब्द	13
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] की ज़िंदगी	15
इमाम रज़ा[अ॰] की पैदाइश की तारीख़	16
इमाम रज़ा[अ॰] की माँ	17
इमाम रज़ा[अ॰] की औलाद	18
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] की विलादत	19
इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] की इमाम रज़ा[अ॰] को देखने की तमन्ना	20
क्यों इमाम रज़ा[अ॰] को 'रज़ा' कहा जाता है?	21
इमाम रज़ा[अ॰] का बचपन और जवानी	22
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] का जवानी ही में मरजए दीनी होना	24
ख़ुदावंदे आलम के नज़दीक इमाम रज़ा[अ॰] की अज़मत	25
परदेसी बेटा	26
इमाम रज़ा[अ॰] की इबादत	27
ख़ुरासान के सफ़र के बीच इमाम रज़ा[अ॰] की इबादत	28
इमाम रज़ा[अ॰] की अव्वले वक़्त नमाज़	31
इमाम रज़ा[अ॰] का लोगों के साथ मेल-जोल और आपके समाजी तौर-तरीक़े	32
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] की सख़ावत और दरियादिली	33
ज़रूरतमंदो के लिए इमाम रज़ा[अ॰] की ख़ास तवज्जो	34
ज़रूरतमंदों और ग़रीबों की इज़्ज़त और आबरू का ख़याल	35
इमाम रज़ा[अ॰] का अपने मुलाज़िमों के साथ बरताव	36
इमाम रज़ा[अ॰] की अपने शियों के लिए मेहरबानी	37
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] की अज़मत बुज़ुर्गों के कलाम में	39
हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] का इल्मी मरतबा	41
इमाम रज़ा[अ॰] के जवाबात के कुछ नमूने	44
हज़रत रज़ा[अ॰] की मुख़्तलिफ़ ज़बानों पर महारत	47
1- इमाम रज़ा[अ॰] की अपने ज़माने की बहुत सी ज़बानों को जानते थे	48
2- इमाम रज़ा[अ॰] परिंदों और हैवानों की ज़बान भी जानते थे	50

3- इमाम रज़ा[अ०] ग़ैबी इल्म भी रखते थे 51
(i) हज़रत रज़ा[अ०] की बरामकियों के बारे में पेशीनगोईयाँ 52
(ii) हारून से मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा 53
(iii) हज़रत रज़ा[अ०] की मुख़्तलिफ़ पेशीनगोईयाँ 54
(iv) हज़रत रज़ा[अ०] का माँ के पेट में मौजूद बच्चे के सेक्स के बारे में बताना 55
(v) हज़रत रज़ा[अ०] अपनी शहादत-दफ़्न की जगह को जानते थे 57
हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की कल्चरल एक्टिविटी 59
1- हद से आगे बढ़ने और बढ़ाने वालों से मुक़ाबला 61
2- हज़रत रज़ा[अ०] का सूफ़िया फ़िरक़े के साथ सख़्त रवैय्या 65
3- हज़रत रज़ा[अ०] की निगाह में इमाम की अहमियत 67
4- हज़रत रज़ा[अ०] और अमीरुलमोमिनीन[अ०] 70
अमीरुलमोमिनीन[अ०] की फ़ज़ीलत में इमाम रज़ा[अ०] की चालीस हदीसें 71
5- हज़रत रज़ा[अ०] और हज़रत फ़ातिमा[स०] 77
6- हज़रत रज़ा[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] 79
(i) हज़रत रज़ा[अ०] और ज़ियारते हुसैन[अ०] 80
(ii) इमाम रज़ा[अ०] और सैय्यदुश्शोहदा की क़ब्र 82
(iii) इमाम रज़ा[अ०] और अज़ादारी की अहमियत 83
(iv) सैय्यदुश्शोहदा इमाम हुसैन[अ०] के मसाएब पर आँसू बहाना 84
(v) इमाम हुसैन[अ०] पर रोना 85
इमाम रज़ा[अ०] की दौराने इमामत की अहम मुश्किलात 87
पहली मुश्किलः 88
वाक़फ़िया फ़िरक़ा और इमाम रज़ा[अ०] का इस फ़िरक़े के साथ मुक़ाबला 88
बहुत से शियों को वाक़फ़िया के बहकावों की वजह से गुमराह हो जाना 90
इमाम रज़ा[अ०] के वाक़फ़िया फ़िरक़े के मुक़ाबले में इक़दामात 92
इमाम रज़ा[अ०] की वाक़फ़िया फ़िरके वालों से बातचीत 93
वाक़फ़िया फ़िरक़े से दूर रहने का हुक्म 95
शियों की हिदायत के लिए इमाम रज़ा की कुछ करामतें 96
इमाम रज़ा[अ०] की ज़बानी वाकिफ़ फ़िरक़े के मानने वालों का अंजाम 97

दूसरी मुश्किलः 99
इमाम मोहम्मद तक़ी[अ] की विलादत में देरी 99
तीसरी मुश्किलः 103
इमाम अली रज़ा[अ] की वली अहदी 103
वली अहदी को क़ुबूल करने की वजह से इमाम रज़ा[अ] को शहीद करने का प्लान 105
लौह की जानकारी और इमामों के नाम 106
इमाम रज़ा[अ] की हिजरत 108
मदीने से रुख़सत 109
इमाम रज़ा[अ] के सफ़र का रास्ता 110
नबाज गाँव 111
अहवाज़ 112
फ़ारस की तरफ सफ़र 113
ख़ुरासान की तरफ़ कूच 114
नेशापूर 115
हदीस सिलसलतुज़्ज़हब 116
रिबाते साद में एक बीमार को शिफ़ा 118
दह-सुर्ख़ 119
तूस 120
सरख़्स 121
मर्व 123
वली अहदी का माजरा 124
इमाम[अ] ने अपनी शर्तों को मानने पर मजबूर किया। 127
मामून और उसके बुरे मक़सद 128
मामून की मुश्किलें और परेशानियाँ 129
नमाज़े ईदे फ़ित्र 131
देबिल का क़िस्सा 133
देबिल को इमाम[अ] का तोहफ़ा 135
शिफ़ा देने वाला कपड़ा 137
मामून की नाकामी और उसकी एक नई चाल 138
पहला क़दमः फ़ज़ल बिन सहल का क़त्ल 139
इमाम रज़ा[अ] का क़त्ल 141

इमाम रज़ा[अ०] पर हमले का नाकाम हो जाना	143
इमाम रज़ा[अ०] की शहादत	144
इमाम रज़ा[अ०] के ज़माने के कुछ ख़ास वाक़िए	148
इमाम रज़ा[अ०] की ज़ियारत की फ़ज़ीलत	154
इमाम रज़ा[अ०] की शफ़ाअत	155
जन्नती ज़ाएर	156
रसूल[स०] का ज़ाएर	157
शोहदा का सवाब	158
ख़ुदा का ज़ाएर	159
हाजतों को पूरा और ग़मों को दूर करने वाला	160
मुस्तहब हज से भी बेहतर	161
जहन्नम से निजात	162
ख़ुदा के बेहतरीन मेहमान	163
इमाम[अ०] के बराबर	164
इमाम रज़ा[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] का ज़ाएर	165
ज़ियारत के लिए उठाई जाने वाली सख़्तियों की अहमियत	166
इमाम रज़ा[अ०] की कुछ हदीसें	167
बेग़ैरत और बे-तक़वा औरतों पर होने वाला अज़ाब	170
नेकी की जज़ा	172

भूमिका

अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम इल्म और हिकमत का ऐसा समंदर हैं जिन से चौदह सौ साल से इन्सानी समाज फ़ायदा उठा रहा है। हज़रत इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया है:

ينحدر عنّی السّیل ولا یرقیٰ الیّ الطّیر

''मुझ से (इल्म व हिकमत के) चश्मे फूटते हैं मेरी बुलंदियों तक इन्सानी समझ के परिंदे पहुँच ही नहीं सकते''।

इल्म के बाग़ और हिकमत की खेती इसी ख़ानदान के नूर की वजह से लहलहा रही है। हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] ने फ़रमाया है,

انا مدینۃ العلم وعلیٌّ بابها

''मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा हैं।''

अहलेबैत[अ०] का इल्म और उनकी जानकारी ख़ुदा की तरफ़ से उन्हें अता की गई है वह किसी से सीख कर आलिम नहीं बने हैं, उनकी तमाम चीज़ों और उलूम पर पकड़ ऐसी नहीं है जैसी आम लोगों की होती है बल्कि वह चीज़ों और इल्मों की हक़ीक़त को जानते हैं।

हज़रत अली[अ०] आरिफ़ों के बारे में फ़रमाते हैं:

هجم بهم العلم علی حقیقة البصیرة وباشروا روح الیقین

उन्हें इल्म व मारफ़त ने बसीरत की हक़ीक़त तक पहुँचा दिया है और उनकी रूह और यक़ीन एक हो गए हैं।

इस नूरानी ख़ानदान के सरपरस्त रसूले ख़ुदा[स०] न किसी मदरसे में गए और न किसी से पढ़ा लेकिन उनका पैग़ाम और उनकी रिसालत का मक़सद पढ़ना, सीखना और इल्म और मारफ़त ही था। आपकी रिसालत की शुरुआत 'इक़रा' यानी पढ़ो से हुई और वह आवाज़ आज तक गूंज रही है और इल्म और मारफ़त के मतवालों की प्यास बुझा रही है।

هُوَ الَّذِی بَعَثَ فِی الاُمّیینَ رَسُولاً مِنهُم یَتلُو عَلَیهِم آیَاتِهِ وَیُزَکّیهِم وَ یُعَلِّمُهُمُ

الکِتَابَ وَ الحِکمَة

वह ख़ुदा जिसने मक्का वालों में एक रसूल भेजा जो उन्हीं में से है, वह उन पर ख़ुदा की आयतों की तिलावत करता है उनके नफ़्सों को पाक करता है और उन्हें किताब व हिकमत सिखाता है।

आप ने अपनी रिसालत के ज़रिए मुर्दा हो चुके दिलों को गुमराही के दलदल से निकाल कर हक़ीक़त के रास्तों पर ला खड़ा किया। गुमराह हो चुके, तबाही और बर्बादी के दहाने पर खड़े इन्सान को हिदायत और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ बुला लिया और मुर्दा इन्सानों में नई जान डाल दी।

اِذَادَعَاکُم لِمَا یُحیِیکُم

और जेहालत के बोझ को उनके कंधों से उतार फेंका।

یَضَعُ عَنهُم اِصرَهُم وَالاَغلاَلُ الَّتِی کَانَت عَلَیهِم

(सूरए आराफ़, आयतः १५७)

वह रसूल ﷺ उन से गुलामी के तौक़ और बेड़ियाँ उतारता है जिसमें वह जकड़े हुए थे।

आप का ख़ानदान भी आपके ज़िंदगी देने वाले पैग़ाम से जुड़ा रहा है और उन्हीं की तरह इल्म व मारफ़त की बारिश से मुर्दा-दिल इन्सानों की रूह को ताज़गी देता रहा है।

आज के मार्डन डार्क-एज में जो चीज़ इन्सान को कमाल तक पहुँचा सकती है और उसके कमाल और कामयाबी के रास्तों के अंधियारों को रौशनी में बदल सकती है वह इसी ख़ानदान और इसके इल्म व मारफ़त के समंदर से मुत्तसिल होना है।

शायद आज इन्सान को हर दौर से ज़्यादा रसूल और अहलेबैत के पैग़ामों और उन के इल्म व मारफ़त के ख़ज़ानों की ज़रूरत है।

बेशक हमारे ज़माने में भी अहलेबैते के नूरानी चश्मों को खंगालना और उनकी सीरत को उजागर करना हर ज़माने की तरह एक बड़ी ख़िदमत है और इस से बड़ी कोई दूसरी ख़िदमत नहीं हो सकती इसलिए उन सारे लोगों की यह ज़िम्मेदारी है जिनका दिल इन्सान के लिए अपने अंदर हमदर्दी पाता है, कि अहलेबैत के मआरिफ़ और इल्म के समंदर में उतरें और उनके अक़वाल और हदीसों और सीरत के क़ीमती मोतियों को निकाल कर इल्म व हिक्मत के प्यासे इन्सानों की प्यास बुझाते रहें।

अपनी ज़िम्मेदारी निभाते हुए हम आलिमे आले मोहम्मद ﷺ हज़रत इमाम रज़ा अ० की बारगाह में उन तमाम लोगों ख़ासकर बुज़ुर्ग उलमा के लिए जिन्होंने अहलेबैत अ० के उलूम को लोगों तक पहुँचाया है और इस ख़ानदान की ख़िदमत करते रहे हैं, और इस किताब को मुरत्तब करने के लिए ज़हमतें उठाई हैं दुआ करते हैं ख़ुदा उन सबको सलामती अता करे और ख़ुदा उनकी इस मेहनत को क़ुबूल फ़रमाए।

हम इमाम रज़ा अ० की ज़ियारत के लिए आने वाले तमाम लोगों से इस बात की उम्मीद करते हैं कि वह इस मेहरबान इमाम की ज़ियारत जैसी

अज़ीम नेमत के साथ आपकी हदीसों, अहकामात और सीरत से भी फ़ायदा उठाएंगे और इस मौक़े को ग़नीमत समझेंगे जो ख़ुदा ने उन्हें अता किया है और इस किताब की तरह दूसरी अच्छी, ऑथेंटिक और फ़ायदेमंद किताबों का मुतालेआ करके अपनी दुनिया व आख़िरत को कामयाब करते रहेंगे। साथ ही आस्तान-ए-क़ुद्स में मौजूद अपने ख़िदमत गुज़ारों को अपनी दुआओं में याद रखेंगे।

मुआविनते तबलीग़ात व इरतेबाते इस्लामी
आस्तान-ए-क़ुद्से रज़वी, मशहद, ईरान

दो शब्द

इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ़ ईरान के लिए बहुत फ़ख़्र की बात है कि रसूले ख़ुदा[स॰] के जिगर के टुकड़े आलिमे आले मोहम्मद[अ॰] और शियों के आठवें इमाम मेहमान बनकर इस मुल्क में मौजूद हैं क्योंकि आपकी मुबारक क़ब्र इसी मुल्क के एक मुक़द्दस शहर, ''मशहद'' में है। इस मुल्क को यह शरफ़ भी हासिल है कि हर साल, इमाम से मोहब्बत करने वाले लाखों ज़ाएर पूरी दुनिया से, आपकी क़ब्र की ज़ियारत के लिए ईरान आते हैं।

इस इमाम की बरकत से ख़ुदावंदे आलम की रहमतें अहलेबैत[अ॰] के तमाम चाहने वालों ख़ास तौर से आपके शियों पर नाज़िल होती हैं और ख़ुरासान की ज़मीन का यह हिस्सा जन्नत का एक टुकड़ा है जो आलमे मलकूत से भी बुलंद है जिस पर आसमानी हस्तियों की हमेशा तवज्जोह रहती है। इसी तरह ज़मीन पर बसने वालों के लिए हिदायत का ज़रिया भी है। ख़ुदा के फ़रिश्ते इसी मुक़द्दस रौज़े पर ज़ाएरों के साथ-साथ हाज़री देते रहते हैं।

कितनी बरकतें व रहमतें हैं जो ख़ुदा ने इस मेहरबान इमाम की ज़ियारत के तुफ़ैल में आपके ज़ाएरों और चाहने वालों पर नाज़िल की हैं।

इमाम रज़ा की ज़ियारत और आपके चाहने वालों का एक सैलाब, आपके रौज़े पर उमंडता है और दीन की रूह, आख़िरत की याद और ख़ुदा के अहकाम की तरफ़ तवज्जोह को इस्लामी दुनिया में एक बार फिर ताज़ा कर देता है। इस पाक माहौल और साफ़ और नूरानी फ़िज़ाओं में इन्सान का दिल सुकून, इत्मिनान और पाकीज़गी का एहसास करता है। लोग अपनी हाजतों, ज़रूरतों और दुआओं को इस इमाम के वसीले से ख़ुदा की बारगाह में पेश करते हैं और ख़ुदा की इनायतों और रहमतों से अपनी झोली भर कर जाते हैं।

इसलिए बहुत मुनासिब है कि इस ज़ियारत से और ज़्यादा फ़ायदा उठाने के लिए आपकी ज़िंदगी की झलक, सीरत और आपके बुलंद सिफ़ात पर एक नज़र डाली जाए ताकि हमारी ज़ियारत आपकी सही पहचान और मारफ़त के साथ हो सके और हम पर ख़ुदावंदे आलम की ज़्यादा से ज़्यादा इनायतें हों और हम आठवें इमाम हज़रत इमाम अली बिन मूसा अल-रज़ा से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें।

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की ज़िंदगी

- नामः अली
- वालिद का नामः इमाम मूसा बिन जाफ़र[अ०]
- माँ का नामः जनाबे ''नजमा'' या ''तकतम''
- कुन्नियतः ''अबुल हसन''
- लक़बः ''रज़ा''
- पैदाइश की तारीख़ः 11 ज़ीक़ादा 148[हि०]
- पैदाइश का मुक़ामः मदीना मुनव्वरा
- आपकी औलादः ''हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी''[अ०] (इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के अलावा आपकी और औलादें भी थीं इस बारे में इख़्तेलाफ़ है।)
- आपके ज़माने के हाकिमः मंसूर दवानेक़ी, मेहदी अब्बासी, हादी अब्बासी, हारून अब्बासी, मोहम्मद अमीन अब्बासी और मामून अब्बासी।
- वली अहदी की तारीख़ः रमज़ान 201[हि०] (मामून अब्बासी के मजबूर करने पर वली अहदी क़ुबूल की)।
- आपकी उम्रः 55 साल (मशहूर है)
- शहादत की तारीख़ः सफ़र के महीने का आख़िरी दिन 203[हि०]
- क़ातिल का नामः 'मामून अब्बासी' ने ज़हर देकर शहीद किया
- रौज़ाः मशहदे मुक़द्दस, जो एक वर्ल्ड-फ़ेमस शहर है[1]

[1] बिहारूल अनवार, जि०: ४६, पेजः २, इसके अलावा हज़रत की पैदाइश और शहादत के बारे में बहुत सी रिवायतें मिलती हैं।

इमाम रज़ा[अ०] की पैदाइश की तारीख़

मशहूर मोहद्दिसीन और मोअर्रिख़ीन (Historians) ने आपकी विलादत की तारीख़ 11 ज़ीक़ादा 148[हि०] बताई है[1] और यह वही साल है जिसमें हज़रत इमाम सादिक़[अ०] की शहादत हुई है लेकिन कुछ लोगों के हिसाब से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की शहादत के पाँच साल बाद इमाम रज़ा[अ०] की विलादत हुई थी।[2]

---

1 आलामुलवरा पेजः ३०२, बिहारूल अनवार, जि०: ४९ पेजः ३

2 उयूनु अख़बार्रिरज़ा जि०: १, पेजः १८, मुरव्वेजुज़्ज़हब जि०: ३, पेजः ४४१, इसबातुल वसीया पेजः १८२

इमाम रज़ा[अ०] की माँ

आपकी माँ का नाम ‘नजमा’ या ‘तकतम’ था। इमाम की विलादत के बाद आपकी माँ को ताहिरा (पाकीज़ा) कहा जाने लगा था।[१]

आपकी माँ एक पाकदामन, ज़हीन[२] और अजम के बुज़ुर्ग ख़ानदान की औरत थीं[३]। रिवायतों में आया है की आपकी वालिदा तकतम ने फ़रमाया कि मुझे एक दाया की ज़रूरत है (ताकि हज़रत रज़ा[अ०] को दूध पिला सके)। आप से पूछा गया कि क्या आपका दूध कम हो गया है तो फ़रमाया कि नहीं! लेकिन मेरी नमाज़ों और ख़ुदा के ज़िक्र में इमाम रज़ा[अ०] की पैदाइश के बाद से कमी हो गई है।[४]

---

1 उयूनु अख़बार्रिरज़ा जि०: १, पेजः १५

2 उयूनु अख़बार्रिरज़ा जि०: १, पेजः १७

3 अहक़ाक़ुल हक़, जि०: १२, पेजः ३४३, यनाबी उल मवददत से नक़्ल किया।

4 बिहारूल अनवार जि०: ४६, पेजः ५,

इमाम रज़ा[अ०] की औलाद

ऐतिहासिक के बीच हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की औलाद के बारे में इख़्तेलाफ़ है। कुछ का कहना है कि इमाम मोहम्मद तक़ी जवाद ही आपके अकेले बेटे थे जैसे शेख़ मुफ़ीद, इब्ने शहर आशोब[1], लेकिन कुछ ने आपकी दूसरी औलाद के नाम भी गिनाए हैं जिनमें से एक फ़ातिमा नाम की बेटी भी है।[2]

लेकिन कुछ रिवायतों से भी यह पता चलता है कि इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ही अपने वालिद के अकेले बेटे थे। हन्नान बिन सुदीर नाम के शख़्स का कहना है कि मैंने हज़रत इमाम रज़ा[अ०] से कहा, ''क्या ऐसा हो सकता है कि इमाम बग़ैर औलाद और जानशीन के हो?'' इमाम ने फ़रमाया, ''नहीं! जान लो कि मेरा सिर्फ़ एक बेटा होगा लेकिन ख़ुदा उसको बहुत ज़्यादा औलाद अता करेगा[3]।

---

1 अल इरशाद, जि०: २, पेजः २६३, मनाक़िब, जि०: ४, पेजः ३६७

2 मुन्तहल आमाल, जि०: २, पेजः ३५२

3 बिहारूल अनवार जि०: ४६, पेजः २२१

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की विलादत

इमाम रज़ा[अ०] की माँ जनाबे नजमा कहती हैं कि मैं अपने बेटे अली के पेट में होने के दिनों में किसी तरह का बोझ नहीं महसूस करती थी और सोते वक़्त अपने अंदर से ज़िक्र की आवाज़ सुनती थी जिस से मैं डर जाती थी। जब आप दुनिया में आए तो आपने अपने हाथों और पैरों को ज़मीन पर रखा और सर को आसमान की तरफ़ बुलंद किया, आपके होंट इस तरह हिल रहे थे जैसे कोई किसी से बातें करता है।

हज़रत मूसा बिन जाफ़र ने जब अपने बेटे को देखा तो फ़रमाया,

''هنیاًلک یانجمه کرامة ربّک'' (ऐ नजमा! तुम्हें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से बुज़ुर्गवारी और करामत मुबारक हो) फिर बच्चे को सफ़ेद कपड़े में लपेट कर आप को दिया गया। हज़रत इमाम मूसा काज़िम ने अपने बेटे के दाहिने कान में अज़ान और बाएं में अक़ामत कही और फ़ुरात का पानी मंगवा कर आपको चटाया और आपकी माँ से फ़रमाया, ''इसको ले लो यह अल्लाह की ज़मीन पर बाक़ी रहने वाली चीज़ों में से है''[1]।

हज़रत इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने इमाम रज़ा की पैदाइश के बाद आपकी माँ को ताहेरा यानी पाकीज़ा का लक़ब दिया था।[2]

---

1 उयूनु अख़बारिर्रज़ा जि०: २, पेज: २५०

2 बेहारूल अनवार जि०: ४६, पेज: ७

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की इमाम रज़ा[अ०] को देखने की तमन्ना

हज़रत इमाम मूसा काज़िम[अ०] अपने बेटों से फ़रमाया करते थेः तुम्हारा यह भाई आलिमे आले मोहम्मद है। अपने दीन के बारे में इस से सवाल करो, जो कुछ वह कहे उसे याद कर लो मैंने अपने वालिद हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद से बार-बार सुना है कि मुझ से फ़रमाते थे,

اِنَّ عالم آل محمد لفی صلبک ولیتنی ادرکته فانّه سمّی امیر المومنین علی

यानी आलिमे आले मोहम्मद तुम्हारी नस्ल से है। काश मैं उसे देख पाता, उसका नाम हज़रत अमीरुल मोमिनीन के नाम पर अली है।[1]

रसूले ख़ुदा[स०], अमीरुलमोमिनीन[अ०], और इमाम सादिक़[अ०] की बहुत सी रिवायतों से इमाम अली रज़ा[अ०] की शहादत, ख़ुरासान में क़ब्र और उसकी ज़ियारत के बेइन्तहा सवाब के बारे में पता चलता है जिसके बारे में आगे चल कर बयान किया जाएगा।

---

[1] बेहारूल अनवार जि०: ४६, पेजः १००, आलामुल वरा, पेज ३१५ से नक़्ल किया

क्यों इमाम रज़ा[अ०] को 'रज़ा' कहा जाता है?

इमाम रज़ा[अ०] और इमाम जवाद[अ०] के बुज़ुर्ग सहाबियों में से एक शख़्स 'अबूनस्र बज़िन्ती' का कहना है कि मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से अर्ज़ कियाः ''आपके बहुत से मुख़ालिफ़ों का मानना है कि मामून ने आपके बाबा को रज़ा का लक़ब दिया था जिसकी वजह यह है कि उसने हज़रत को अपनी वली अहदी के लिए पसंद कर लिया था''। हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ने फ़रमाया, ''ख़ुदा की क़सम यह लोग झूठे हैं और गुनाहगार हैं। आपको ख़ुदावंदे आलम ने रज़ा नाम दिया है क्योंकि आप आसमान में ख़ुदा के और ज़मीन पर रसूलल्लाह[स०] और उनके बाद आने वाले अइम्मा के पसंदीदा शख़्स थे''।

मैंने इमाम से पूछा, ''क्या आपके पहले के सारे इमामों में यह सिफ़त नहीं पाई जाती थी? आप ने फ़रमाया, 'हाँ'! मैंने कहा, फिर इन सब में से सिर्फ़ आपके बाबा ही को ''रज़ा'' लक़ब क्यों मिला तो इमाम ने फ़रमाया, ''क्योंकि उनके दुश्मन भी दोस्तों ही की तरह उनसे राज़ी थे और यह बात उनसे पहले के इमामों में से किसी के साथ भी नहीं हुई थी इसीलिए इन सब में से सिर्फ़ उनको ही रज़ा के नाम से याद किया गया''।[1]

इसी बात की ताईद सुलेमान बिन हफ़्स के क़ौल से भी होती है कि उनका कहना हैः इमाम मूसा काज़िम ने अपने बेटे अली को रज़ा नाम दिया था (और जब हज़रत का ज़िक्र करना चाहते थे तो) फ़रमाते थे, मेरे बेटे रज़ा को बुला दो, या ''अपने बेटे रज़ा से मैंने कहा'' या मेरे बेटे रज़ा ने मुझ से यूँ कहा..[2]

---

1 उयूनु अख़बार्रिरज़ा जि०: १, पेजः १३, इललुश शराए, जि० १, पेजः २३७

2 इललुश शराए, जि०: १, पेजः २२६

इमाम रज़ा[अ०] का बचपन और जवानी

इमाम रज़ा के बचपने और जवानी के बारे में तारीख़ में ज़्यादा कुछ नहीं मिलता क्योंकि तारीख़ लिखने वालों ने भी हंगामे और उथल-पुथल वाले वाक़िओं और दूसरों की तवज्जोह अपनी तरफ़ खींचने वाले लोगों ही के बारे में लिखना पसंद किया है और उन लोगों पर ज़्यादा तवज्जोह नहीं दी जो हर तरह के लड़ाई-झगड़े और शोर शराबे से दूर हों, न अपने लिए किसी ओहदे के ख़्वाहिशमंद हों और न उन्हें दौलत की लालच और हवस हो। ख़ास कर अहलेबैत [अ०] की तरफ़ तो तारीख़ लिखने वालों का ध्यान बिल्कुल नहीं जाता था क्योंकि हुकूमतों की कोशिश यही होती थी कि उनको पब्लिक से दूर रखा जाए। इसके अलावा उस ज़माने के स्कॉलर्स भी मज़हब से अपनी मुख़ालिफ़त की वजह से मासूमीन[अ०] की शख़्सियत और पर्सनालिटी को मध्धम करने की कोशिश करते रहते थे। यही चीज़ सबसे बड़ी वजह बनी कि अगली नस्ल तक अहलेबैत[अ०] की इमामत से पहले की ज़िंदगी और कभी-कभी इमामत के बाद की ज़िंदगी के वाक़िआत और मालूमात नहीं पहुँच सके।

जो कुछ तारीख़ में आया है वह यह है कि ''इमाम रज़ा'' के वालिद आप से बहुत ज़्यादा मोहब्बत करते थे। इमाम मूसा[अ०] के एक सहाबी मुफ़ज़्ज़ल का कहना है कि मैं इमाम काज़िम[अ०] की ख़िदमत में आया तो देखा कि उनके बेटे ''अली''[अ०] उनकी गोद में बैठे हैं। हज़रत मूसा काज़िम[अ०] कभी उनको प्यार करते हैं तो कभी अपने कंधों पर बिठाते हैं और फिर अपने सीने से लगाते हैं और फ़रमाते जाते हैं कि मेरे बाप तुम पर क़ुरबान जाएं! कितनी प्यारी ख़ुश्बू वाले हो, तुम्हारी ख़िलक़त कितनी पाकीज़ा है और तुम्हारी फ़ज़ीलतें कितनी रौशन हैं।

मुफ़ज़्ज़ल ने कहा, ''क़ुरबान जाऊँ आप पर! मेरे दिल में इस बच्चे से इतनी मोहब्बत हो गई है जितनी मुझे आपके अलावा कभी किसी से नहीं हुई।''

हज़रत मूसा काज़िम ने फ़रमाया, ''ऐ मुफ़ज़्ज़ल! यह मेरे लिए बिल्कुल उसी तरह है जिस तरह मैं अपने बाबा के लिए हूँ उन औलादों की तरह जो कुछ दूसरी औलादों से होती हैं और ख़ुदावंदे आलम सुनने वाला और जानने वाला है''।

रावी कहता है मैंने अर्ज़ कियाः क्या यह आपके बाद आपके जानशीन होंगे?

इमाम ने फ़रमायाः ''हाँ! जो इसकी इताअत और पैरवी करेगा वह हक़

तक पहुँच जाएगा और जो उसकी नाफ़रमानी करेगा वह काफ़िर हो जाएगा''।[1]

कभी आप फ़रमाया करते थे कि मेरा सबसे बड़ा बेटा 'अली' सबसे ज़्यादा मेरी बातों को सुनता है और सबसे ज़्यादा मेरा फ़रमां बरदार है वह मेरे साथ जफ़र व जामेआ (अहलेबैत अलै० के उलूम से मुताल्लिक़ दो किताबें) पढ़ता है जिन किताबों पर नबी और उनके वसी के अलावा कोई नज़र नहीं डाल सकता।[2]

---

[1] उयूनु अख़बार्रिरज़ा, जि०: १, पेजः २६

[2] बसाएरुद्दरजात, जुज़: ३, बाब-१४, जि०: २४, पेजः २०

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] का जवानी ही में मरजए दीनी होना

इमाम रज़ा[अ०] जवानी से ही इतने इल्म और फ़ज़ीलत के मालिक थे कि लोग अपने मसाएल आप से पूछते थे। हज़रत इमाम काज़िम[अ०] भी लोगों को आपके पास भेज दिया करते थे और फ़रमाते थेः ''मेरे बेटे की लिखी हुई चीज़ मेरी लिखी हुई चीज़ है, उनकी बात मेरी बात है, उनका भेजा हुआ मेरा भेजा हुआ है जो वह कहें वही हक़ है''।[1]

एक बार किसी ने हज़रत इमाम मूसा काज़िम[अ०] से कहा, ''मेरा आप से एक सवाल है।'' इमाम ने फ़रमाया, ''अपने इमाम से पूछ लो।'' उसने हैरत से पूछा, ''आपका इशारा किसकी तरफ़ है? मैं तो आपको ही इमाम समझता हूँ।'' इमाम ने फ़रमाया, ''वह मेरा बेटा अली[अ०] है। मैंने अपनी कुन्नियत 'अबुल हसन' उसको दे दी है।''[2]

अहले सुन्नत के एक आलिम इब्ने हुजर का कहना है,

كَانَ يُفتِى فِى مَسجِدِ رَسُولِ اللهِ وَهُوَ ابنُ نَيِّفٍ وعشرين سَنَةً

यानी इमाम रज़ा[अ०] बीस-बाइस साल की उम्र में मस्जिदे रसूले ख़ुदा[स०] में फ़तवे दिया करते थे।[3]

अहले सुन्नत के ही एक और आलिम ज़हबी का कहना है कि अहले सुन्नत के चार इमामों में से एक 'इमाम मालिक' के ज़माने में हज़रत इमाम रज़ा[अ०] फ़तवे देते थे जबकि आप अभी जवान ही थे।[4]

---

1 उसूले काफ़ी, जि०: १, पेजः १२, उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: १, पेजः ३१, अल-इरशाद, जि०: २ पेजः २५०

2 अल-ग़ैबत, शेख़ तूसी, पेजः २६, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः २५ को देखें

3 तह्ज़ीबुत्तह्ज़ीब, जि०: ७, पेजः ३३६

4 सैरे आलामुन्नबला, जि०: ६, पेजः ३८८

ख़ुदावंदे आलम के नज़दीक इमाम रज़ा[अ०] की अज़मत

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] फ़रमाते हैं कि इमाम रज़ा[अ०] के एक सहाबी बीमार हो गए (उनकी हालत ऐसी थी कि लगता था रूह निकलने वाली है)। हज़रत इमाम रज़ा[अ०] उनकी अयादत और ख़ैरियत मालूम करने तशरीफ़ ले गए। आप ने उस से पूछा, ''कैसे हो?'' उन्होंने कहा, ''मेरी हालत बहुत ज़्यादा ख़राब है और मौत मेरे सामने है।'' इमाम ने पूछा, ''तुम ने मौत को कैसा पाया?'' उन्होंने कहा, ''सबसे ज़्यादा सख़्ती वाला और तकलीफ़ देने वाला।'' आप ने फ़रमाया, ''यह तो शुरुआत है, अभी उसने अपनी एक झलक तुम्हें दिखाई है। लोग दो तरह के होते हैंः कुछ ऐसे होते हैं जिनको मौत से सुकून मिल जाता है और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनकी मौत से दूसरों को सुकून मिलता है। ख़ुदा पर और विलायत पर दोबारा ईमान लाओ (यानी *अशहदो अन ला इला-ह इल लल्लाह* और *अशहदो अन्ना मोहम्मदुर रसूलुल्लाह* कहो और हमारी विलायत का दोबारा इक़रार करो) ताकि तुम्हें सुकून मिल जाए।''

उसने ऐसा ही किया और फिर कहा, ''ऐ रसूले ख़ुदा[स०] के बेटे! मेरे परवरदिगार के फ़रिश्ते दुरूद और तहाएफ़ के साथ आप पर सलाम भेज रहे हैं और आपके सामने खड़े हैं, उनको बैठने की इजाज़त दे दें।''

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''ऐ ख़ुदा के फ़रिश्तों बैठ जाओ।'' फिर आप ने उस बीमार से फ़रमाया, ''इन फ़रिश्तों से पूछो कि क्या उन्हें यह हुक्म दिया गया है कि मेरे सामने खड़े रहें?''

बीमार ने फ़रिश्तों से इमाम का सवाल दोहराया तो उन्होंने जवाब दिया, ''अगर ख़ुदावंदे आलम के सारे फ़रिश्ते आपके सामने हों तो आपके एहतेराम में खड़े रहेंगे और जब तक आप इजाज़त नहीं दे देंगे बैठेंगे नहीं। ख़ुदा ने ऐसा ही करने का उन्हें हुक्म दिया है।''

फिर उस मरीज़ ने आँखें बंद कर लीं और कहने लगा, ''सलाम हो आप पर ऐ अल्लाह के भेजे हुए! यह आप हैं जो मेरे सामने ख़ुदा के रसूल[स०] और दूसरे इमामों ही की तरह बाअज़मत हैं और उसकी रूह जिस्म से निकल गई।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ७२, दावात रावंदी से रिवायत को नक़्ल किया गया

परदेसी बेटा

शेख़ सदूक़ से रिवायत है कि एक नेक शख़्स ने रसूले ख़ुदा[सं०] को ख़्वाब में देखा और आप से पूछा, ''ऐ रसूले ख़ुदा![सं०] आपके किस बेटे की ज़ियारत करूँ?'' हज़रत रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया, ''मेरे कुछ बेटे मेरे पास इस हालत में आएंगे कि उनको ज़हर दिया गया होगा और कुछ इस तरह आएंगे कि उनको क़त्ल किया गया होगा।'' उसने पूछा, ''उनकी क़ब्रें तो अलग-अलग जगहों पर हैं उनमें से किसकी ज़ियारत करूँ?'' रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया, ''उसकी जो तुम से ज़्यादा क़रीब है और परदेस में उसको दफ़न किया गया है।'' उसने पूछा, क्या आप इमाम रज़ा[अ०] के बारे में फ़रमा रहे हैं?'' रसूले ख़ुदा[सं०] ने फ़रमाया, ''कहो सल-लल्लाहो अलैहि, कहो सल-लल्लाहो अलैहि, कहो सल-लल्लाहो अलैहि।''[1]

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ३२६, उयूनु अख़बारिर्ज़ा से नक़्ल किया

इमाम रज़ा[अ०] की इबादत

इबादत की तरफ़ तवज्जोह और ख़ुदा की इबादत, ज़िक्र व तसबीह और दिन रात की ख़ास दुआओं के लिए वक़्त देना अहलेबैत[अ०] के रोज़ाना के कामों का हिस्सा हुआ करता था। लोगों की मुलाक़ातों, मसरूफ़ियात, लेक्चर्स और तरह-तरह की मुश्किलात के होते हुए भी इन बड़ी हस्तियों ने कभी इबादत में कोई कमी नहीं की। यह उनके पैरोकारों और चाहने वालों के लिए बहुत बड़ा सबक़ है।

यहाँ पर हम हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की इबादत के कुछ नमूने बयान कर रहे हैं:-

1- सुबह की नमाज़ के बाद सजदे में जाते थे और सूरज निकलने तक आप सजदे में ही रहते थे।

2- जब कभी ज़रा फ़ुरसत मिलती तो दिन भर में एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ते थे।

3- नमाज़ के बाद हमेशा सजद-ए-शुक्र बजा लाते थे।

4- क़ुरआन से इतना लगाव था कि आपकी हर बात, सारे जवाब और मिसालें क़ुरआन से होती थीं।

5- हर तीन दिन में एक क़ुरआन ख़त्म कर देते थे और फ़रमाते थे कि अगर चाहूँ तो इससे कम वक़्त में भी ख़त्म कर सकता हूँ लेकिन हर आयत पर रुकता हूँ और ग़ौर करता हूँ कि कहाँ और कब नाज़िल हुई।

6- रात में आप कम सोते थे और ज़्यादा तर रातों को जाग कर गुज़ारते थे।

7- बहुत ज़्यादा रोज़े रखते थे और महीने के तीन रोज़े आप से कभी नहीं छूटते थे।

8- अपनी दुआओं से पहले सलवात पढ़ते थे और नमाज़ के अलावा भी सलवात बहुत ज़्यादा पढ़ा करते थे।

9- रात में बिस्तर पर क़ुरआन की बहुत तिलावत करते थे और जब जन्नत और दोज़ख़ की आयतों पर पहुँचते थे तो बहुत रोते थे।

10- हर वक़्त ख़ुदा का ज़िक्र किया करते थे और सबसे बढ़कर ख़ुदा का ख़ौफ़ रखते थे।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: ६० से ६४ तक, अलग-अलग हदीसों से लिया गया

ख़ुरासान के सफ़र के बीच इमाम रज़ा[अ०] की इबादत

रजा इब्ने अबी ज़हाक जो अब्बासी हुकूमत का एक ओहदेदार था और मामून अब्बासी के ज़माने में वज़ारते ख़ज़ाना उसी के पास थी। मामून की तरफ़ से उसको ज़िम्मेदारी दी गई थी[1] कि इमाम रज़ा[अ०] को मदीने से मर्व मामून के पास पहुँचा दे, हज़रत पर नज़र रखे और उन्हें कुम के रास्ते से ना लाकर बसरा, अहवाज़ और फ़ारस के रास्ते सफ़र कराए। उसका कहना है, ''मैं मदीने से मर्व तक आपके साथ था। ख़ुदा की क़सम! मैंने किसी ज़माने में भी आप से ज़्यादा तक़वे वाला, ख़ुदा को याद करने वाला और ख़ुदा से इतना ख़ौफ़ रखने वाला नहीं देखा। आपका तरीक़ा यह था कि सुबह की नमाज़ के बाद नमाज़ की ही जगह पर बैठ जाते थे और सुब्हानल्लाहे वल हम्दु लिल्लाहे वल्लाहो अकबर व ला इला-ह इल लल्लाह के ज़िक्र और रसूल[स०] और आले रसूल[स०] पर सलवात में सूरज निकलने तक मशगूल रहते थे और फिर सजदे में जाते थे और जब तक दिन नहीं निकल आता था सजदे से सर नहीं उठाते थे। इसके बाद लोगों से गुफ़्तगू करते थे और उन्हें नसीहत देते थे। फिर ज़ोहर के क़रीब दोबारा वुज़ू करते थे और अपनी नमाज़ की जगह पर आ जाते थे और आठ रकअत नाफ़िला की नमाज़ पढ़ते थे (उसी ख़ास तरीक़े से जो रिवायात में बयान हुआ है)। फिर अज़ान व अक़ामत कहकर ज़ोहर की नमाज़ पढ़ते थे। नमाज़ के बाद थोड़ी देर तस्बीह और हम्द और तकबीर और *ला-इला-ह इल-लल्लाह* कहा करते थे फिर शुक्र का सजदा अदा करते थे और उसमें सौ बार *शुक्रन लिल्लाह* कहा कहते थे। फिर आठ रकअत अस्र की नमाज़े नाफ़िला पढ़ते थे (उसी ख़ास तरीक़े के साथ) और फिर अस्र की नमाज़ शुरु कर देते थे। नमाज़े अस्र के बाद भी थोड़ी देर तस्बीह, हम्द, तकबीर और *ला-इला-ह इल-लल्लाह* कहते थे फिर सजदे में जाते थे और सौ मरतबा *हम्दन लिल्लाह* कहते थे। सूरज गुरूब होने के बाद फिर वुज़ू करते थे और अज़ान व अक़ामत कहकर नमाज़े मग़रिब पढ़ते थे। नमाज़ के बाद कुछ देर तस्बीह, हम्द, तकबीर और *ला-इला-ह इल लल्लाह* कहते थे और शुक्र के सजदे में चले जाते थे। इसके बाद चार रकअत मग़रिब की नमाज़े नाफ़िला दो सलाम और क़ुनूत के साथ पढ़ते थे।

इसके बाद थोड़ी देर ताक़ीबाते नमाज़ पढ़ते थे और फिर अफ़तार करते

---

[1] लुग़त नामए दहख़ुदा जि०: २३, पेज: २८६

थे और जब रात का एक तिहाई हिस्सा गुज़र जाता था आप नमाज़े इशा शुरु करते थे और फिर नमाज़ की जगह पर कुछ देर बैठते थे और ख़ुदा का ज़िक्र करते थे, हम्द और *ला-इला-ह इल-लल्लाह* कहते थे ताक़ीबात और शुक्र के सजदे के बाद आप बिस्तर पर चले जाते थे।

जब रात का आख़िरी एक तिहाई हिस्सा बाक़ी बचता था तो तस्बीह, हम्द, तकबीर और *ला-इला-ह इल-लल्लाह* कहते हुए बिस्तर से उठ जाते थे और मिस्वाक करते थे और वुज़ू करके ग्यारह रकअत नमाज़े शब पढ़ते थे (उसी ख़ास तरीक़े से जो रिवायात में बयान हुआ है)। नमाज़ के बाद ताक़ीबात पढ़ते थे फिर नमाज़े सुबह से पहले दो रकअत नमाज़े फ़ज्र पढ़ते थे और जब नमाज़ का वक़्त हो जाता था तो अज़ान और अक़ामत कहकर सुबह की दो रकअत नमाज़ पढ़ते थे। सलाम के बाद सूरज निकलने तक ताक़ीबात पढ़ते थे। इसके बाद शुक्र के दो सजदे बजा लाते थे यहाँ तक कि दिन निकल आता था।

जिस शहर में भी दस दिन ठहरने का इरादा होता था वहाँ दिन में रोज़ा रखते थे और जब रात होती थी तो अफ़तार से पहले नमाज़ पढ़ते थे और अगर दस दिन से कम रुकने का इरादा होता था तो वाजिबी नमाज़ों को दो रकअत पढ़ते थे सिवाए मग़रिब की नमाज़ के। आप मग़रिब की नमाज़े नाफ़िला, नमाज़े शब और दो रकअत फ़ज्र को न सफ़र में और न सफ़र के अलावा कभी नहीं छोड़ते थे मगर, ज़ोहर और अस्र, के नाफ़ले को सफ़र में छोड़ देते थे और हर उस नमाज़ के बाद जिसको क़स्र पढ़ते थे तीस मरतबा तस्बीहाते अरबा (*सुब्हानल्लाह वल-हम्दु लिल्लाह वला-इला-ह इल-लल्लाह वल्लाहो अक्बर*) पढ़ते थे और फ़रमाते थे कि इस से नमाज़ कामिल हो जाती है।

सफ़र में आप रोज़ा नहीं रखते थे और दुआ के वक़्त पहले रसूल[स०] और आले रसूल[अ०] पर सलवात भेजते थे और इस सलवात को नमाज़ और नमाज़ के बाद ज़्यादा भेजा करते थे।

रातों को जब बिस्तर पर होते थे तो क़ुरआन की बहुत ज़्यादा तिलावत किया करते थे। जब भी आप किसी ऐसी आयत पर पहुँचते थे जिस में जन्नत या आग का ज़िक्र होता था तो रोने लगते थे और ख़ुदा से जन्नत की दुआ करते थे और आग और दोज़ख़ से पनाह माँगते थे।

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] अपनी तमाम नमाज़ों में बिस्मिल्लाह को ज़ोर से पढ़ते थे...

हज़रत जिस शहर में भी जाते थे लोग आपके पास आते थे और दीन के बारे में आप से सवाल करते थे और आप उन लोगों को जवाब देते थे और बहुत सी रिवायतें अपने आबाओ अजदाद इमाम अली[अ०] और रसूले ख़ुदा[स०]

से नक़ल फ़रमाते थे।

रज़ा इब्ने ज़हाक का बयान है कि जब मैं इमाम रज़ा[अ०] को मामून रशीद के पास ले गया और उसने मुझ से आपके साथ सफ़र की रिपोर्ट माँगी और मैंने इमाम के सारे हालात और दास्तान उसको सुनाई तो उसने कहाः सही है अबी ज़हाक के बेटे अली बिन मूसा[अ०] ज़मीन पर रहने वालों में सबसे बेहतर, सबसे ज़्यादा जानने वाले और सबसे ज़्यादा आबिद हैं। जो कुछ तुम ने देखा है किसी से मत कहना क्योंकि मैं चाहता हूँ कि हज़रत के फ़ज़ाएल मैं अपनी ज़बान से लोगों को बताऊँ (हालांकि इस से मामून का मक़सद आपके फ़ज़ाएल को छुपाना था) और मैं जो नियत रखता हूँ कि आपकी मन्ज़ेलत को बुलंद करूँ उसमें ख़ुदा की मदद चाहता हूँ।[1]

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: २, पेजः १७८

इमाम रज़ा[अ०] की अव्वले वक़्त नमाज़

इमाम रज़ा[अ०] अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ने को बहुत अहमियत देते थे क्योंकि अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ना एक मुसलमान की ज़ेहानत, होशियारी, दीनदारी, ख़ुदा और मानवियत की तरफ़ तवज्जोह की दलील है जो लोग अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ते हैं वह ज़्यादा तर दीनी और मानवी एतेबार से ऊँचे मरतबे वाले होते हैं।

एक मरतबा इमरान साएबी जो उस ज़माने का मशहूर स्कॉलर था इमाम रज़ा के साथ बातचीत कर रहा था और बहस बहुत अहम मोड़ पर थी कि तभी इमाम[अ०] अपनी जगह से उठ खड़े हुए और मामून (जो उस गुफ़्तगू की निगरानी कर रहा था) से कहा कि नमाज़ का वक़्त हो गया है। इमरान ने कहा कि मेरा दिल नर्म हो गया है और मैं (इस्लाम क़ुबूल करने के लिए) क़रीब-क़रीब तैयार हूँ मेरे सवालों के जवाब को बीच में न छोड़ें। हज़रत ने फ़रमायाः नमाज़ पढ़कर आता हूँ।[1]

एक दूसरी हदीस में इब्राहीम इब्ने मूसा से रिवायत है कि वह कहता है, इमाम रज़ा[अ०] से एक बार मैंने मदद की दरख़्वास्त की। आप ने मेरी मदद का वादा कर लिया। एक बार इमाम रज़ा[अ०] कुछ अलवियों से मुलाक़ात करने के लिए निकले और रास्ते में नमाज़ का वक़्त हो गया, आप अपनी सवारी से नीचे उतरे। यहाँ मेरे और उनके अलावा कोई नहीं था। मुझ से आप ने फ़रमाया कि अज़ान दो! मैंने अर्ज़ की, थोड़ा रुक जाइए ताकि अस्हाब भी आ जाएं। इमाम ने फ़रमाया, ख़ुदा तुम्हारी मग़फ़िरत करे! नमाज़ को कभी बग़ैर बात के अव्वले वक़्त से आख़िर वक़्त तक के लिए न टाला करो और हमेशा अव्वले वक़्त नमाज़ पढ़ा करो। मैंने अज़ान दी और फिर हम लोगों ने नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद मैंने इमाम से कहा, आपके वादे को काफ़ी वक़्त हो गया है और मैं अभी तक ज़रूरतमंद हूँ, आप भी मसरूफ़ रहते हैं और मेरा आप तक पहुँचना भी मुश्किल होता है। उस वक़्त इमाम रज़ा[अ०] ने ज़मीन पर अपना हाथ मारा और सोने का एक टुकड़ा बाहर निकाला और कहा, इसे ले लो, ख़ुदावंदे आलम तुम्हें बरकत दे! इसको अपने काम में लाओ और जो कुछ तुम ने देखा है उसे छुपाए रखना।

वह शख़्स कहता हैः उस माल में इतनी बरकत हुई कि उस से मैंने सत्तर हज़ार दीनार ख़रीदे और ख़ुरासान के मालदार लोगों में मेरा शुमार होने लगा।[2]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: १, पेजः १३६

[2] बिहारुल अनवार जि०: ४६, पेजः ४६, उसूले काफ़ी जि०: २, पेजः ४०६ खुलासा

इमाम रज़ा[अ०] का लोगों के साथ मेल-जोल और आपके समाजी तौर-तरीक़े

1- इमाम[अ०] जब लोगों के पास जाते थे तो मुनज़्ज़म होकर जाते थे।

2- कभी भी अपनी ज़बान से किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाते थे।

3- कभी किसी की बात नहीं काटते थे।

4- जिस किसी की ज़रूरत पूरी कर सकते थे उसकी ज़रूरत पूरी करते थे।

5- जो कोई आपके साथ बैठा होता था उसके सामने कभी न पाँव फैलाते थे न ही टेक लगाते थे।

6- कभी आपको क़हक़हा लगाते हुए नहीं देखा गया, आपकी हंसी हमेशा बस एक मुस्कुराहट ही हुआ करती थी।

7- जब लोगों के बीच जाना होता था तो ख़ुश्बू लगाना पसंद करते थे।

8- दूसरों की बहुत ख़िदमत करते थे और सदक़ा देते थे। और यह सब ज़्यादा तर रात के अंधेरों में किया करते थे।

9- आप बहुत ज़्यादा इन्केसारी से पेश आते थे। कहा जाता है कि एक दिन हम्माम में किसी ने जो इमाम को नहीं पहचानता था आप से कहा कि मेरे बदन को रगड़ दो। इमाम ने उसके जिस्म को रगड़ना शुरु कर दिया। जब लोगों ने उसको इमाम के बारे में बताया तो वह शर्मिंदा हुआ और आप से माफ़ी माँगने लगा लेकिन आप ने उसकी हिम्मत बंधाई और उसके जिस्म को रगड़ते और साफ़ करते रहे।

10- आप मेहमानों का बहुत एहतेराम करते थे। एक बार एक मेहमान इमाम के पास आया और रात तक आपके पास ही ठहरा रहा। इसी बीच घर का चिराग़ कुछ बिगड़ गया उसने सही करना चाहा मगर इमाम ने रोक दिया और ख़ुद चिराग़ को ठीक किया और फ़रमाया कि हम अपने मेहमानों से काम नहीं लेते।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: ६० से १०४ तक (मुख़्तलिफ़ रिवायतें)

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की सख़ावत और दरियादिली

इमाम रज़ा[अ०] सख़ावत और दूसरों की मदद करने में अपनी मिसाल आप थे एक साल आप ने अरफ़ा के दिन अपना सब कुछ ख़ुदा की राह में ख़ैरात कर दिया। फ़ज़ल बिन सहल ने कहा कि यह तो घाटे और नुक़सान का सौदा है। इमाम ने कहा, ''जिस चीज़ से तुम्हें सवाब और बड़ाई मिल रही हो उसे कभी घाटा और नुक़सान न समझो।''[1]

एक दिन किसी ने इमाम से कहा, ''अपनी मुरव्वत'' के जितना मुझे अता कर दें'', इमाम ने फ़रमाया, ''नही कर सकता'', उसने कहा, ''मेरी मुरव्वत के हिसाब से मुझे अता कर दें'', इमाम ने फ़रमाया, ''यह कर सकता हूँ, और हुक्म दिया कि दो सौ दीनार उसको दे दिये जायें।''[2]

---

1 बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १००

2 बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १००

ज़रूरतमंदो के लिए इमाम रज़ा[अ०] की ख़ास तवज्जो

दीने इस्लाम में जिन चीज़ों को बहुत अहमियत दी गई है उनमें से ज़रूरतमंदों का ख़याल रखना, उनकी मदद करना और उनकी ज़रूरतों का पूरा करना भी है ख़ासकर उस वक़्त जब वह लोग अपनी ज़रूरत का इज़हार करें।

क़ुरआन करीम की आयतों और मासूम इमामों की हदीसों में इस बात की बहुत ताकीद पाई जाती है और ज़रूरतमंदों की मदद और ख़िदमत के फ़ज़ाएल और सवाब का बहुत तज़किरा मिलता है। हज़रत इमाम रज़ा की ज़िंदगी पर नज़र डालने से यह सच्चाई सामने आती है कि इमाम ज़रूरतमंदों और फ़क़ीरों की मदद और ख़िदमत करने पर ख़ास तवज्जोह देते थे।

मोअम्मर बिन ख़ल्लाद नामी शख़्स का कहना है कि इमाम रज़ा[अ०] जब खाना शुरु करते थे तो एक बर्तन दस्तरख़्वान के किनारे रख देते थे और सबसे अच्छा खाना अलग करके उसमें रखते थे और हुक्म देते थे कि इसको ग़रीबों को दे दो।[1]

अबू नस्र बज़िंती जो इमाम रज़ा[अ०] के ख़ास सहाबियों में से हैं कहते हैं कि इमाम रज़ा[अ०] ने एक ख़त में अपने बेटे इमाम जवाद[अ०] से (जो मदीने में थे) फ़रमाया, ऐ अबूजाफ़र! मुझे ख़बर मिली है कि आपके मुलाज़िम आपको छोटे (पिछले) दरवाज़े से बाहर ले जाते हैं (ताकि लोग आप से कुछ न माँग सकें)। यह उनकी कन्जूसी की वजह से है वह लोग यही चाहते हैं कि आप से दूसरों को कोई फ़ाएदा न पहुँचें। मेरा वह हक़ जो तुम पर है उसके वास्ते से मैं तुम से चाहता हूँ कि तुम्हारा आना-जाना बड़े (असली) दरवाज़े के अलावा और किसी जगह से न हो। जब भी बाहर निकलो सोना-चाँदी, दिरहम व दीनार (जो उस ज़माने की करेंसी हुआ करती थी) अपने साथ लेकर जाओ और जो तुम से माँगे उसे दे दो। अपने चचाओं में से हर एक को जो तुम से एहसान चाहते हों पचास दीनार से कम न देना। हाँ! चाहो तो उस से ज़्यादा दे सकते हो और अपनी फूफ़ियों में से हर एक को जो तुम से एहसान चाहती हों पच्चीस दीनार से कम न देना अगर इस से ज़्यादा देना चाहो तो दे सकते हो। मैं चाहता हूँ कि इस काम के ज़रिए ख़ुदा तुम्हारे मरतबे को बुलंद करे। ख़ैरात करो और अर्श के मालिक -ख़ुदावंदे आलम- की तरफ़ से तंगदस्ती का शक तक दिल में न लाओ।[2]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ६७ महासिने बरक़ी से नक़ल किया गया

[2] वसाएलुश शिया, जि०: ६, पेजः ६६३, बाब ४३, किताबुज़्ज़कात, हदीसः १

ज़रूरतमंदों और ग़रीबों की इज़्ज़त और आबरू का ख़याल

इमाम अली रज़ा[अ०] एक जगह बैठे हुए थे। आपके पास और भी बहुत से लोग बैठे थे और आप से शरीअत के अहकाम पूछ रहे थे। तभी एक लम्बे और गेहुँएं रंग के आदमी ने आकर आपको सलाम किया और कहने लगा कि ऐ रसूले ख़ुदा के बेटे! मैं आपका और आपके आबाओ अजदाद का चाहने वाला हूँ। (ख़ुरासान से) हज करने आया हूँ लेकिन मेरे पास जो कुछ था वह ख़त्म हो चुका है। मैं इस वक़्त बिल्कुल ग़रीब हो गया हूँ अगर मुनासिब समझें तो मुझे मेरे शहर तक पहुँचने में मेरी मदद फ़रमा दें। मैं वतन पहुँच कर जो कुछ आप देंगे आपकी तरफ़ से सदक़ा कर दूँगा क्योंकि मैं सदक़े का मुस्तहक़ नहीं हूँ।

इमाम ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तुम पर रहम करे, बैठ जाओ।'' फिर आप लोगों के सवालों के जवाब देते रहे यहाँ तक कि सब लोग चले गए सिर्फ़ तीन लोग बाक़ी बचे। इमाम उन से इजाज़त लेकर अंदर चले गए। कुछ देर बाद वापस आए और सबके सामने आए बग़ैर दरवाज़े के ऊपर से अपना हाथ बाहर निकाला और कहा कि ''वह ख़ुरासानी कहाँ है?'' उसने कहा कि मैं यहाँ हूँ। आप ने फ़रमाया कि ''यह दो सौ दीनार ले लो और अपने सफ़र की ज़रूरतों को पूरा करो, ध्यान रहे कि मेरी तरफ़ से सदक़ा देना भी तुम्हारे लिए ज़रूरी नहीं है। चले जाओ ताकि न मैं तुमको देखूँ और न तुम मुझको देखो!'' वह शख़्स दीनार लेकर चला गया।

फिर इमाम बाहर आए। वहाँ बैठे लोगों में से किसी ने पूछा कि ''आप पर क़ुरबान जाऊँ! आप ने तो उसकी अच्छी ख़ासी मदद की है और काफ़ी कुछ उसे दे दिया है फिर अपना चेहरा उस से क्यों छिपा लिया?'' इमाम ने फ़रमाया कि ''ऐसा इसलिए किया कि कहीं सवाल करने और माँगने की ज़िल्लत को उसके चेहरे पर न देख लूँ। क्या तुम ने रसूले ख़ुदा[स०] की यह हदीस नहीं सुनी है जिसमें आप ने फ़रमाया, अच्छे काम को छुप कर करना सत्तर हजों के बराबर है। और जो खुले आम गुनाह करे उसका कोई पुरसाने हाल नहीं होता और जो छुप कर गुनाह करता है ख़ुदा उसको बख़्श देता है।''

फिर आप ने एक शेर पढ़ा जिसका मतलब यह है:

''जब भी मैं अपनी कोई ज़रूरत और हाजत उस (ख़ुदा) के पास ले जाता हूँ अपनी इज़्ज़त और आबरू के साथ लौटता हूँ।''[1]

---

[1] मनाक़िब इब्ने शहर आशोब जि०: ४, पेज: ३६०, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १०१

इमाम रज़ा[अ०] का अपने मुलाज़िमों के साथ बरताव

इमाम रज़ा[अ०] के बेहतरीन अख़लाक़ का एक नमूना आपका अपने ग़ुलामों और मुलाज़िमों के साथ बरताव भी है जो न सिर्फ़ आपकी बेइन्तेहा इन्केसारी, जो अहलेबैत[अ०] की ख़ासियत है, को दिखाता है बल्कि आपकी अपने मातहतों और कमज़ोरों के लिए मोहब्बत और मेहरबानी को भी ज़ाहिर करता है।

1- हज़रत इमाम रज़ा[अ०] अपने नौकरों की इबादत का भी ख़याल रखते थे। आपने एक शख़्स को ज़िम्मेदारी दी थी कि उनको भी नमाज़े शब के लिए जगा दिया करे।[1]

2- ग़ुलामों को आज़ाद करने का आपको बहुत शौक़ था। किताबों में लिखा है कि आप ने एक हज़ार ग़ुलाम आज़ाद किए थे।[2]

3- बल्ख़ का रहने वाला एक शख़्स कहता है कि ख़ुरासान के सफ़र में मैं इमाम रज़ा[अ०] के साथ था। एक दिन आप ने दस्तरख़्वान बिछाया और अपने तमाम मुलाज़िमों को दस्तरख़्वान पर बुला लिया। मैंने अर्ज़ की, आप पर क़ुरबान जाऊँ! काश आप ने इन लोगों के लिए अलग दस्तरख़्वान बिछाया होता? हज़रत ने फ़रमाया कि बस करो!

اِنَّ الرَّبَّ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی وَاحِدٌ وَالاُمَّ وَاحِدٌ الابٌ وَاحِدَۃٌ والجَزَاءَ بِالاَعمَال---

''बेशक हमारा परवरदिगार एक है, माँ एक है, बाप एक है और जज़ा आमाल की ही मिलना है।''

4- इमाम रज़ा[अ०] की ख़ूबियों में से एक यह भी है कि खाना खाते वक़्त अपने मुलाज़िमों के आराम का बहुत ख़याल रखते थे। इमाम के मुलाज़िमों में से यासिर और नादिर नाम के दो लोगों का कहना है कि इमाम रज़ा[अ०] ने हमेशा कह रखा था कि जब भी तुम लोग खाना खा रहे हो और मैं तुम्हारे सामने आ जाऊँ तो खड़े न होना और अपना खाना ख़त्म करना।

कभी ऐसा होता था कि इमाम[अ०] हम में से किसी को आवाज़ देते थे और अगर उनको पता चलता था कि वह खाना खा रहा है तो फ़रमाते थे कि उसको खाना खा लेने दो।[3] कभी अपने मुलाज़िमों का इतना ध्यान रखते थे कि अपने हाथों से उनके लिए निवाले बनाते थे। इमाम का ख़ादिम नादिर कहता है कि हज़रत इमाम अली रज़ा[अ०] अपने हाथ से जोज़ीना (शकर और खजूर से तैयार एक ग़िज़ा) बनाते थे और मुझे देते थे।[4]

---

1 उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: २, पेज: १७८

2 आलामुल हिदायह, पेज: ३१

3 बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १०२

4 बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १००

इमाम रज़ा[अ०] की अपने शियों के लिए मेहरबानी

शियों के मुताबिक़ इमाम एक ऐसे मेहरबान और मोहब्बत करने वाले बाप की तरह होता है जो हमेशा अपनी औलादों की भलाई की फ़िक्र में रहता है जैसा कि इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया है,

اَلامَامُ الاَنِیسُ الرّفِیقُ وَ الوَالِدُ الشّفِیقُ والاخُ الشّقیقُ وَالاُمّ البَرّۃ بِالوَلَدِ الصّغیر[1]

यानी इमाम[अ०] मेहरबान दोस्त, हमदर्द भाई और बाप और अपने छोटे-छोटे बच्चों की भलाई चाहने वाली माँ की तरह होता है। इसीलिए हम इमाम रज़ा[अ०] को इमामे रऊफ़ यानी मेहरबान इमाम कहते हैं क्योंकि हमेशा शियों पर उनका लुत्फ़ो करम रहता रहा है।

अब्दुल्लाह बिन अबान, जिस इमाम रज़ा[अ०] बहुत ख़याल रखते थे कहता है, मैंने हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ किया, मेरे और मेरी फ़ैमिली के लिए दुआ कर दीजिए। इमाम ने फ़रमाया, तुम क्या समझते हो कि मैं दुआ नहीं करता? ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे आमाल दिन और रात मेरे सामने पेश किए जाते हैं। अब्दुल्लाह कहता है, मुझे यह बात बहुत बड़ी लगी और मुझे ताज्जुब हुआ। इमाम[अ०] ने फ़रमाया, क्या तुम ने क़ुरआन नहीं पढ़ा

قُل اعمَلُوا فَسَیَرَی اللہُ عَمَلَکُم وَرَسُولُه و الموْمنُون

यानी अमल करो क्योंकि ख़ुदा, उसका रसूल[स०] और मोमिनीन तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर हज़रत ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! वह मोमिनीन अली बिन अबी तालिब[अ०] (और उनकी मासूम औलाद) हैं।[२]

मूसा बिन सय्यार नामी शख़्स का कहना है: हज़रत इमाम रज़ा[अ०] के साथ मैं (ख़ुरासान के सफ़र में) तूस शहर के क़रीब पहुँचा। जब शहर की दीवारें नज़र आने लगीं तो मैंने मातम और अज़ादारी की आवाज़ें सुनीं। मैं आवाज़ की तरफ़ चल पड़ा। देखा एक जनाज़ा जा रहा है। इस बीच इमाम[अ०] घोड़े से उतर आए और जनाज़े की तरफ़ चल दिए और बहुत मेहरबानी और अपनाईयत से पेश आए। फिर आप ने मेरी तरफ़ रुख़ करके फ़रमाया,

یَا مُوسَی بنَ سَیَّارٍ ! مَن شیّع جَنَازَةً وَلِیّ مِن اَولِیَاءِنَا

---

1 उयूनु अख़बार्रिरज़ा, जि०: १, पेज: २१२, मनला यहज़रूहुल फ़क़ीह जि०: ४, पेज: ३००

2 उसूले काफ़ी, किताबुल हुज्जत, जि०: १, पेज: ३१६

خَرَجَ مِن ذُنُوبِه كَيَومٍ وَلَدَتهُ اُمُّه

ऐ मूसा बिन सय्यार जो भी मेरे चाहने वालों में से किसी के जनाज़े में शिरकत करे तो वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा जैसे अभी-अभी अपनी माँ से बग़ैर गुनाहों के पैदा हुआ हो। जब उस जनाज़े को क़ब्र के पास रखा गया तो इमाम ने लोगों को वहाँ से हटाया और क़रीब आए, अपना हाथ उस मर्द के सीने पर रखा और फ़रमाया,

يَا فُلَانِ بنِ فُلَانٍ اَبشِر بِالجَنَّةِ فَلا خَوفٌ عَلَيكَ بَعدَ هذِهِ السَّاعَةِ

ऐ फ़ुलाँ! तुझे जन्नत की बशारत हो, इसके बाद तेरे लिए कोई डर और ख़ौफ़ न होगा। मैंने अर्ज़ किया कि आप पर क़ुरबान जाऊँ! क्या इस मर्द को आप पहचानते हैं? आप तो अभी तक इस जगह आए ही नहीं हैं?!

इमाम[अ] ने फरमाया,

ऐ मूसा बिन सय्यार! क्या तुम्हें नहीं मालूम कि मेरे शियों के आमाल सुबह और शाम हम इमामों के सामने पेश किए जाते हैं। उनके आमाल में जो भी कमियाँ होती हैं हम ख़ुदा से दुआ करते हैं कि इन कमियाँ करने वाले शख़्स को माफ़ कर दे और जब हम उनके आमाल में अच्छे और उमदा कामों को देखते हैं तो ख़ुदा से दुआ करते हैं कि उसकी तौफ़ीक़ में इज़ाफ़ा कर दे।[1]

[1] मनाक़िब आले अबी तालिब, जि०: ४६, पेज: ४१, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: ६८ में देखें

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की अज़मत बुज़ुर्गों के कलाम में

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की अज़मत के अंदाज़े के लिए इतना ही काफ़ी है कि आपको इमामत का ओहदा अता किया गया है, लेकिन फिर भी बुज़ुर्गों ने इमाम के बारे में जो बातें कहीं हैं उनका तज़किरा भी अवाम के ज़ेहन पर एक अच्छा असर डालता है। इसलिए यहाँ पर कुछ बुज़ुर्गों के अक़वाल बयान किए जा रहे हैं।

मामून अब्बासी जो ख़ुद भी एक बड़ा आलिम और स्कॉलर था और इमाम[अ०] के दुश्मनों में से था, इमाम के सिलसिले में कहता है,

مَا اَعْلَمَ اَحَدًا اَفْضَلُ مِن هَذَا الرَّجُلِ ﴿يعنى الرَّضَا ﴿ع﴾﴾ عَلَى وَجْهِ الاَرْضِ

यानी इस पूरी ज़मीन पर इस मर्द -यानी इमाम रज़ा[अ०]- से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला मैं किसी को नहीं समझता।[१]

जमालुद्दीन अहमद बिन अली नस्साबा, जो इब्ने अंबए के नाम से मशहूर हैं, कहते हैं कि अबू तालिब[अल०] की औलाद में इमाम रज़ा[अ०] जिनकी कुन्नियत अबुल हसन है, के जैसा उनके ज़माने में कोई नहीं था।[२]

ज़हबी जिसकी अहलेबैत[अल०] से मुख़ालेफ़त मशहूर है, इमाम रज़ा[अ०] के बारे में कहता हैः वह अपने ज़माने में बनी हाशिम के सरदार थे और बनी हाशिम में सबसे अक़्लमंद और समझदार थे।[३]

'अबा सल्त हरवी' जो ख़ुद अपने ज़माने में मशहूर लोगों में से हैं कहते हैंः ''अली बिन मूसा रज़ा[अ०] से ज़्यादा इल्म वाला मैंने नहीं देखा और जिस आलिम ने भी इमाम को देखा उसने मेरी इसी बात की गवाही दी है।[४]

अबू नवास इमाम रज़ा[अ०] के ज़माने का एक बड़ा शायर है। एक दिन उसके एक दोस्त ने उस पर एतेराज़ करते हुए कहा कि तुम तो हज़रत इमाम रज़ा[अ०] को अच्छी तरह पहचानते हो फिर उनकी शान में तुम ने कोई शेर क्यों नहीं कहा है? अबु नवास ने कहाः ख़ुदा की क़सम! उनकी बुज़ुर्गी की वजह से ही आज तक उनकी तारीफ़ में कुछ न कह सका मुझ जैसा उन जैसे की क्या तारीफ़ कर सकता है। फिर उसने यह शेर कहेः-

قیل لی انت اوحد الناس طرّا

---

1 अल-इरशाद, जि०: २, पेजः २६१

2 उमदतुत्तालिब, पेजः १६८, आलामुल हिदायह, पेजः २१

3 आलामुल हिदाया पेजः २६

4 आलामुल वरा, जि०: २, पेजः ६४, नक़्ल अज़ आलामुल हिदाया, पेजः २०

فی فنون من الکلام النبیّه

لک فی جوهر الکلام بدیع

یشمر الدر فی یدی مجتبیّه

فعلام ترکت مدح ابن موسیٰ

والخصال التی تجمعنّ فیه

قلت لا اهتدی لمدح امام

کان جبرئیل خادما لابیه

उसके इन अशआर का मतलब यह है कि ''मुझ से कहते हैं कि तू बे मिसाल शायर है, तो तू ने हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की मदह क्यों नहीं की जबकि उनके अंदर बहुत सारी अच्छाइयाँ मौजूद हैं, तो मैंने कहा मैं उस इमाम की क्या तारीफ़ करूँ जिसके वालिद के नौकर जिब्रईल हों।[1]

एक दिन इमाम रज़ा[अ०] एक ख़च्चर पर सवार बाहर तशरीफ़ लाए। अबू नवास आपके क़रीब आया और सलाम के बाद बोलाः ऐ फ़रज़ंदे रसूल[स०]! मैंने आपके बारे में कुछ शेर कहें हैं आपको सुनाना चाहता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, सुनाओ। अबू नवास ने उन अश्आर में से तीन शेर पढ़े उनमें से एक शेर यह थाः

من لم یکن علویّا حین تنسبه

فما له فی قدیم الدّهر مفتخر

जो भी हसब-नसब में अलवी न हो उसके लिए पिछले ज़माने में कोई फ़ख़्र की बात नहीं है।

इमाम ने उसके शेर पसंद किए और फ़रमाया, ''तुम ने हमारे लिए वह शेर कहे हैं जो इस से पहले किसी ने नहीं कहे।''

फिर आप ने अपने ग़ुलाम से पूछा, ''हमारे ख़र्च के बाद कितना बाक़ी बचा है?'' उसने कहा, ''तीन सौ दीनार हैं।'' -हर दीनार एक मिस्क़ाल सोने के बराबर हुआ करता था- हज़रत ने फ़रमाया, ''अबू नवास को दे दो।''

जब हज़रत घर पहुँचे तो अपने ग़ुलाम से फ़रमाया, शायद इतने दिरहम उसे कम लगे हों यह ख़च्चर भी उसको ले जाकर दे दो।[2]

---

[1] कश्फ़ुल ग़ुम्मह, जि०: ३, पेजः १५८

[2] आलामुल हिदायह पेजः २२

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] का इल्मी मरतबा

हर समझदार शिया जानता है कि अहलेबैत[अ०] का इल्मी सोर्स खुदा का अज़ीम इल्म है और ख़ुदा ने इन हज़रात को इतना इल्म दिया है जितना पैग़म्बर[स०] के अलावा किसी दूसरे को नहीं दिया।

अइम्मा[अ०] के पास ख़ुदा के भेजे हुए पैग़म्बरों और उसके पसंदीदा फ़रिश्तों के सारे इल्म मौजूद हैं।[1] आसमानों और ज़मीन की सारी मालूमात उनके पास है।[2] यह कहा जा सकता है कि यह लोग ख़ुदा के इल्म के मालिक हैं और ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसकी लोगों को ज़रूरत होती हो और वह इन से छुपी हुई हो।[3] लेकिन हर इमाम के ज़माने की अलग-अलग ज़रूरतें और उसके ज़माने और जगह की ज़रूरतों के हिसाब से ख़ुदावंदे आलम की तरफ़ से जो ज़िम्मेदारियाँ दी जाती थीं उनकी वजह से कुछ इमामों को दीन बयान करने और अपने इल्म को ज़ाहिर करने का ज़्यादा मौक़ा मिलता रहा जैसे हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०], इमाम बाक़िर[अ०], इमाम सादिक़[अ०] और उन्हीं में से इमाम रज़ा[अ०] भी हैं कि तीन ख़ास चीज़ों की वजह से इमाम रज़ा[अ०] के इल्म के समंदर से इस्लामी समाज को फ़ायदा उठाने का ज़्यादा मौक़ा मिल गया।

1- वाक़फ़िया का फ़ितना और वह शुब्हे और एतेराज़ात जो उन लोगों ने हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की इमामत के ज़माने में किए और इमाम[अ०] ने अपने बेहतरीन जवाबों से उन लोगों की हिदायत की।

2- हज़रत की इमामत के चौथे साल हारून के हाथ बरामकियों का ख़ात्मा जिसकी वजह से हारून की हुकूमत में मौजूद अहलेबैत[अ०] के बहुत बड़े दुश्मन दुनिया से चले गए और इस वजह से अहलेबैत[अ०] के इल्म को फैलाने की इमाम को कुछ मोहलत मिल गई।

3- इमाम रज़ा[अ०] की जानशीनी और वली अहदी, जिसकी वजह से लोगों की तवज्जोह इमाम की तरफ़ और बढ़ गई। मामून अब्बासी इल्मी बहसों और मुनाज़रों और डिबेट्स के ज़रिए इमाम को दूसरे मज़हबों के आलिमों और बुज़ुर्गों के सामने नीचा दिखाना चाहता था मगर हक़ीक़त यह है कि ख़ुदा मक्कारी करने वालों और धोका देने वालों की मक्कारियों और चालों को उन्हीं की तरफ़ पलटा देता है। इसलिए यही इल्मी बहसें और डिबेट्स इस बात की वजह बन गईं कि इमाम रज़ा[अ०] का इल्मी मरतबा सबके सामने आ

---

[1] तौहीदे सदूक़, बिहार, जि०: २६, पेज: १५६

[2] बसाएरुद्दरजात, नक़्ल अज़ बिहार, जि०: २६, पेज: ११०

[3] बिहारुल अनवार, जि०: २६, पेज: १३८

जाए और उलमा और बुज़ुर्ग भी आपकी अज़मत का लोहा मान लें।

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] का इल्मी मरतबा इतना बुलंद है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] जिन्होंने जाफ़री मज़हब की बुनियाद रखी थी आपके बारे में आपकी पैदाइश से पहले अपने बेटे इमाम मूसा काज़िम[अ०] से अकसर फ़रमाया करते थे कि आले मोहम्मद[अ०] का आलिम तुम्हारी नस्ल से है। काश! मैं उसका ज़माना देख पाता।[1]

मोहम्मद बिन ईसा यक़्तीनी कहते हैंः इमाम रज़ा[अ०] ने जो लोगों के सवालों के जवाब दिए थे उन से मैंने पन्द्रह हज़ार दीनी मसले इकटठा किए थे।[2]

अपने ज़माने के बुज़ुर्ग अबा सल्त हरवी का कहना हैः मैंने हज़रत इमाम रज़ा[अ०] से ज़्यादा जानने वाला नहीं देखा और कोई आलिम ऐसा नहीं है जिसने इमाम को देखा हो और वह मेरी इस बात की गवाही न दे।

मामून ने कई प्रोग्रामों में अलग-अलग मज़हबों के आलिमों और इस्लामी फ़क़ीहों और मुतकल्लेमीन को इकटठा किया। उन्होंने इमाम[अ०] के साथ मुनाज़रा किया। इमाम उन सब पर बाज़ी ले गए न सिर्फ़ यह कि आप ने उन मुनाज़रों को जीत लिया बल्कि उन सब ने इमाम रज़ा[अ०] की फ़ज़ीलत को माना और अपनी बेचारगी का एतेराफ़ भी किया।

और मैंने आप (इमाम रज़ा[अ०]) से सुना है कि आप फ़रमाते थे, ''मैं (मदीने में) मस्जिद (नबवी) में बैठा करता था। हालांकि मदीने में बहुत से आलिम मौजूद थे लेकिन फिर भी जब कभी उनमें से कोई किसी मसले का जवाब नहीं दे पाता था तो सब के सब मेरी तरफ़ इशारा करते थे और मेरी तरफ़ मसले को पलटा देते थे और मैं उसका जवाब दिया करता था।''[3]

इब्राहीम बिन अब्बास कहता हैः ''मैंने कभी नहीं देखा कि इमाम रज़ा[अ०] से कोई चीज़ पूछी गई हो और आप उसके बारे में न जानते हों। मैंने उन से पहले की हिस्ट्री से लेकर उनकी ज़िंदगी तक किसी को भी उन से ज़्यादा जानने वाला नहीं पाया। मामून हमेशा अलग-अलग सवाल करके आपका इम्तेहान लिया करता था मगर आप हमेशा उसको मुकम्मल जवाब देते थे।''[4]

हसन बिन अली वश्शा जो मुख़ालिफ़ों के बहकावे में आ गया था और उसने ''वक़्फ़'' मज़हब को अपना लिया था, कहता हैः ''कुछ मसलों को मैंने एक बड़े से ख़त में लिखा ताकि इमाम[अ०] का इम्तेहान ले सकूँ और उस ख़त

---

1 आलामुल वरा, पेजः ३१५

2 अल-ग़ैबत, शेख़ तूसी पेजः ५२, नक़्ल अज़ बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ६८

3 आलामुल वरा, जि०: २, पेजः ६४, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः १००

4 उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: २, पेजः १८०

को लेकर इमाम[अ०] के पास गया। इमाम[अ०] के घर पर बहुत भीड़ थी जिसकी वजह से आप से मुलाक़ात न कर सका और वापस होने लगा। तभी मैंने देखा कि इमाम[अ०] का एक मुलाज़िम मेरे पीछे आ रहा है और कह रहा है: हसन बिन अली वश्शा जो इलयास बग़दादी का नवासा है कौन है? मैंने कहा: मैं हूँ। उसने मुझे एक ख़त दिया और कहा: जो मसाएल लेकर आए हो (जिनको उसने अभी तक इमाम को नहीं दिखाया था) उनके जवाब इसमें लिखे हुए हैं! इस वाक़िए की वजह से मुझे आपकी इमामत का यक़ीन हो गया और ''वक़्फ़'' मज़हब को मैंने छोड़ दिया।''[1]

मामून अब्बासी की तरफ़ से होने वाले बहुत से ऐसे प्रोग्राम जो बहुत बड़े पैमाने पर हुआ करते थे और जिनमें सारे मज़हबों के आलिम और स्कॉलर्स इकटठा होते थे और यहूदियों, नसरानियों, साएबियों और ज़रतुश्तियों की बड़ी-बड़ी शख़्सियतें और मुतकल्लेमीन मौजूद रहते थे जिसकी वजह से एक बार हसन बिन मोहम्मद नौफ़ली घबरा गए और इमाम को नसीहत करने लगे कि यह लोग शक और शुब्हा पैदा करने वाले और बातों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने वाले हैं। इन से बच कर रहिएगा। इमाम रज़ा[अ०] मुस्कुराए और फ़रमाया, ''क्या इस बात से डर रहे हो कि वह मुझ पर बाज़ी ले जाएंगे? ऐ नौफ़ली! जानते हो मामून कब अपनी इस हरकत पर शर्मिंदा होगा?'' फिर ख़ुद ही फ़रमाने लगे कि जब वह मेरी दलीलों को सुनेगा कि मैं तौरेत के मानने वालों को तौरेत से और इंजील वालों को उनकी इंजील से और ज़बूर वालों को उनकी ज़बूर से और साएबियों को उन्हीं की ज़बान इबरी में और हराबिज़यों को (शायद आपकी मुराद मजूसी थे) उनकी ज़बान फ़ारसी में और रूमियों को रूमी ज़बान में और दूसरी ज़बान वालों को उन्हीं की ज़बान में जवाब दूँगा।

जब मैं उन सब पर ग़ालिब हो जाऊँगा और हर गिरोह मेरी दलीलों और बहस के सामने घुटने टेक देगा और मेरी बातों की सच्चाई को जान लेगा उस वक़्त मामून (इस प्रोग्राम को करने पर) शर्मिंदा होगा।''

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ[2]

---

[1] मनाक़िब आले अबी तालिब, जि०: ३, पेज: ४५३

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: १३६, अत्तौहीद, पेज: ४१७

इमाम रज़ा[अ०] के जवाबात के कुछ नमूने

इमाम[अ०] के मुँहतोड़ और अक़्लमंदाना जवाब बहुत ज़्यादा हैं नमूने के तौर पर उनमें से कुछ की तरफ़ यहाँ इशारा किया जा रहा है।

इब्राहीम बिन हरवी ने पूछाः ''ख़ुदा ने फ़िरऔन को क्यों डुबोया जबकि वह ईमान ले आया था?'' इमाम[अ०] ने फ़रमाया, ''क्योंकि वह अज़ाब को देखकर ईमान लाया था और उस वक़्त (अज़ाब नाज़िल होने के बाद) ईमान क़ुबूल नहीं है।''[1]

अबा सल्त हरवी ने पूछाः ''ख़ुदा ने नूह[अ०] के ज़माने में सबको क्यों डुबो दिया जबकि उनमें बेगुनाह और बच्चे भी थे।'' हज़रत ने फ़रमाया, ''बच्चे उस वक़्त नहीं थे क्योंकि चालीस साल पहले से उनकी नस्ल ख़त्म हो गई थी। कुछ झुठलाने की वजह से और कुछ उस झुठलाने पर राज़ी रहने की वजह से मारे गए। जो किसी मौक़े पर मौजूद न हो लेकिन उस काम पर राज़ी हो वह उसी तरह है जो उस वक़्त मौजूद हो और उसने वह काम किया हो।'' [2]

इब्ने सिक्कीत (याक़ूब बिन इस्हाक़) ने इमाम से सवाल कियाः ''ख़ुदा ने क्यों हज़रत मूसा को असा के साथ, रौशन हाथ और जादू के तोड़ के साथ भेजा था और ईसा को मरीज़ों को शिफ़ा देने के साथ, हज़रत मोहम्मद को (कलाम) क़ुरआन के साथ भेजा?'' हज़रत ने फ़रमाया, ''हज़रत मूसा[अ०] के ज़माने में जादू का रिवाज था और हज़रत ईसा[अ०] के ज़माने में तबीबों और डाक्टरी की ज़रूरत बहुत ज़्यादा थी। हज़रत मोहम्मद[स०] के ज़माने में लोगों को बातचीत और कलाम में फ़साहत व बलाग़त में कमाल हासिल था।'' उसने कहा, ''ख़ुदा की क़सम! आपके जैसा मैंने किसी को नहीं पाया। आज के ज़माने में ख़ुदा की हुज्जत क्या है?'' आप[अ०] ने फ़रमाया कि ''अक़्ल है जिसकी वजह से ख़ुदा पर सच बोलने वाले झूठों से पहचाने जाते हैं।'' इब्ने सिक्कीत ने कहाः ''यह है ख़ुदा की क़सम जवाब!'' [3]

हसन बिन अली फ़ज़्ज़ाल ने इमाम से सवाल कियाः ''क्यों लोग हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] से दूर हो गए और गुमराह हुए जबकि आपकी फ़ज़ीलत, आपकी पिछली ज़िंदगी और आपकी रसूले ख़ुदा[स०] के नज़दीक अहमियत को जानते थे।'' हज़रत ने फ़रमायाः ''क्योंकि हज़रत अली[अ०] ने उनके बाप-दादा,

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७६

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७४

[3] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७६

भाई, चचा, मामू और क़रीबी रिश्तेदारों को जिन्होंने रसूले ख़ुदा[स॰] से जंग की थी उन बहुत सारे लोगों को क़त्ल किया था इसीलिए उनके दिल में हज़रत अली[अ॰] के लिए कीना था और वह नहीं चाहते थे कि आप उनके सरपरस्त बन जाएं और दूसरे लोगों ने यह नहीं किया था इसलिए अली[अ॰] से मुँह मोड़कर लोग उनकी तरफ़ चले गए थे।''[1]

हैसम बिन अब्दुल्लाह ने हज़रत से पूछा कि हज़रत अली[अ॰] ने रसूल[स॰] के बाद 25 साल तक अपने दुश्मनों से क्यों जंग नहीं की जबकि अपनी हुकूमत के ज़माने में उन से जंग की। हज़रत रज़ा[अ॰] ने फ़रमायाः ''आप ने रसूल[स॰] की पैरवी की थी जिस तरह रसूल[स॰] ने 13 साल मक्के में और 19 महीने मदीने में मुश्रिकों से जंग नहीं की जिसकी वजह मददगारों की कमी थी, हज़रत अली[अ॰] ने भी जंग नहीं की क्योंकि आपके भी मददगार बहुत कम थे।''[2]

हसन बिन अली बिन फ़ज़्ज़ाल ने हज़रत रज़ा[अ॰] से पूछाः पैग़म्बरे ख़ुदा की कुन्नियत 'अबुल क़ासिम' क्यों है? इमाम रज़ा[अ॰] ने जवाब दिया, ''क्योंकि आप[स॰] के एक बेटे का नाम 'क़ासिम' था। रावी ने कहाः क्या आप[अ॰] मुझे इस क़ाबिल समझते हैं कि इस से ज़्यादा कुछ बताएं? हज़रत[अ॰] ने फ़रमाया, ''हाँ! क्यों नहीं! तुम जानते हो कि पैग़म्बर[स॰] ने फ़रमाया था, ''मैं और अली[अ॰] इस उम्मत के दो बाप हैं।'' उसने अर्ज़ कियाः हाँ! मैं जानता हूँ। फिर आप[अ॰] ने फ़रमायाः ''और यह भी जानते हो कि अली जन्नत और जहन्नम के तक़सीम करने वाले हैं।'' उसने कहाः हाँ! यह भी जानता हूँ! आप[अ॰] ने फ़रमाया, ''पैग़म्बरे अकरम[स॰] को अबुल क़ासिम (तक़सीम करने वाले का बाप) कहते हैं, क्योंकि वह उन (अली[अ॰]) के बाप हैं, जो जन्नत व जहन्नम के तक़सीम करने वाले हैं...''[3]

हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] से पूछा गयाः क्या यह हदीस सही है कि पैग़म्बरे ख़ुदा[स॰] ने फ़रमाया, ''मेरे अस्हाब सितारों के जैसे हैं, तुम उनमें से जिसकी भी पैरवी कर लो, हिदायत पा जाओगे?'' इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया, ''हाँ! यह हदीस सही है, (लेकिन इस से) रसूले ख़ुदा[स॰] की मुराद, वह सहाबी हैं, जो उनके बाद अपना रास्ता बदल न बैठे हों और तबदील न हो गए हों।'' फिर पूछा गयाः यह चीज़ कहाँ से मालूम हो सकती है? आप[अ॰] ने फ़रमाया, ''उस रिवायत की वजह से जो (ख़ुद अहलेसुन्नत) नक़ल करते हैं कि पैग़म्बरे अकरम[स॰] ने फ़रमायाः ''रोज़े क़यामत मेरे अस्हाब में से कुछ लोगों को मेरे

---

1 उयूनु अख़बारिरज़ा[अ॰], जि०: २, पेजः ८०
2 उयूनु अख़बारिरज़ा[अ॰], जि०: २, पेजः ८०
3 उयूनु अख़बारिरज़ा[अ॰], जि०: २, पेजः ८४

हौज़ से इस तरह दूर किया जाएगा, जैसे अजनबी ऊँटों को पानी से दूर किया जाता है। मैं कहूँगाः परवरदिगार! यह मेरे अस्हाब हैं! यह मेरे अस्हाब हैं! तो मुझ से कहा जाएगाः आप नहीं जानते कि इन्होंने आपके बाद क्या किया! और फिर उन्हें बाएं तरफ़ ले जाया जाएगा, तो मैं कहूँगाः ''(मेरी नज़रों से) दूर हो जाओ और हलाक हो जाओ!'' इसके बाद इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया, ''क्या तुम सोच सकते हो कि यह उन लोगों के लिए होगा जो साबित क़दम रहे और (आँहज़रत[स॰] के बाद हरगिज़) बदले नहीं।''[1] (इमाम[अ॰] की मुराद यह थी कि रसूल[स॰] का यह क़ौल उन्हीं के लिए हो सकता है जो बदल गए थे)।

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ॰], जि॰: २, पेजः ८६, सहाबा में एक बड़ी तादाद के गुमराह और पलट जाने की रिवायत को अहलेसुन्नत के बुज़ुर्गों, जैसे बुख़ारी ने "सही बुख़ारी" में, मुस्लिम ने "सही मुस्लिम" में और दूसरों ने अलग-अलग हवालों से और अलग-अलग अलफ़ाज़ के साथ कई रावियों से रिवायत किया है।

हज़रत रज़ा[अ०] की मुख़्तलिफ़ ज़बानों पर महारत

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की इल्मी शख़्सियत, सिर्फ़ दीनी व अक़्ली मसलों और उस वक़्त के उलूम पर आपकी गहरी नज़र तक ही महदूद नहीं थी, बल्कि इलाही इल्म के ऐसे जलवे भी आप से लोगों पर ज़ाहिर हुए हैं, जो उनके ग़ैब के इल्म से मुत्तसिल होने की गवाही देते हैं, हम उसके कुछ नमूनों की तरफ़ इशारा करते हैं:-

1- इमाम रज़ा[अ०] अपने ज़माने की बहुत सी ज़बानों को जानते थे

अबा सल्त हरवी कहते हैं: ''हज़रत रज़ा[अ०] अलग-अलग ज़बानें बोलने वालों से उन्हीं की ज़बान में बात करते थे। ख़ुदा की क़सम! वह हर ज़बान में सबसे ज़्यादा फ़सीह और बेहतरीन तरीक़े से बात करते थे।''[1]

एक दिन अबा सल्त ने इमाम रज़ा[अ०] से अर्ज़ किया: ''ऐ रसूल के बेटे! मुझे आप[अ०] की मुख़्तलिफ़ ज़बानों पर इतनी महारत पर हैरत है।'' हज़रत[अ०] ने फ़रमाया,

يَا اَبَا صَلْت اَنَا حُجَّةُ اللهِ عَلَى خَلقِه وَمَا كَانَ اللهُ لِيَتَّخِذَ حُجَّةً عَلَى قَومٍ وَهُوَ لا يَعرَف لُغَاتِهِم---

''ऐ अबा सल्त! मैं अल्लाह की मख़लूक़ पर उसकी हुज्जत हूँ। ख़ुदा किसी भी क़ौम पर ऐसी हुज्जत क़रार नहीं देता, जो उनकी ज़बान न जानती हो, क्या तुम तक अमीरुलमोमिनीन[अ०] की यह बात नहीं पहुँची, (कि उन्होंने फ़रमाया) हमें ''फ़स्लुल ख़िताब'' कहा गया है और वह कई ज़बानों में महारत के अलावा कुछ और नहीं है।''[2]

'अबू इस्माईल सिंधी' नामी एक शख़्स हिन्दुस्तान से हुज्जते ख़ुदा की तलाश में आया हुआ था। लोगों ने उसे हज़रत रज़ा[अ०] के पास पहुँचा दिया, वह कहता है: मैं हज़रत[अ०] की ख़िदमत में पहुँचा, लेकिन मैं अरबी नहीं जानता था। मैंने सिंधी ज़बान में सलाम किया। हज़रत[अ०] ने मेरी ज़बान में जवाब दिया। मैंने हज़रत[अ०] से बात की तो उन्होंने भी मेरी ही ज़बान में मुझ से बात की। मैंने अर्ज़ किया: ''हुज्जते ख़ुदा की तलाश में यहाँ आया हूँ!'' उन्होंने फ़रमाया: ''वह (हुज्जते ख़ुदा) मैं हूँ, जो पूछना चाहते हो पूछो!'' मैंने अपने मसाएल उन से पूछे और हज़रत ने मेरी ज़बान में उनका जवाब दिया।

जब मैं हज़रत[अ०] की ख़िदमत से रुख़सत होने लगा, तो मैंने अर्ज़ किया: मैं अरबी नहीं जानता! आप[अ०] ख़ुदावंदे आलम से दरख़्वास्त करें कि वह मुझे अरबी ज़बान का इल्म दे! हज़रत रज़ा[अ०] ने अपना हाथ मेरे होटों पर फेरा और मैं उसी वक़्त अरबी में बात करने लगा।''[3]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: २७

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: २७

[3] कश्फ़ुल गुम्मह, जि०: ३, पेज: ६१, अल-ख़राएज वल-जराएह, जि०: १, पेज: ३४०, बिहारुल

जब बसरा शहर में ''अम्र बिन हद्दाब'' नामी एक मुख़ालिफ़ ने हज़रत रज़ा[अँ०] से कहा कि वह अपने हर ज़बान को जानने के दावे को साबित करें और रूमी, हिन्दी, फ़ारसी और तुर्क ज़बान वालों से, जो बसरा शहर में आबाद हैं, उनकी ज़बान में बात करें तो हज़रत[अँ०] ने फ़रमाया, ''उन सबको ले आओ!''

अलग-अलग ज़बानें बोलने वाले काफ़ी लोगों को लाया गया और हज़रत[अँ०] ने उन सब से उनकी ज़बान में बड़ी रवानी के साथ गुफ़्तुगू की, उन सब ने हज़रत[अँ०] के इल्म व दानिश और फ़साहते कलाम का एतेराफ़ किया और वहाँ मौजूद दूसरे लोग यह मंज़र देखकर हैरतज़दा रह गए।[1] क्योंकि यह बात सभी जानते थे कि हज़रत रज़ा[अँ०] ने इन ज़बानों को हरगिज़ किसी उस्ताद से नहीं सीखा था और न ही मदीना मुनव्वरा में आप[अँ०] का इस क़िस्म के लोगों के साथ उठना-बैठना था, कि आप ने उन से सब ज़बानों को इस फ़साहत के साथ सीख लिया हो।

अनवार, जि०: ४६, पेज: ५०

[1] अल-ख़राएज वल-जराएह, जि०: १, पेज: ३४१, अस्साक़िब फ़िल मनाक़िब, पेज: १८६, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: ७३

2- इमाम रज़ा[अ०] परिंदों और हैवानों की ज़बान भी जानते थे

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की जानवरों की ज़बानों से आगाही के बारे में बहुत से नमूने हिस्ट्री व हदीस की किताबों में बयान हुए हैं। हम उनमें से कुछ की तरफ़ इशारा करते हैंः-

'सुलेमान बिन जाफ़र' कहता हैः मैं हज़रत रज़ा[अ०] के साथ एक बाग़ में था कि अचानक एक चिड़िया हज़रत[अ०] के पास आई और उसने शोर मचाना शुरु कर दिया। हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''जानते हो यह क्या कह रही है?'' मैंने अर्ज़ कियाः नहीं! ख़ुदा, उसका रसूल[स०] और उसके रसूल[स०] के फ़रज़ंद बेहतर जानते हैं। हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''यह कह रही है कि एक साँप उसके बच्चों को खाना चाहता है। यह असा उठाओ और उस घर में जाओ और उस साँप को मार दो।'' वह कहता हैः मैं उस घर के अंदर गया तो देखा कि एक साँप रेंग रहा है, मैंने उसको मार दिया।[1]

'हारून बिन मूसा' नामी शख़्स कहता हैः मैं हज़रत रज़ा[अ०] के साथ रेगिस्तान के सफ़र में था कि आप[अ०] का घोड़ा हिनहिनाने लगा। हज़रत[अ०] ने घोड़े से उतर कर उसकी लगाम छोड़ दी। घोड़ा एक तरफ़ गया और अपनी ज़रूरत पूरी करके वापस आ गया। हज़रत रज़ा[अ०] (जो मेरे चेहरे पर ताज्जुब और हैरत के आसार देख रहे थे) ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया, ''हज़रत दाऊद[अ०] को जो कुछ भी दिया गया है, हम मोहम्मद[स०] व आले मोहम्मद[अ०] को उस से ज़्यादा दिया गया है।''[2] (आप[अ०] का इशारा उस चीज़ की तरफ़ था कि हज़रत दाऊद[अ०] भी हैवानात की ज़बानें जानते थे, इसलिए हमारी हैवानात की ज़बानों से आश्नाई कोई ताज्जुब की बात नहीं है।)

---

[1] बसाएरुद्दरजात पेजः ३६५, दलाएलुल इमामह पेजः ३४३, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ८८

[2] मनाक़िब आले अबी तालिब, जि०: ४, पेजः ३३४, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ५७,

3- इमाम रज़ा[अ०] ग़ैबी इल्म भी रखते थे

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] के इल्म के समंदर का एक हिस्सा उन ग़ैबी बातों और ख़बरों से ज़ाहिर होता है, जो आप[अ०] ने आइन्दा के बारे में बयान फ़रमाई हैं, हम उनमें से कुछ की तरफ़ इशारा करते हैं:-

(i) हज़रत रज़ा[अ०] की बरामकियों के बारे में पेशीनगोईयाँ

इमाम रज़ा[अ०] ने बरामका, जो कि हारून अब्बासी के क़रीबी तरीन लोग और उसकी हुकूमत में बहुत अहम ओहदों पर थे, की हलाकत व नाबूदी की तरफ़ कई बार इशारा फ़रमाया था। जब हज़रत[अ०] की निगाह हज के दौरान, मिना में यह्या बिन ख़ालिद बरमकी के धूल से अटे हुए चेहरे पर पड़ी तो आप[अ०] ने फ़रमाया, ''इन बेचारों को नहीं पता कि इस साल इनके सरों पर क्या मुसीबत आने वाली है।''[1]

'मोहम्मद बिन फ़ज़्ल' कहता हैः उसी साल जब हारून अब्बासी ने बरामका की औलादों का सफ़ाया किया, मैंने हज़रत रज़ा[अ०] को अरफ़ात की सरज़मीन पर देखा, आप[अ०] खड़े हुए दुआ कर रहे थे कि अचानक आप[अ०] ने अपने सर को नीचे झुका लिया। किसी ने पूछाः आप[अ०] ने ऐसा क्यों किया? आप[अ०] ने फ़रमाया, ''मैं बरामकियों के हक़ में ख़ुदावंदे आलम से सज़ा की दरख़्वास्त करता था, आज मेरी दुआ क़ुबूल हो गई है।''[2]

जब 'दाऊद बिन कसीर' ने हज़रत रज़ा[अ०] से सुना कि 'यह्या बिन ख़ालिद' ज़हर आलूद खजूरों के ज़रिए हज़रत इमाम मूसा बिन जाफ़र[अ०] की शहादत की वजह बना है तो उसने हज़रत[अ०] की ख़िदमत में अर्ज़ कियाः मैं आप[अ०] पर क़ुरबान जाऊँ! अगर यह्या बिन ख़ालिद आप[अ०] के वालिदे बुज़ुर्गवार का क़ातिल है तो मैं अपनी जान को राहे ख़ुदा में ख़र्च करता हूँ और उसको क़त्ल कर देता हूँ। हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''तुम उसकी फ़िक्र मत करो, जो मुसीबत इस साल उसके और उसकी औलाद के सरों पर आने वाली है, वह इस से कहीं ज़्यादा है, जिसका तुम इरादा रखते हो।''[3]

---

1 अल-इरशाद, जि०: २, पेजः २५८, अल-काफ़ी, जि०: १, पेजः ४६१

2 उयूनु अख़बार्रिरज़ा[अ०], जि०: १, पेजः २४५, दलाएलुल इमामह पेजः ३७३

3 दलाएलुल इमामत, पेजः ३७२

(ii) हारून से मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा

हज़रत इमाम रज़ा[अ॰] इशारा फ़रमाते रहते थे कि मुझे हारून अब्बासी से कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। जब हज़रत[अ॰] को यह ख़बर दी गई कि 'ईसा बिन जाफ़र' ने हारून को ख़बरदार किया है और यह क़सम खाई है कि हज़रत मूसा बिन जाफ़र[अ॰] के बाद इमामत के दावेदार को क़त्ल करेगा और अली बिन मूसा रज़ा[अ॰] भी अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की जगह मंसबे इमामत पर बैठे हैं और इमामत के दावेदार भी हैं, लेकिन हारून ने उसकी बात को ठुकरा दिया है, तो हज़रत रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया, ''हारून से मुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा।''[1]

जब हज़रत रज़ा[अ॰] से कहा गया कि आप[अ॰] की बतौर इमाम पहचान हो चुकी है और आप[अ॰] ने इमामत के हवाले से अपने आपको मशहूर कर लिया है, दूसरी तरफ़ हारून की तलवार से ख़ून टपक रहा है! तब हज़रत[अ॰] ने फ़रमाया, ''मेरा जवाब वही है जो मेरे जद रसूले ख़ुदा[स॰] ने फ़रमाया थाः आप[स॰] ने फ़रमाया था ''अगर अबू जहल मेरे सर से एक बाल भी कम कर दे तो गवाह रहना कि मैं पैग़म्बरे ख़ुदा[स॰] नहीं हूँ!'', मैं भी यही कहता हूँ कि अगर हारून मेरे सर से एक बाल भी कम कर दे तो गवाह रहना कि मैं इमाम नहीं हूँ!'' एक और हदीस में जब इमाम रज़ा[अ॰] को हारून की तरफ़ से होशियार रहने को कहा गया तो आप[अ॰] ने फ़रमाया, ''वह जो भी चाहे कोशिश कर ले, मुझ पर मुसल्लत नहीं हो सकता।''[2]

---

1 उयूनु अख़बार्रिरज़ा[अ॰], जि॰: १, पेजः २४५
2 उयूनु अख़बार्रिरज़ा[अ॰], जि॰: २, पेजः २६२

(iii) हज़रत रज़ा[अ०] की मुख़्तलिफ़ पेशीनगोईयाँ

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] से पूछा गया कि अब्दुल्लाह (यानी मामून) मोहम्मद (अमीन) को क़त्ल करेगा?! तब आप[अ०] ने फ़रमाया, ''हाँ! अब्दुल्लाह जो ख़ुरासान में है, वह ज़ुबैदा के बेटे मोहम्मद को, जो बग़दाद में है, क़त्ल कर देगा।'' और बिल्कुल इसी तरह से हुआ..[1] और जब इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के एक फ़रज़ंद ने मक्का में मामून अब्बासी के ख़िलाफ़ क़्याम किया तो हज़रत रज़ा[अ०] ने उन से फ़रमाया, 'ऐ चचा! अपने बाप और भाई को न झुठलाएं, क्योंकि इस काम का कोई नतीजा नहीं है और यह काम ख़त्म होने वाला भी नहीं है।'' इसी तरह से हुआ, कुछ वक़्त के बाद उसने मामून के लश्कर से शिकस्त खाई और हथियार डाल कर ख़ुद को उसके सुपुर्द कर दिया।[2]

एक दिन 'जाफ़र बिन अली अलवी' फ़क़ीराना और ग़ैर मुनासिब कैफ़ियत में बनी हाशिम के कुछ जवानों के पास से गुज़रा तो उन्होंने उसकी ज़ाहिरी हालत की वजह से हिक़ारत से उसे देखा, तब हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''बहुत जल्द उसको बहुत से माल और काफ़ी तरफ़दारों के साथ देखोगे।'' अभी एक महीना भी नहीं गुज़रा था कि वह मदीने का गवर्नर बन गया और और उसकी हालत अच्छी हो गई।[3]

---

1 अल-मनाक़िब, जि०: ४, पेजः ३६३, आलामुल हिदायह, पेजः ३४

2 उयूनु अख़बार्रिरज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २०७, बिहारुल अनवार, जि०: ४७, पेजः २४७

3 अल-फ़सूलुल मुहिम्मह पेजः २४७

(iv) हज़रत रज़ा[अ०] का माँ के पेट में मौजूद बच्चे के सेक्स के बारे में बताना

एक शख़्स ने हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की बारगाह में अर्ज़ कियाः जब मैं कूफ़े से आ रहा था तो मेरी बीवी प्रेग्नेंट थी। आप[अ०] ख़ुदावंदे आलम से यह दरख़्वास्त कर दीजिए कि उसके यहाँ बेटा हो! हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''बेटा ही होगा और उसका नाम 'उमर' रखना।''

जब वह शख़्स कूफ़ा वापस लौटा तो उसने देखा कि उसके यहाँ बेटा पैदा हुआ है और उसका नाम ''अली'' रखा गया है। वह कहता हैः मैंने इमाम रज़ा[अ०] के कहने के मुताबिक़ उसका नाम 'उमर' रख दिया। मेरे पड़ोसी को (जो शिया दुश्मन था) जब बच्चे के नाम की तबदीली का पता चला तो उसने कहाः मैं तेरे राफ़ज़ी[1] होने के बारे में अब किसी की बात बिल्कुल क़ुबूल नहीं करूँगा।[2]

एक दिन इमाम रज़ा[अ०] अपने चचा 'मोहम्मद बिन जाफ़र' की अयादत के लिए तशरीफ़ ले गए जिनकी हालत बहुत ख़राब थी और एसा लगता था कि बस दम निकलने वाला है। देखा कि आप[अ०] के दूसरे चचा 'इस्हाक़ बिन जाफ़र' और दूसरे कुछ लोग, मरीज़ के पास रो-पीट रहे हैं। हज़रत रज़ा[अ०] मुस्कुराते हुए वहाँ से बाहर आ गए। वहाँ मौजूद लोगों को बड़ा ताज्जुब हुआ।

हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''मेरा मुस्कुराना इस वजह से था कि मेरे चचा 'मोहम्मद बिन जाफ़र'' तो ठीक हो जाएंगे, लेकिन 'इस्हाक़ बिन जाफ़र' जो इस वक़्त उन पर रो रहे हैं जल्दी ही मर जाएंगे और मोहम्मद बिन जाफ़र उन पर रोयेंगे!'' और ऐसा ही हुआ जैसा हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया था।[3]

'हसन बिन मूसा' नामी शख़्स ने, जिसकी दो कनीज़ें प्रेग्नेंट थीं, हज़रत रज़ा[अ०] से ख़त लिख कर चाहा कि दुआ करें उनके यहाँ बेटे पैदा हों। हज़रत[अ०] ने ख़त के जवाब में फ़रमाया, ''तमाम काम ख़ुदावंदे आलम के हाथ में हैं, इन्शाअल्लाह तेरे यहाँ एक बेटा और एक बेटी पैदा होगी, बेटे का नाम 'मोहम्मद' और बेटी का नाम 'फ़ातिमा' रखना। जिस तरह से हज़रत[अ०] ने

---

1 राफ़ज़ी वह नाम है जो शिया दुश्मन अफ़राद ने शियों को दिया है।

2 अस्साक़िब फ़िल मनाक़िब पेजः २१६, अल-ख़राएज वल-जराएह, जि०: १, पेजः ३६१, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेजः ५४

3 उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेजः २२३

फ़रमाया था उसी तरह हुआ।[1]

एक और शख़्स जिसके यहाँ ग्यारह बच्चे पैदा होने के बाद मर गए थे, उसने हज़रत रज़ा[अ०] से औलाद के बाक़ी न रहने का शिकवा किया। हज़रत[अ०] ने सर नीचे झुका लिया, दुआ फ़रमाई और देर तक दुआ करते रहे। फिर फ़रमाया, ''उम्मीद है तेरे यहाँ एक के बाद एक दो बेटे पैदा होंगे।'' रावी कहता है कि जैसा हज़रत[अ०] ने फ़रमाया था वैसा ही हुआ। मैंने पहले का नाम 'इब्राहीम' और दूसरे का नाम 'मोहम्मद' रखा और वह दोनों ज़िंदा रहे।[2]

मामून अब्बासी, इमाम रज़ा[अ०] का बहानेबाज़ दुश्मन, हज़रत[अ०] की शहादत के बाद एक वाक़िआ बयान करते हुए कहता हैः मैंने हज़रत[अ०] से दरख़्वास्त की कि मेरी कनीज़ 'ज़ाहिरया' जिसको दूसरी सब कनीज़ों से ज़्यादा चाहता हूँ, प्रेग्नेंट है, उसका बच्चा सही सालिम रहे! क्योंकि कई बार उसका बच्चा गिर चुका है। हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''फ़िक्र न करो! उसके यहाँ बेटा होगा जो सबसे ज़्यादा अपनी माँ से मिलता-जुलता होगा और उसके दाएं हाथ और बाएं पाँव में एक उंगली ज़्यादा होगी।'' जैसा कि हज़रत[अ०] ने फ़रमाया था उसी तरह हुआ...[3]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०ः १, पेजः २३६

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०ः १, पेजः २४०

[3] अल-ग़ैबत, शेख़ तूसी पेजः ४६, उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०ः १, पेजः २४१

(v) हज़रत रज़ा[अ०] अपनी शहादत-दफ़न की जगह को जानते थे

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] मामून के ज़रिए अपनी शहादत और उसकी कैफ़ियत के बारे में अकसर ख़बर देते रहते थे, जो तफ़सील के साथ हज़रत[अ०] की शहादत के बाब में ज़िक्र होगा, यहाँ उसमें से कुछ बतौर इशारा बयान करते हैं:-

कभी आप[अ०] फ़रमाते थे, ''मैं (ख़ुरासान के) ऐसे सफ़र पर जा रहा हूँ जिस से वापस नहीं आऊँगा।[1] और जब मामून ने हज़रत रज़ा[अ०] को वली अहदी के लिए मदीने से ख़ुरासान बुलाया, तो रावी कहता है: जब हज़रत[अ०] अपने नाना रसूले ख़ुदा[स०] को अलविदा कहने के लिए मस्जिदे नबवी[स०] तशरीफ़ लाए तो आप[अ०] ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे। मैंने हज़रत[अ०] को सलाम किया और वली अहदी की मुबारकबाद दी। आप[अ०] ने फ़रमाया, ''मुझे मेरे नाना रसूले ख़ुदा[स०] के पास से ले जा रहे हैं और मैं परदेस में मर जाऊँगा और मुझे हारून के पास दफ़न किया जाएगा।''[2] और यही वजह थी कि जब उन्हें मदीने से ले जाया जा रहा था तो उन्होंने हुक्म दिया कि उन पर रोया जाए।[3]

क्योंकि मामून ज़ाहिर में (दिखाने के लिए) इमाम रज़ा[अ०] के साथ मोहब्बत का इज़हार करता था और हज़रत अली[अ०] की इमामत का सबके सामने डिफ़ेंस करता था, हज़रत रज़ा[अ०] अपने दोस्तों और चाहने वालों से फ़रमाते थे, ''कहीं मामून अपनी बातों से तुम्हें धोका न दे दे, ख़ुदा की क़सम! मुझे उसके अलावा कोई और क़त्ल नहीं करेगा और मैं कुछ नहीं कर सकता, सिवाए इसके कि जो तै हो चुका है, उसके आगे तस्लीम हो जाऊँ।''[4]

एक और वाक़िए में रावी कहता है: मैंने देखा कि हारून अब्बासी मस्जिदे हराम के एक दरवाज़े से बाहर आया और हज़रत रज़ा[अ०] दूसरे दरवाज़े से और हज़रत[अ०] ने फ़रमाया,

يَا بُعدَ الدَّارِ وَ قُربَ المُلتَقَى اِنَّ طُوسَ سَتَجمَعُنِي وَ اِيَّاهُ

''घर कितना दूर है और मुलाक़ात कितनी नज़दीक, शहरे तूस जल्दी ही

---

1 उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेज: २३३
2 उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेज: २३४
3 उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेज: २३५
4 उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेज: १९९

मुझे और इसे एक जगह जमा करेगा।[१]

कभी मदीने की मस्जिद में, जब हारून अब्बासी ख़िताब कर रहा होता था तो आप[अ०] फ़रमाते थेः

تَرونِي وَاِيَّاهُ نُدفَنُ فِي بَيتٍ وَاحِدٍ

"तुम मुझे और इसको एक कमरे में दफ़न देखोगे।"[२] और कभी आप[अ०] यह भी फ़रमाते थे, "मैं और हारून इन दो की तरह होंगे।" और अपनी शहादत और दरमियानी उंगलियों को एक दूसरे से मिलाकर इशारा फ़रमाते थे। रावी कहता हैः हज़रत[अ०] की इस बात का मतलब मैं उस वक़्त समझा जब हज़रत[अ०] की शहादत के बाद आप[अ०] को हारून के पास दफ़न किया गया।[३]

---

1 अल-इतहाफ़ बिहुब्बिल अशराफ़ पेजः ५६, आलामुल हिदायत पेजः ३६ में देखें

2 अल-इतहाफ़ बिहुब्बिल अशराफ़ पेजः ५६, आलामुल हिदायत पेजः ३६ में देखें

3 अल-इतहाफ़ बिहुब्बिल अशराफ़ पेजः ५६, आलामुल हिदायत पेजः ३६ में देखें

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की कल्चरल एक्टिविटी

दीन के बुज़ुर्गों के अलग-अलग ज़मानों में, तरह-तरह के इक़दामात और तौर-तरीक़े को सही तरह से समझने के लिए, उस ज़माने के हालात और उन बुज़ुर्गों के अहदाफ़ व मक़ासिद की सही पहचान होना ज़रूरी है और उस पहचान के बग़ैर किसी भी तरह की राय का इज़हार या गुमान करना, हरगिज़ सही और क़ाबिले क़ुबूल नहीं होगा, ख़ास कर अइम्म-ए-अतहार[अ०] के बारे में, कि अगर ग़ैबी मसाएल और इलाही इमदाद को नज़र में न रखा जाए तो भी यह हज़रात अक़्ल और बहुत ज़्यादा सूझबूझ के मालिक और तमाम इन्सानों में सबसे ज़्यादा अक़लमंद थे।

दूसरी तरफ़ उन ज़मानों के हालात जो तारीख़ में मौजूद हैं, वह बहुत ज़्यादा अधूरे और बेबुनियाद हैं, जिन पर एक रिसर्च स्कॉलर कभी भी सही एनॉलाइज़ करने के लिए भरोसा नहीं कर सकता।

अगरचे अहलेबैते इस्मत व तहारत[अ०] के बारे में हमें तारीख़ के सुबूतों की हरगिज़ कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उनके बारे में हमारा अक़ीदा है कि वह अपनी इमामत के मक़ाम व मरतबे के मुताबिक़, जो उन्हें अल्लाह के इल्म व हिक्मत से जोड़ता है, अल्लाह की तरफ़ से होने वाले इल्हामों और एक तै प्रोग्राम के साथ जो उनके लिए तहरीर की सूरत में मौजूद है, ख़ुदा से अहद लेते हैं। और हमेशा हर तरह के हालात में बेहतरीन और मुनासिब रास्ते को अपनाते हैं।

लेकिन इन सब चीज़ों का मतलब यह नहीं हैं कि हम अइम्मा-ए-मासूमीन[अ०] के ज़माने में तारीख़ में मौजूद कुछ बातों को बयान न करें, ज़रूरी है कि ज़्यादा से ज़्यादा उनके बारे में मालूमात हासिल करें (ताकि सही मारफ़त व शिनाख़्त हासिल कर सकें)। इन्हीं मवारिद में से हज़रत रज़ा[अ०] के ज़माने में पाए जाने वाले वह हालात हैं जो मआरिफ़ और इस्लामी हक़ीक़तों के बड़े पैमाने पर फैलने की वजह बने, इसलिए कि हम अहलेबैत[अ०] से बाक़ी रह जाने वाले आसार को देखने के बाद इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] और हज़रत इमाम बाक़िर[अ०] व हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ के बाद, सबसे ज़्यादा आसार इमाम रज़ा[अ०] ने अपने बाद छोड़े हैं और यह चीज़ उन ख़ास हालात और मुनासिब मौक़े की वजह से रही, जो हज़रत रज़ा[अ०] के ज़माने में वुजूद में आईं थीं।

बावजूद इसके कि इमाम रज़ा[अ०] के दुश्मन आप[अ०] की इल्मी कमज़ोरी को ज़ाहिर करने और लोगों के दरमियान आप[अ०] की महबूबियत कम करने के

लिए कोशिश किया करते थे, लेकिन आप[अ०] की इमामत के ज़माने में और ख़ास कर आप[अ०] की वली अहदी ने ऐसा मुनासिब मौक़ा फ़राहम किया कि आप[अ०] ने इस्लामी इल्मों और अहलेबैत के स्कूल ऑफ़ थॉट को दुनिया तक पहुँचाने के लिए बहुत कोशिशें कीं, जिनमें से कुछ को यहाँ बयान करते हैं:-

1- हद से आगे बढ़ने और बढ़ाने वालों से मुक़ाबला

अहलेबैते[अ०] के मानने वालों और पैरोकारों की बड़ी मुश्किलों में से एक वह लोग थे जो इन हस्तियों को उनके असली और सही मुक़ाम से बढ़ाते और उनकी शान में हद से आगे बढ़ते रहे हैं। वह इनके बारे में रुबूबियत या नुबुव्वत या ख़ुदावंदे आलम की कुछ सिफ़तों के पाए जाने का अक़ीदा रखते हैं, ऐसे लोग हमेशा अइम्म-ए-ताहेरीन[अ०] और उनके शियों की नज़र में क़ाबिले बेज़ारी रहे हैं।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमायाः ''अपने जवानों की तरफ़ ध्यान रहे कहीं हद से आगे बढ़ने वाले उनको फ़ासिद न कर देंः

فَاِنَّ الغُلاۃَ شَرُّ خَلق اللہِ یُصَغِّرُونَ عَظمَۃَ اللہَ وَیَدَّعُونَ الرُّبُوبِیَّۃَ لِعِبَادِ اللہِ

''यक़ीनन ग़ाली (हद से आगे बढ़ने वाले) ख़ुदावंदे आलम की बदतरीन मख़लूक़ हैं, वह ख़ुदा की अज़मत को छोटा और ख़ुदा के बंदों के लिए रुबूबियत का दावा करते हैं, ख़ुदा की क़सम! ग़ाली यहूदियों, ईसाइयों, मजूसियों और मुश्रेकीन से बदतर हैं...''[1]

इसलिए हज़रत रज़ा[अ०] ने भी उस गिरोह के साथ, जो आप[अ०] के दौर में इस तरह की फ़िक्र के साथ काम करते थे, सख़्त बहस व मुनाज़रे किए हैं।

एक हदीस में हज़रत रज़ा[अ०] अपने आबाओ अजदाद[अ०] की सनद ज़िक्र करने के साथ, हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] से एक रिवायत नक़ल करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमायाः ''मेरा जो हक़ (मरतबा) है मुझे उस से ऊपर मत लेकर जाओ! क्योंकि ख़ुदावंदे आलम ने मुझे पैग़म्बर बनाने से पहले अपना बंदा बनाया है। फिर इमाम रज़ा[अ०] ने सूरए आले इमरान की आयत न० 79 और 80 तिलावत फ़रमाई जिसका तर्जुमा यह है, *''किसी बशर के लिए यह मुनासिब नहीं है कि ख़ुदा उसे किताब व हिकमत और नुबुव्वत अता करे और फिर वह लोगों से यह कहने लगे कि ख़ुदा को छोड़कर हमारे बंदे बन जाओ, बल्कि उसका क़ौल यही होता है कि अल्लाह वाले बनो कि तुम किताब की तालीम भी देते हो और उसे पढ़ते भी रहते हो और वह यह हुक्म भी नहीं दे सकता कि फ़रिश्तों और नबियों को अपना परवरदिगार बना लो, क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म दे सकता है, जबकि तुम लोग मुसलमान हो।''* और बात को आगे बढ़ाते हुए फ़रमाया कि हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया,

---

1 अमाली शेख़ तूसी, बिहारुल अनवार, जि०ः २५, पेजः २६५ में देखें

''मेरे बारे में दो शख़्स हलाक हो जाएंगे और मुझ पर उसका कोई गुनाह नहीं हैः एक ऐसा दोस्त जो गुलू का शिकार है और दूसरा ऐसा दुश्मन जो कोताही व तक़सीर की राह चुने हुए है।'' फिर हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः ''और हम ख़ुदावंदे आलम के नज़दीक बेज़ारी चाहते हैं उस शख़्स से जो हमारे बारे में गुलु करे और हमें हमारे अंदाज़े और मरतबे से ऊपर ले जाए, जैसे हज़रत ईसा[अ०] ने अपने मानने वालों से बेज़ारी इख़्तियार की थी।'' फिर हज़रत[अ०] ने कुछ आयतों की तिलावत के बाद फ़रमाया, ''जो भी पैग़म्बरों[अ०] या इमामों के लिए रुबूबियत या पैग़म्बरी का दावा करे या ग़ैर इमाम के लिए इमामत का अक़ीदा रखे, तो हम उस से दुनिया व आख़िरत, दोनों में बेज़ार हैं।''[1] यानी अहलेबैते[अ०] के पैरोकारों को बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है, न यह कि मुख़ालिफ़ों के बहकावे में आकर इमाम[अ०] के मक़ाम व मरतबे को कम करें और न ही उनकी मोहब्बत और बेजा तास्सुब की वजह से इमाम[अ०] को ख़ुदा या पैग़म्बर के मरतबे तक ले जाएं, बल्कि अक़्ल और शरीअत के हिसाब से चलें और जो कुछ ख़ुद उन्होंने बयान किया है, उसी की पैरवी करें।

एक और रिवायत में इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया है, ''ख़ुदा की लानत हो ग़ालियों पर! यह लोग यहूदी क्यों नहीं हो गए? क्यों मजूसी नहीं हो गए? क्यों ईसाई नहीं हो गए? क्यों क़द्रिया नहीं हो गए? क्यों मुरजेआ नहीं हो गए? क्यों ख़वारिज नहीं हो गए?!'' (यानी क्यों अपने आपको हम से निस्बत देते हैं?) फिर हज़रत[अ०] ने फ़रमायाः ''उन के साथ मत उठो-बैठो और उनकी तस्दीक़ मत करो और उन से बेज़ारी इख़्तियार करो, ख़ुदा भी उन से बेज़ार है।''[2]

जब अबू हाशिम जाफ़री ने हज़रत इमामे रज़ा[अ०] से ग़ालियों (हद से आगे बढ़ने वाले लोग) और तफ़वीज़ का अक़ीदा रखने वालों के बारे में पूछा तो हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''ग़ाली काफ़िर हैं और तफ़वीज़ का अक़ीदा रखने वाला मुश्रिक, जो भी उनके साथ उठे-बैठे या उनका हमदम हो, उनके साथ खाना-पीना रखे, उनकी मदद करे या उनके साथ रिश्ता जोड़े, चाहे रिश्ता दे या रिश्ता ले, या उन (की बातों) पर ईमान लाए या उनको अमानतदार व अमीन समझे और या उनकी बातों की तस्दीक़ व ताईद करे या उनकी आधे कलमे से भी मदद करे, तो वह ख़ुदावंदे आलम की विलायत, हज़रत रसूल[स०] की विलायत और हम अहलेबैत[अ०] की विलायत से बाहर हो गया है।''[3]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २०१, बिहारुल अनवार, जि०: २५, पेजः १३४

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २०३

[3] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २०३

जब हम उन रिवायतों को देखते हैं जिनमें ग़ुलू करने वालों की बुराई की गई है तो मालूम होता है कि इन रिवायतों में से बहुत सारी रिवायतें इमाम रज़ा[अ०] से ज़िक्र हुई हैं जिस से इस बात का अंदाज़ा होता है कि उस ज़माने में ग़ालियों की तादाद अच्छी ख़ासी थी।[1]

ग़ालियों (हद से आगे बढ़ने वाले लोग) में से एक शख़्स ने हज़रत रज़ा[अ०] से अर्ज़ कियाः ''यूनुस बिन ज़िबियान'' ने (जो ख़ुद एक ग़ाली है) कहा है कि एक रात मैं तवाफ़ कर रहा था कि मैंने ऊपर से एक आवाज़ सुनीः ऐ यूनुस! मैं हूँ कि मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं है, मेरी इबादत करो! मेरी याद के लिए नमाज़ बजा लाओ! मैंने सर जो उठाकर देखा तो अबुल हसन[अ०] अचानक मेरे ऊपर ज़ाहिर हुए।

इमाम रज़ा[अ०] यह बातें सुनकर इतने ग़ज़बनाक हुए कि उस शख़्स से फ़रमाया, ''मेरे पास से दूर हो जाओ! ख़ुदा तुम पर और हर उस शख़्स पर जिसने तुम से ऐसा कहा है और यूनुस बिन ज़िबयान पर हज़ार बार लानत करे और इसके बाद भी हज़ार बार लानत हो और हर लानत तुम्हें जहन्नम के गढ़े में ढकेल दे। मैं शहादत देता हूँ कि उसको आवाज़ देने वाला शैतान के अलावा कोई और नहीं था।[2]

जब हज़रत रज़ा[अ०] से किसी ने अर्ज़ कियाः कुछ ऐसे लोग जो ख़ुद को आप[अ०] का दोस्त और तरफ़दार समझते हैं, यह सोचते हैं कि यह सिफ़ात (परवरदिगारे आलम की), अली[अ०] की सिफ़ात हैं और वही अल्लाह रब्बुल आलमीन हैं, हज़रत रज़ा[अ०] यह जुमले सुनकर लरज़ने लगे, आप[अ०] का बदन काँपने लगा, आप[अ०] पसीने में शराबोर हो गए और फ़रमायाः ''सुब्हानल्लाह! ख़ुदावंद वैसा नहीं है जैसा ज़ालिम और काफ़िर लोग कहते हैं। क्या ऐसा नहीं था कि अली[अ०] सबकी तरह खाते, पीते और शादियाँ करते थे? क्या वही नहीं थे जो अपने परवरदिगार के हुज़ूर ख़ुलूस के साथ नमाज़ के लिए खड़े होते थे और अपने परवरदिगार से राज़ो नियाज़ और मुनाजात करते थे? क्या वह जो इस क़िस्म की सिफ़तें रखता है, ख़ुदा हो सकता है?''[3]

आज भी दुश्मन पहले से कहीं ज़्यादा अहलेबैत[अ०] पर हमला करने के लिए बहानों की तलाश में है, इसलिए हर एक शिया ख़ास कर उलमा (ख़ुदावंदे आलम उनकी इज़्ज़त ज़्यादा करे) का फ़रीज़ा यह है कि ग़ुलू की

---

1 बिहारुल अनवार, जि०: २५, बाब नफ़ीये ग़ुलू में देखें

2 रिजाल कशी पेजः २३३ में देखें, बिहारुल अनवार, जि०: २५, पेजः २६४, (यह रिवायत शुहूद का दावा करने वालों और उनके पैरोकारों के लिए चैलेंज है, क्योंकि अगर वाक़िअन कोई आवाज़ उनके कानों तक पहुँचती है तो मालूम नहीं है, इसमें कोई इलाही पहलू भी है, क्योंकि शैतान भी इन लोगों और इन हालतों की ताक में बैठा है।)

3 रिजाल कशी पेजः १६३, एहतिजाजे तबरसी जि०: २४२, बिहारुल अनवार, जि०: २५, पेजः २७५

मिलावट वाले नुक़तों और ख़ासकर ग़लत और ग़ुलू की मिलावट वाले अश्आर के मुक़ाबिल डटकर खड़े हो जाएं और अहलेबैत[अ०] की मदद करें, ज़िम्मेदार और अपनी ज़िम्मेदारी समझने वाले शायर और क़सीदा ख़्वानों को भी चाहिए कि ग़ाली और मुनहरिफ़ लोगों को ख़ुद से दूर रखें और लोगों को भी होशियारी और समझबूझ के साथ इस तरह के लोगों को समझना चाहिए।

2- हज़रत रज़ा[अ०] का सूफ़िया फ़िरक़े के साथ सख़्त रवैय्या

इस्लामी समाज के मुख़्तलिफ़ फ़िरकों में से एक फ़िरक़ा सूफ़िया फ़िरक़ा है, जो पहली सदी हिजरी ही में ''अबू हाशिम कूफ़ी'' नामी शख़्स के हाथों सामने आया, जिसने ज़ाहिदाना लिबास और दुनिया से अलग-थलग होकर दीन में बिदअतें पैदा कीं और जो अपनी ख़ास सोच और आमाल रखता था।

यह लोग शुरुआत ही से अहलेबैत[अ०] के स्कूल ऑफ़ थॉट से अलग थे और अइम्म-ए-मासूमीन[अ०] भी सख़्ती से इन लोगों के साथ पेश आते थे और अपने पैरोकारों को इन लोगों के नज़दीक होने से मना फ़रमाते थे। इसी तरह हज़रत रज़ा[अ०] ने भी अपने शियों को इस गिरोह के ख़तरे से आगाह किया और फ़रमाया थाः ''कोई भी सूफ़िया गरी का अक़ीदा अपने अंदर पैदा नहीं करता, मगर यह कि धोखा दही, गुमराही या बेवकूफ़ी की वजह से और हो सकता है किसी में यह तीनों चीज़ें पाई जाती हों।[1]

हज़रत रज़ा[अ०] ने यह भी फ़रमायाः जिसके सामने सूफ़िया का ज़िक्र किया जाए और वह अपनी ज़बान व दिल से उनका इनकार न करे, वह हम में से नहीं है और जो कोई भी इनकार करे, गोया उसने रसूले ख़ुदा[स०] के साथ कुफ़्फ़ार से जिहाद किया है।[2]

इस गिरोह की मुख़ालिफ़त में पैग़म्बरे अकरम[स०] और अइम्म-ए-अतहार[अ०] से बहुत सी रिवायतें मौजूद हैं और शिया इमामिया का अइम्म-ए-अतहार[अ०] के ज़माने से हमेशा तसव्वुफ़ के बातिल होने पर इजमा रहा है[3] और उन्होंने इस फ़िरक़े की मुख़ालिफ़त में बहुत सी किताबें लिखी हैं।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने सूफ़िया को अहलेबैत[अ०] का दुश्मन कहा है और उन लोगों का हश्र, जो उनकी तरफ़ माएल हों, उन्हीं के साथ बताया है और फ़रमाया हैः ''जल्द ही वह गिरोह जो हमारी मोहब्बत का दावेदार है, सूफ़िया की तरफ़ माएल हो जाएगा और अपने आपको उनके जैसा कर लेगा, उनके अलक़ाब अपने नाम के साथ लगाएगा और उनकी बातों की तरफ़दारी करेगा, जो कोई भी उनकी तरफ़ माएल होगा वह हम में से नहीं है और मैं

---

1 अश्शैख़ुल मुफ़ीद बा सनदे सही किताबुर्रदद अला अस्हाबिल हल्लाज में देखें, अर्रिसालतुल इसना अशरिया पेजः ३१

2 अर्रिसालतुल इसना अशरिया फिर रद्दे अलस्सूफ़ियह पेजः ३२

3 अल-इस्ना अशरिया पेजः ३२

उस से बेज़ार हूँ।[1]

अफ़सोस का मक़ाम यह है कि इस गुमराह फ़िरक़े ने अज़ीम इस्लामी इंक़ेलाबे ईरान के बाद, समाज की दीनी व मानवी ज़रूरतों और कुछ कल्चरल ऑफ़िसर्स और कुछ उलमा की ख़ामोशी से ग़लत फ़ायदा उठाते हुए अपनी कोशिश को काफ़ी फैला दिया है। समाज के तमाम लोगों ख़ासकर ओहदेदारों और उलमा का फ़र्ज़ यह है कि वह इस गुमराही और अज़ीम बिदअत का रास्ता रोकें और दीन और लोगों के अक़ीदे की हिफ़ाज़त करते हुए अपनी ज़िम्मेदारी के हिसाब से कुछ करें और उनके रहबरों, किताबों और बातों की तबलीग़ करने से बचें, क्योंकि इमामे ज़माना[अ०] के मुल्क में, इमामे ज़माना[अ०] के माल से फ़ायदा उठाते हुए, हज़रत[अ०] के मुख़ालिफ़ों की तबलीग़ करना, अल्लाह के लुत्फ़ और हज़रत मेहदी[अ०] की इनायतों से महरूमी की वजह बन जाएगा।

---

[1] अल-इस्ना अशरिया पेजः ३२

3- हज़रत रज़ा[अ०] की निगाह में इमाम की अहमियत

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की अहम कल्चरल एक्टिविटीज़ में से एक, इमाम और इमामत के बारे में शिया अक़ीदे को फैलाना भी है, क्योंकि बहुत से मुख़ालिफ़, इमाम के बारे में इतना हलका अक़ीदा रखते हैं कि इमाम के मक़ाम व मंज़ेलत को एक मामूली इन्सान से भी नीचे ले आते हैं और किसी भी गुनाह को उनकी इमामत या इताअत से रोकने वाला नहीं समझते। इसलिए हज़रत रज़ा[अ०] ने इस बारे में अहलेबैत[अ०] के अक़ीदे को फैलाने के लिए बहुत कोशिशें कीं थीं। हज़रत रज़ा[अ०] से बहुत बार इमाम के ज़रूरी होने के बारे में सवाल हुआ तो हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''ज़मीन इमाम से ख़ाली नहीं हो सकती, वरना अपने रहने वालों को निगल लेती।''

हज़रत रज़ा[अ०] एक और जगह फ़रमाते हैं, ''अगर एक पलक झपकने भर के लिए भी ज़मीन ख़ुदा की हुज्जत के वुजूद से ख़ाली होती तो अपने रहने वालों को निगल लेती।[1]

हज़रत रज़ा[अ०] ने इमाम की निशानियों और सिफ़ात के बारे में फ़रमाया हैः ''इमाम की कुछ निशानियाँ हैंः वह लोगों में सबसे ज़्यादा जानने वाला और सबसे ज़्यादा अक़लमंद, बेहतरीन फ़ैसला करने वाला, सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी व परहेज़गार, हलीम व बुर्दबार, बहादुर, सबसे ज़्यादा सख़ावतमंद और सबसे ज़्यादा आबिद होता है, जब दुनिया में आता है तो ख़तना किया हुआ और पाक व ताहिर होता है, वह अपने पीठ-पीछे भी उसी तरह देख सकता है, जैसे सामने से देखता है। वह दूसरे लोगों के लिए दूसरों से ज़्यादा मेहरबान और उनके माँ-बाप से भी ज़्यादा हमदर्द होता है, ख़ुदा के हुज़ूर में सबसे ज़्यादा इन्केसारी करने वाला और अल्लाह के अहकाम के लिए सब लोगों से ज़्यादा कोशिश करने वाला होता है, उसकी दुआ क़ुबूल है, इसलिए अगर वह किसी पत्थर पर दुआ करे तो वह पत्थर दो टुकड़े हो जाए...[2]

एक दूसरी हदीस में हज़रत[अ०] ने फ़रमायाः ''इमाम की रूहुल-क़ुद्स के ज़रिए ताईद की जाती है, उसके और ख़ुदावंदे आलम के बीच एक नूर का सुतून है, जिसमें वह लोगों के आमाल को देखता है और वह चीज़, जो उसके लिए ज़रूरी होती है, जान लेता है, कभी खुल जाता है और वह जान

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेजः २१२

[2] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: १, पेजः १६६,

लेता है और कभी बंद हो जाता है और वह नहीं जान पाता...[1]

हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः हम ज़मीन पर ख़ुदावंदे आलम की हुज्जतें हैं, उसके जानशीन उसके बंदों के बीच और उसके राज़ के अमानतदार, हम हैं कलम-ए-तक़्वा और उरवतुल-वुस्क़ा यानी उसकी मज़बूत रस्सी, हम हैं ख़ुदावंदे आलम की गवाही देने वाले और उसकी मख़लूक़ के बीच उसके परचमदार, हमारी वजह से ख़ुदा आसमानों और ज़मीनों को नाबूदी से बचाए हुए है और हमारे ही वसीले से बारिश करता है और अपनी रहमत को फैलाता है, ज़मीन हरगिज़ हम में से किसी एक के वुजूद से ख़ाली नहीं होगी, चाहे वह ज़ाहिर हो या पोशीदा, अगर एक रोज़ भी ज़मीन हुज्जते ख़ुदा के वुजूद से ख़ाली हो जाए तो अपने रहने वालों को थर्रा देगी और बेचैन कर देगी, जैसे कि समंदर अपने ऊपर रहने वालों को बेसुकून और लरज़े में रखता है।[2]

सबसे अहम हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की वह गुफ़्तुगू है जो आप[अ०] ने मर्व शहर पहुँचने के बाद, जब इमामत के बारे में लोगों के इख़्तेलाफ़ की ख़बरें आप[अ०] तक पहुँचीं, तो वहाँ की जामा मस्जिद में इरशाद फ़रमाई थी। हज़रत रज़ा[अ०] पहले मुस्कुराए और फिर फ़रमायाः ''ऐ अब्दुल अज़ीज़! यह गिरोह नहीं समझ सका और अपनी राय में धोका खा गया...'' फिर इस मतलब को बयान करने के लिए कि इस्लाम, कामिल दीन है और पैग़म्बरे अकरम[स०] ने हज़रत अली[अ०] को हिदायत का परचम क़रार दिया है और इस तरह दीन कामिल हो गया है, आप[अ०] ने फ़रमायाः ''क्या यह लोग इमामत की क़द्र, मक़ाम व मंज़ेलत को उम्मत में समझते हैं, ताकि चुनने का हक़ रखते हों? इमामत का मक़ाम व मंज़ेलत, बुलंद और उसकी शान बाअज़मत है और उस तक पहुँचना मुश्किल है और उसकी गहराई इस से कहीं ज़्यादा है कि लोग उसको अपनी अक़्ल से समझ सकें या अपनी राय व नज़र से उस तक पहुँच जाएं और किसी को अपने लिए इमाम चुन लें...

यक़ीनन इमामत, नबियों[अ०] का मक़ाम और मंज़ेलत और वसियों की मीरास है, इमामत, मुसलमानों के बीच एक सिस्टम और निज़ाम बनाने वाली है, दुनिया को सुधारने वाली और मोमिनों की इज़्ज़त व सरबुलंदी की वजह

---

[1] यह और इसके जैसी दूसरी हदीसें यह बताती हैं कि कुछ लोगों के ख़याल के उलट, न इमाम[अ०] का इल्म ज़ाती है और न लामहदूद, बल्कि इल्मे इमाम[अ०] ख़ुदा की मर्ज़ी के हिसाब से चलता है।

[2] बिहारुल अनवार, जि०: २३, पेजः ३५ नक़्ल अज़ "कमालुद्दीन" (जो कुछ इस हदीस और इसके जैसी दूसरी अहादीस में आया है, वह इमाम[अ०] की इस दुनिया में गहरी तासीर को ज़ाहिर करता है और यह भी कि इमाम[अ०] के वुजूद का फ़ाएदा सिर्फ़ हिदायते तशरीई में महदूद नहीं है, यहीं से हज़रत हुज्जत[अ०] के वुजूदे मुबारक के ग़ैबत के ज़माने में अज़ीम फ़ायदे का पता लगाया जा सकता है।

है, इमामत इस्लाम के अज़मत की बुनियाद है... इमाम चमकते सूरज की तरह है कि उसके नूर से सारी दुनिया रौशन हो जाती है, लेकिन वह आसमान में होता है, इस तरह से कि किसी के हाथ या आँख का उस तक पहुँचना मुमकिन नहीं होता....

इमाम[अ] एक मेहरबान दोस्त, हमदर्द भाई, शफ़ीक़ बाप और सख़्तियों में लोगों की पनाहगाह है, इमाम[अ] लोगों के बीच ख़ुदा का अमीन, बंदो पर उसकी हुज्जत और अल्लाह की ज़मीन पर उसका जानशीन है, इमाम वह है जो ख़ुदा की तरफ़ दावत देता है और ख़ुदा की बुज़ुर्गी को पहुँचने वाले हर तरह के नुक़सान से बचाता है।

इमाम[अ] गुनाहों से पाक और ऐब, बुराई से दूर है, वह इल्म के साथ मख़सूस है और हिल्म व बुर्दबारी की निशानी है, वह दीन का निज़ाम, मुसलमानों की इज़्ज़त, मुनाफ़िक़ों के गुस्से और काफ़िरों की हलाकत की वजह है।

इमाम[अ] के ज़माने में उसके जैसा कोई नहीं हो सकता और कोई भी आलिम उसके बराबर और उसका हम-पल्ला नहीं हो सकता, क्योंकि कोई भी उस जैसा नहीं है... कौन है जो इमाम[अ] की सही पहचान रखता हो और उसको चुन सके? हरगिज़-हरगिज़ (ऐसा मुमकिन ही नहीं!) अक़्लें गुमराह, फ़िक्रें हैरान व सरगरदाँ, आँखें मजबूर, बुज़ुर्ग हक़ीर और छोटे, हकीम और अक़्लमंद हैरत-ज़दा, बोलने वाले बेचारे, स्कॉलर्स नासमझ, शायर ख़ामोश और अदीब आजिज़ हैं कि इमाम[अ] की शान व मंज़ेलत की कोई सिफ़त या उसके फ़ज़ाएल में से कोई फ़ज़ीलत बयान कर सकें।''[1]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ], जि०: १, पेज: १७१

4- हज़रत रज़ा[अ०] और अमीरुलमोमिनीन[अ०]

इमाम रज़ा[अ०] से नक़ल होने वाली बहुत सी रिवायतें इस चीज़ को बयान करती हैं कि हज़रत रज़ा[अ०] बहुत से मौक़ों पर यह कोशिश करते थे कि अमीरुलमोमिनीन अली[अ०] के फ़ज़ाएल लोगों के सामने पेश करें और उनकी सही पहचान करवाएं, हम उनमें से कुछ रिवायतों को ज़िक्र करते हैं:

अमीरुलमोमिनीन[अ०] की फ़ज़ीलत में इमाम रज़ा[अ०] की चालीस हदीसें

1- इमाम रज़ा[अ०] हज़रत रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! तुम जन्नत व जहन्नम के तक़सीम करने वाले हो, तुम जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाओगे और बग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।[1]

2- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''तुम्हारे दरमियान मेरे ख़ानदान की मिसाल कश्ती-ए-नूह[अ०] की तरह है, जो उसमें सवार हो गया, निजात पाएगा और जो रह गया, वह जहन्नम की आग में डाला जाएगा।[2]

3- आँहज़रत[स०] ही से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''ख़ुदा और उसके रसूल[स०] का ग़ैज़ व ग़ज़ब, उस पर ज़्यादा है जो मेरा ख़ून बहाए और मुझे मेरी इतरत (अहलेबैत[अ०]) के बारे में तकलीफ़ दे।''[3]

4- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''क़रीब है कि मैं परवरदिगारे आलम की दावत पर लब्बैक कहूँ, मैं तुम्हारे दरमियान दो क़ीमती चीज़ें छोड़ रहा हूँ, उनमें से हर एक दूसरी से बड़ी है, किताबे ख़ुदा जो आसमान से ज़मीन तक फैली हुई (अल्लाह की) रस्सी है और मेरी इतरत व अहलेबैत[अ०]! देखो कि तुम मेरे बाद इन दोनों के साथ क्या करते हो?''[4]

5- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''हसन व हुसैन जन्नत के जवानों के सरदार हैं और उनके वालिदे गिरामी, उन दोनों से बेहतर हैं।[5]

6- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''वाए हो मेरे ख़ानदान पर ज़ुल्म करने वालों पर, गोया मैं कल (रोज़े क़यामत) उनको मुनाफ़िक़ों के साथ जहन्नम के निचले तबक़े में देख रहा हूँ।''[6]

7- रसूलुल्लाह[स०] से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, ''जिसका मैं

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २६

2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २६, हदीसः १०

3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २६, हदीसः ११

4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ३०, हदीसः ४०

5 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ३२, हदीसः ५६

6 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ४६, हदीस १७७

मौला हूँ, पस अली[अ०] उसके मौला हैं, ख़ुदाया! दोस्त रख, उसको जो अली[अ०] को दोस्त रखे और दुश्मन रख उसको जो उन से दुश्मनी करे, मदद फ़रमा उसकी जो उनकी मदद करे और (उसके हाल पर) छोड़ दे, उसको जो उनको छोड़ दे।''[1]

8- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! यक़ीनन ख़ुदावंदे आलम ने तुम्हें, तुम्हारे ख़ानदान वालों को, तुम्हारे शियों को और तुम्हारे शियों के दोस्तों को बख़्श दिया है...[2]

9- रसूले अकरम[स०] से रिवायत नक़ल करते हैं कि फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! अगर तुम न होते, तो मोमिनीन मेरे बाद पहचाने न जा सकते।''[3]

10- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! तीन चीज़ें ऐसी तुम्हें दी गई हैं, जो तुम से पहले किसी को नहीं दी गईं।'' हज़रत अमीर[अ०] ने अर्ज़ किया, ''मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान जाएं! वह क्या हैं?'' रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''मेरे जैसा ससुर तुम्हें दिया गया है, फ़ातिमा[स०] जैसी बीवी और हसन[अ०] व हुसैन[अ०] जैसे बेटे तुम्हें दिए गए हैं।''[4]

11- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[अ०] ने फ़रमाया, ''अली[अ०] के पैरोकार यक़ीनन क़यामत के दिन कामयाब हैं।''[5]

12- पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, ''जो भी यह चाहता है कि सुर्ख़ याक़ूत की उस शाख़ को, जिसे ख़ुदावंदे आलम ने अपनी क़ुदरत से लगाया है, देखे और उसको थाम ले, तो उसे चाहिए कि अली[अ०] और उनकी औलाद में से मुंतख़ब पेश्वाओं को दोस्त रखे (और अपना इमाम क़रार दे) क्योंकि यह लोग ख़ुदावंदे आलम के चुने हुए और बुलंद मरतबे वाले लोग हैं और हर क़िस्म के गुनाह व ख़ता से मासूम हैं।[6]

13- पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''जो भी मर जाए और वह मेरी औलाद से कोई इमाम न रखता हो, तो वह जाहिलियत की मौत मरा है और उसने जो भी (बुरे) काम जाहिलियत के ज़माने और इस्लाम में किए हैं, उनमें गिरफ़्तार हो जाएगा।''[7]

14- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''जो भी यह चाहता है कि किसी मज़बूत रस्सी को थाम ले, तो अली[अ०] और मेरे ख़ानदान

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ४७, हदीसः १८३
2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ४७, हदीस : १८२
3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ४८, हदीस : १८७
4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ४८, हदीस : १८८
5 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५२, हदीस : २०१
6 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५७, हदीस : २११
7 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५८, हदीस : २१४

की दोस्ती का दामन थाम ले।[1]

15- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, मैं और यह (अली[अ०]) क़यामत के दिन इस तरह होंगे।" (आप[स०] ने अपनी शहादत की उंगली और बीच की उंगली को मिलाकर दिखाया) और फिर फ़रमाया, "हमारे पैरोकार हमारे साथ होंगे और जो भी हमारे मज़लूम की मदद करे, वह भी इसी तरह होगा।"[2]

16- पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, "(लोगों के) पेश्वा, इमाम हुसैन[अ०] की औलाद से होंगे, जो उनकी इताअत करेगा, उसने ख़ुदा की इताअत की और जिसने उनकी नाफ़रमानी की, उसने ख़ुदावंदे आलम की नाफ़रमानी की, यही हैं अल्लाह की मज़बूत रस्सी और यही हैं उसकी तरफ़ जाने का वसीला।"[3]

17- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, "मैं और अली[अ०] एक ही नूर से पैदा किए गए हैं।"[4]

18- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, "ऐ अली[अ०]! तुम बरतरीन इन्सानों में सबसे बुलंद हो और इसमें सिर्फ़ काफ़िर ही शक कर सकता है।"[5]

19- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, "जो शख़्स भी हम अहलेबैत[अ०] को दोस्त रखेगा ख़ुदा उसको क़यामत के दिन महफ़ूज़ महशूर फ़रमाएगा।"[6]

20- पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, "तुम (अली[अ०]) मुझ से हो और मैं तुम से हूँ।"[7]

21- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, "ऐ अली[अ०]! तुम मेरा क़र्ज़ अदा करोगे और तुम ही मेरी उम्मत पर मेरे जानशीन हो।"[8]

22- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने हज़रत अली[अ०] का हाथ पकड़ कर फ़रमाया, "झूठा है वह जो यह सोचता है कि मुझ से

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५८, हदीसः २१६
2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५८, हदीसः २१५
3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५८, हदीसः २१७
4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५६, हदीसः २१६
5 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५६, हदीसः २२५
6 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५६, हदीसः २२०
7 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५६, हदीसः २३१
8 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६०, हदीसः २२६

मोहब्बत करता है, लेकिन इस (अली अ०) से मोहब्बत नहीं करता।''[1]

23- पैग़म्बरे अकरम स० से रिवायत करते हैं कि आप अ० ने हज़रत अली अ० से फ़रमाया, ''अंसार में से कोई तुम से दुश्मनी नहीं रखेगा मगर वह शख़्स जिसकी असल यहूदी है।''[2]

24- रसूले अकरम स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने फ़रमाया, ''सबसे पहली चीज़ जो बंदे से पूछी जाएगी, वह अहलेबैत अ० की मोहब्बत है।''[3]

25- रसूले ख़ुदा स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने फ़रमाया, ''अली अ० से मोहब्बत न करेगा मगर मोमिन और उन से दुश्मनी नहीं रखेगा मगर काफ़िर।''[4]

26- पैग़म्बरे अकरम स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने हज़रत अली अ० से फ़रमाया, ''तेरे दोस्त मेरे दोस्त और तेरे दुश्मन मेरे दुश्मन हैं।''[5]

27- पैग़म्बरे अकरम स० से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''मैं इल्म का शहर हूँ और अली अ० उसका दरवाज़ा हैं।''[6]

28- रसूले मुकर्रम स० से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''मस्जिद (नबवी स०) में खुलने वाले (सब लोगों के घरों के) दरवाज़े बंद कर दो, सिवाए अली अ० के दरवाज़े के।''[7]

29- रसूले अकरम स० से रिवायत करते हैं कि आप स० ने हज़रत अली अ० से फ़रमाया, ''जब मैं दुनिया से रेहलत कर जाऊँगा, तो तुम पर कुछ लोगों के दिलों में छुपा हुआ बुग्ज़ व कीना ज़ाहिर होगा और वह लोग तुम्हारे ख़िलाफ़ इकटठे होंगे और तुम से तुम्हारा हक़ छीन लेंगे।''[8]

30- रसूले ख़ुदा स० से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''अली अ० का हाथ (लेन-देन और मामलात में) मेरा हाथ है।''[9]

31- पैग़म्बरे गिरामी स० से रिवायत नक़ल करते हैं कि आप अ० ने अली अ० से फ़रमाया, ''मेरी उम्मत जल्दी ही मेरे बाद तुम्हारे साथ मक्कारी करेगी और अच्छे बुरे सब लोग इस मसले में पैरवी करेंगे।''[10]

---

[1] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६०, हदीसः २३१
[2] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६०, हदीसः २३४
[3] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६२, हदीसः २५८
[4] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६३, हदीसः २६६
[5] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६३, हदीसः २६५
[6] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६६, हदीसः २६८
[7] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०२
[8] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०३
[9] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०४
[10] उयूनु अख़्बारिर रज़ा अ०, जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०७

32- पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''जो कोई अली[अ०] को बुरा-भला कहे, उस ने मुझे बुरा-भला कहा और जिसने मुझे बुरा-भला कहा, उसने ख़ुदावंदे आलम को बुरा-भला कहा।''[1]

33- पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''जन्नत का ख़ज़ाना मेरे और मेरे ख़ानदान वालों के लिए है।''[2]

34- रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''मैं इल्म का ख़ज़ाना हूँ और अली[अ०] उसकी चाबी हैं, जो ख़ज़ाने तक पहुँचना चाहता हो, उसे चाबी के पास जाना चाहिए।''[3]

35- रसूले अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! मैंने अपने परवरदिगार से कोई चीज़ नहीं माँगी, मगर यह कि तुम्हारे लिए भी वैसी ही चीज़ चाही है, सिवाए इसके के मेरे बाद कोई पैग़म्बर नहीं है, मैं ख़ातमुल अम्बिया[स०] हूँ और तुम ख़ातमुल औसिया[अ०] हो।''[4]

36- रसूले मुकर्रम[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''ऐ अली[अ०]! लोग अलग-अलग दरख़्तों से पैदा हुए हैं, लेकिन मैं और तुम एक दरख़्त से पैदा हुए हैं, मैं उसकी जड़ हूँ और तुम उसका तना हो और हसन[अ०] व हुसैन[अ०] उसकी शाख़ें हैं और हमारे शिया उसके पत्ते हैं, जो कोई उसकी शाख़ पकड़ ले, ख़ुदावंदे आलम उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा।''[5]

37- पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया, ''जन्नत तेरी मुश्ताक़ है और अम्मार, सलमान, अबूज़र और मिक़दाद की मुश्ताक़ है।''[6]

38- पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने अली[अ०] से फ़रमाया, ''तुम्हारे अंदर हज़रत ईसा[अ०] की एक शबाहत है, वह यह कि नसारा उन से मोहब्बत करते थे और उनकी मोहब्बत में काफ़िर हो गए थे, जबकि यहूदी उन से दुश्मनी करते थे और उनके बुग्ज़ व दुश्मनी में काफ़िर हो गए थे।''[7]

39- पैग़म्बरे गिरामी[स०] से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''हसन[अ०] व हुसैन[अ०] मेरे और अपने वालिदे गिरामी के बाद ज़मीन पर बसने वाले सारे लोगों से बरतर हैं और उन दोनों की वालिदा तमाम ज़मीन पर रहने वाली

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०८
2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३१४
3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७३, हदीसः ३४१
4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७२, हदीसः ३३७
5 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७२, हदीसः ३४०
6 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६६, हदीसः ३०६
7 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६३, हदीसः २६३

सारी औरतों से अफ़ज़ल व बरतर हैं।"[1]

40- पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, "ऐ अली[अ०]! तुम और तुम्हारे दो बेटे (हसन[अ०] और हुसैन[अ०]) ख़ुदावंदे आलम की सारी मख़लूक़ात में उसके मुंतख़ब और बरगुज़ीदा बंदे हो।"[2]

[1] उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६२, पेजः २५२
[2] उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ५६, पेजः २१८

5- हज़रत रज़ा[अ०] और हज़रत फ़ातिमा[स०]

बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि हज़रत इमाम रज़ा[अ०] ख़ास तवज्जोह फ़रमाते थे कि अपनी वालिदा हज़रत फ़ातिमा[स०] का नाम, उनकी याद और फ़ज़ाएल लोगों के लिए बयान करें, हम इमाम रज़ा[अ०] से नक़ल कुछ रिवायतों का ज़िक्र करते हैं:-

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि हज़रत[स०] ने फ़रमाया, ''मेरी बेटी फ़ातिमा[स०] क़यामत के दिन इस हाल में महशूर होंगी कि उसके साथ ख़ून से रंगीन कपड़ें होंगे, वह अर्शे इलाही के एक पाए को पकड़ लेंगी और अर्ज़ करेंगीः ऐ फ़ैसला करने वाले! मेरे और मेरे बच्चों के क़ातिल के दरमियान फ़ैसला फ़रमा!''

पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, ''काबे के परवरदिगार की क़सम! ख़ुदावंदे आलम मेरी बेटी के हक़ में फ़ैसला करेगा और यक़ीनन ख़ुदावंद फ़ातिमा[स०] की नाराज़गी से नाराज़ और उसकी रज़ामंदी से राज़ी होता है।''[1]

एक दूसरी रिवायत में हज़रत इमाम रज़ा[अ०] पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और अर्ज़ कीः ऐ मोहम्मद[स०]! ख़ुदावंदे आलम आप[स०] पर दुरूद व सलाम भेजता है और फ़रमाता हैः मैंने फ़ातिमा[स०] की अली[अ०] के साथ शादी कर दी है और तूबा दरख़्त को हुक्म दिया है कि वह दुर्र, याक़ूत और मरजान ज़ाहिर करे और आसमान वाले इस से ख़ुश हो गए हैं और जल्दी ही इन दोनों से जन्नत के जवानों के दो सरदार पैदा होंगे, जो बहिश्त वालों की ज़ीनत हैं और ख़ुशख़बरी हो आपको ऐ मोहम्मद[स०]! कि आप[स०] सारे शुरु वालों और सारे बाद में आने वालों से बरतर हैं।''[2]

इमाम रज़ा[अ०] रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत करते हैं कि आप[स०] ने फ़रमाया, ''जब क़यामत का दिन होगा, तो पुकारने वाला यह निदा देगा, ऐ लोगो! अपनी आँखें बंद कर लो, ताकि मोहम्मद[स०] की बेटी जनाबे फ़ातिमा[स०] गुज़र जाएं।''[3]

हज़रत रज़ा[अ०] अपने नाना रसूले ख़ुदा[स०] से रिवायत नक़ल करते हैं कि फ़रमाया, ''मैंने फ़ातिमा[स०] की (अली[अ०] के साथ) शादी नहीं की, मगर ख़ुदावंदे

---

1 उयून अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २५

2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २६

3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ३१, हदीसः ५५

आलम के हुक्म के मुताबिक़, जो उनकी शादी के लिए मुझे दिया गया।''[1]

पैग़म्बरे ख़ुदा(स) से रिवायत करते हैं कि आप(स) ने फ़रमाया, ''यक़ीनन फ़ातिमा(स) बा-इफ़्फ़त ख़ातून हैं और ख़ुदावंदे आलम ने उनकी औलाद पर जहन्नम की आग को हराम कर दिया है।[2]

हज़रत इमाम रज़ा(अ) अमीरुलमोमिनीन अली(अ) से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''पैग़म्बरे ख़ुदा(स) ने मुझ से फ़रमायाः ऐ अली(अ)! क़ुरैश के कुछ लोगों ने फ़ातिमा(स) के सिलसिले में मुझ से सवाल किया और कहाः हम ने उनका रिश्ता माँगा तो आप(स) ने हमें महरूम कर दिया और अली(अ) से उसकी शादी कर दी। मैंने उनको जवाब दियाः ख़ुदा की क़सम! मैंने तुम लोगों को महरूम नहीं किया और न ही अली(अ) से उसकी शादी की है, बल्कि ख़ुदा ने तुम्हें महरूम किया है और अली(अ) से उसकी शादी की है! जिब्रईल नाज़िल हुए और अर्ज़ कीः ऐ मोहम्मद(स)! ख़ुदावंदे आलम ने फ़रमाया हैः ''अगर मैं अली(अ) को ख़ल्क़ न करता, तो पूरी ज़मीन पर आदम(स) से लेकर दूसरों तक कोई भी तुम्हारी बेटी फ़ातिमा(स) के लिए कुफ़ु (हमसर) न होता।''[3]

इमाम रज़ा(अ) पैग़म्बरे ख़ुदा(स) से रिवायत करते हैं कि फ़रमाया, ''मैंने अपनी बेटी का नाम 'फ़ातिमा'(स) रखा है, क्योंकि ख़ुदावंदे आलम ने उसको और उसके मुहिब्बों को जहन्नम से दूर कर दिया है।''[4]

हज़रत रज़ा(अ) रसूले ख़ुदा(स) से रिवायत नक़ल करते हैं कि आप(स) ने फ़रमाया, ''बेशक ख़ुदा फ़ातिमा(स) की नाराज़गी से नाराज़ और उनकी रज़ामंदी से राज़ी होता है।''[5]

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा(अ), जि०: २, पेजः ५९, हदीसः २२६
2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा(अ), जि०: २, पेजः ६३, हदीसः २६४
3 उयूनु अख़्बारिर रज़ा(अ), जि०: १, पेजः १७७, हदीसः ३
4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा(अ), जि०: २, पेजः ४६, हदीसः १७८
5 उयूनु अख़्बारिर रज़ा(अ), जि०: २, पेजः ४६, हदीसः १७६

6- हज़रत रज़ा[अ०] और इमाम हुसैन[अ०]

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] से सैय्यदुश्शोहदा, इमाम हुसैन[अ०] पर रोने और आप[अ०] की ज़ियारत के बारे में बहुत सी रिवायतें नक़ल हुई हैं, जो आप[अ०] की अपने दादा के लिए ख़ास तवज्जोह को ज़ाहिर करती हैंः

कभी-कभी इमाम रज़ा[अ०] पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से नक़ल फ़रमाते थे, ''हुसैन बिन अली[अ०] का क़ातिल आग के एक ताबूत में है और उस पर तमाम अहले दुनिया के अज़ाब का आधा अज़ाब है।''[1]

हज़रत रज़ा[अ०] ने पैग़म्बरे अकरम[स०] से रिवायत की कि ''(मेरे) हुसैन[अ०] को बदतरीन उम्मत क़त्ल करेगी...''[2]

एक और हदीस में ''अब्दुस्सलाम बिन सालेह'' हज़रत इमाम रज़ा[अ०] से अर्ज़ करता हैः एक हदीस में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया, ''जब (हमारे) क़ाएम[अ०] ख़ुरूज करेंगे, तो इमाम हुसैन[अ०] के क़ातिलों की औलाद को उनके आबाओ अजदाद के कामों की वजह से क़त्ल करेंगे।'' आप[अ०] इस बारे में क्या फ़रमाते हैं? इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः ''यह हदीस सही है!'' उसने अर्ज़ कियाः पस ख़ुदावंदे आलम जो फ़रमाता है,

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ

''कोई भी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाएगा।''[3] इस बात का क्या मतलब है? हज़रत ने फ़रमाया, ''ख़ुदावंदे आलम ने सब बातों में सही फ़रमाया है, लेकिन इमाम हुसैन के क़ातिलों की औलाद अपने आबाओ अजदाद के काम पर राज़ी हैं और उस पर फ़ख़्र करते हैं और जो कोई किसी काम पर राज़ी हो, वह उसी की तरह है जिसने वह काम अंजाम दिया हो, अगर कोई शख़्स मशिरक़ में मारा जाए और दूसरा मग़रिब की सरज़मीन में उस पर राज़ी हो, तो ख़ुदावंदे आलम के नज़दीक वह क़ातिल का शरीक है...[4]

---

1 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २१, हदीसः ५०

2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ६४, हदीसः २७७

3 सूरए इन्आम आयतः १६४

4 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०], जि०: १, पेजः २१२, हदीसः ५

(i) हज़रत रज़ा[अ०] और ज़ियारते हुसैन[अ०]

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] लोगों को सैय्यदुश्शोहदा[अ०] की ज़ियारत, उन पर रोने और उनकी तरफ़ ख़ास तवज्जोह की दावत देने के लिए ख़ुसूसी एहतेमाम फ़रमाते थे, उसके चंद नमूने पेश करते हैंः-

इमाम रज़ा[अ०] इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया, ''वह वक़्त जो ज़ाएरीन, इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत में गुज़ारते हैं, वह उनकी उम्र से हिसाब नहीं होता।''[१]

हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''जो शख़्स भी हुसैन बिन अली[अ०] की उनके हक़ को पहचानते हुए ज़ियारत करेगा, वह उनमें से है कि जो ख़ुदावंदे आलम से अर्श पर हम कलाम होते हैं।'' और फिर हज़रत[अ०] ने इस आयते शरीफ़ा की तिलावत फ़रमाईः

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ

तर्जुमाः बेशक तक़्वे वाले बाग़ों और नहरों के बीच होंगे, उसके पाकीज़ा मक़ाम पर जो इक़्तेदार वाले बादशाह की बारगाह में है।''[२]

कभी आप[अ०] फ़रमाते थे, ''जो कोई क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] की फ़ुरात के किनारे ज़ियारत करेगा, वह उस शख़्स की तरह है, जिसने ख़ुदा की उसके अर्श के ऊपर ज़ियारत की हो।''[३]

कभी आप[अ०] फ़रमाते थे, ''जो क़ब्रे इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत करे, उसने (गोया) हज व उमरा किया।'' रावी ने अर्ज़ कियाः क्या हज उस से साक़ित हो जाएगा? हज़रत[अ०] ने फ़रमाया, ''नहीं! ज़ियारते इमामे हुसैन[अ०] कमज़ोर व नातवाँ शख़्स का हज है, जब ताक़त व इस्तेताअत हासिल हो जाए, तो हज को जाए। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि ख़ुदा के घर का हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते तवाफ़ करते हैं और जब रात हो जाती है तो वह चले जाते हैं और दूसरा गिरोह सुबह तक के लिए आ जाता है, यक़ीनन इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र ख़ुदावंदे आलम के नज़दीक ख़ान-ए-ख़ुदा से ज़्यादा क़ाबिले एहतेराम है, इसलिए हर नमाज़ के वक़्त सत्तर हज़ार फ़रिश्ते, बिखरे हुए ग़ुबार आलूद बालों के साथ उस पर नाज़िल होते हैं, इस तरह कि फिर क़यामत तक

1 कामिलुज़्ज़ियारात, बाब-५४, हदीस-६
2 सूरए क़मर, आयतः ५४-५५
3 कामिलुज़ ज़ियारात, बाब-५६, हदीस-२

उनकी नौबत नहीं आती है।''[1]

इसी तरह आप फ़रमाते हैं, ''जो कोई अरफ़े के दिन क़ब्रे इमामे हुसैन[अ०] के नज़दीक हो, तो ख़ुदावंद उसको मुतमइन और सुकून वाले दिल के साथ लौटाता है।''[2]-[3]

---

1 कामिलुज़ ज़ियारात, बाब-६५, हदीस-६

2 या उसके दिल को सुकून दे देता है

3 कामिलुज़.ज़ियारात, बाब-७०, हदीस-२

(ii) इमाम रज़ा[अ०] और सैय्यदुश्शोहदा की क़ब्र

एक शख़्स कहता है, हज़रत इमाम रज़ा[अ०] ने ख़ुरासान से मेरे लिए कपड़ों का एक पैकेट भेजा, जिसके बीच में कुछ ख़ाक भी थी, मैंने हज़रत[अ०] की तरफ़ से आने वाले से पूछाः ''यह क्या है?'' उसने जवाब दियाः ''यह इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र की मिट्टी है'', हज़रत रज़ा[अ०] कोई लिबास या दूसरी चीज़ को तोहफ़े के तौर पर नहीं भेजते मगर यह कि उसके दरमियान यह ख़ाक ज़रूर रखते हैं और फ़रमाते हैं, ''यह ख़ाक ख़ुदावंद की इजाज़त से (हर मुसीबत से) अमान है।''[1]

एक और रिवायत के मुताबिक़ जब किसी शख़्स ने सैय्यदुश्शोहदा[अ०] के सरहाने से सुर्ख़ रंग की मिट्टी उठाई और हज़रत रज़ा[अ०] की ख़िदमत में लाया तो हज़रत[अ०] ने उसको अपने हाथों में लेकर सूँघा और फिर इस क़दर गिरया फ़रमाया कि अश्क आप[अ०] के रुख़सारों पर जारी हो गए और फ़रमाया, ''यह मेरे जद की क़ब्र की मिट्टी है।''[2]

---

1 कामिलुज़ ज़ियारात, बाब-६२, हदीस-१

2 कामिलुज़ ज़ियारात, बाब-६३, हदीस-११

(iii) इमाम रज़ा[अ०] और अज़ादारी की अहमियत

'हसन बिन फ़ज़्ज़ाल' कहता हैः हज़रत रज़ा[अ०] ने फ़रमाया, ''जो कोई हमारे मसाएब को याद करे और जो कुछ हम पर गुज़रा है, उस पर गिरया करे, तो वह क़यामत के दिन हमारे दरजे में हमारे साथ होगा और जो कोई उसे हमारे मसाएब याद दिलाएगा और ख़ुद रोए और रुलाए, तो उसकी आँखें उस दिन न रोएंगी जब दूसरी आँखें रो रही होंगी और जो कोई ऐसी मजलिस में शरीक हो कि जिसमें हमारा अम्र ज़िंदा हो तो उसका दिल उस दिन मुर्दा न होगा जब सब लोगों के दिल मुर्दा हो जाएंगे।''[1]

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४४, पेजः २७८ (नक़्ल अज अमाली शेख़ सदूक़[रह०] व उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०])

(iv) सैय्यदुश्शोहदा इमाम हुसैन[अ०] के मसाएब पर आँसू बहाना

इमाम रज़ा[अ०] फ़रमाते हैं, ''मोहर्रम वह महीना है जिसमें जाहिलियत के ज़माने में भी जंग को हराम समझा जाता था, लेकिन हमारे ख़ून बहाने को इस महीने में हलाल क़रार दिया गया और हमारी तौहीन की गई, हमारी औरतें और बच्चे क़ैदी बनाए गए, हमारे ख़ेमे जलाए गए और जो कुछ तबर्रुकात थे लूट लिए गए और हमारे पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] से रिश्ते का भी कोई एहतेराम नहीं रखा गया।''

اِنَّ یَومَ الحُسَینِ اَقرَحَ جُفُونَنَا وَ اَسبَلَ دُمُوعَنَا
وَ اَذَلَّ عَزِیزَنَا

''यक़ीनन इमाम हुसैन[अ०] की मुसीबत और शहादत वाले दिन ने हमारी पलकों को (ज़्यादा रोने की वजह से) ज़ख़्मी कर दिया, हमारे अश्कों को जारी कर दिया, हमारे अज़ीज़ों को (अजनबी जगह और नामहरमों के मजमे में) रुसवा कर दिया और हमारे लिए क़यामत तक ग़म व मुसीबत का इन्तिज़ाम कर दिया है।''

فَعَلَی مِثلِ الحُسَینِ فَلیَبکِ البَاکُونِ فَاِنَّ البُکَاءَ عَلَیهِ یَحُطّ الذُّنُوبَ العِظَامَ

''पस ऐसे मज़लूम हुसैन[अ०] पर रोने वालों को रोना ही चाहिए, यक़ीनन उन पर गिरया व ज़ारी करना बड़े-बड़े गुनाहों को ख़त्म कर देता है।''

''जब मोहर्रम का महीना शुरु हो जाता, तो कोई इमाम रज़ा[अ०] को मुस्कुराते नहीं देख सकता था, बल्कि ग़मो अंदोह आप पर ग़ालिब होता, यहाँ तक कि आशूरा का दिन गुज़र जाता, आशूरा का दिन, आप[अ०] के लिए इंतेहाई गिरया और ग़म व मुसीबत का दिन होता था।'' और आप[अ०] फ़रमाते थे, ''यह वह दिन है जिस दिन इमाम हुसैन[अ०] को क़त्ल किया गया।''[1]

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४४, पेज: २८३ (नक़ल अज अमाली शेख़ सदूक़[र०] मजलिस-२७)

(v) इमाम हुसैन[अ०] पर रोना

रय्यान बिन शबीब कहता हैः मैं पहली मोहर्रम को हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की ख़िदमत में पहुँचा तो आप[अ०] ने फ़रमाया, ''ऐ शबीब के बेटे! क्या रोज़े से हो?'' मैंने अर्ज़ कियाः नहीं! आप[अ०] ने फ़रमाया, ''आज वह दिन है, जिस दिन हज़रत ज़करिया[अ०] ने दुआ की।''

फिर फ़रमाया, ''ऐ शबीब के बेटे! मोहर्रम वही महीना है जिसमें जाहिलियत वाले इस महीने की हुरमत का ख़याल रखते थे और इसमें जंग व जिदाल और ज़ुल्म व सितम को हराम समझते थे, लेकिन इस उम्मत ने न तो इस महीने की हुरमत को पहचाना और न ही अपने पैग़म्बर[स०] की हुरमत को, इस महीने में पैग़म्बर[स०] की औलाद को क़त्ल किया गया और उनकी औरतें क़ैदी बनाई गईं और उनके सारे सामान व तबर्रुकात लूट लिए गए, खुदावंदे आलम इन लोगों की बख़शिश न फ़रमाए।''

يَابنَ الشَّبِيب اِن كُنتَ بَاكِيًا لِشَيءٍ فَابكِ لِلحُسَينِ
بنِ عَلِي بنِ اَبِي طَالِبٍ فَاِنَّه ذُبِحَ كَمَا يُذبَحُ الكَبشُ

''ऐ शबीब के बेटे! अगर तुम किसी पर गिरया करना चाहते हो तो हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब[अ०] पर गिरया व ज़ारी करो, क्योंकि उन्हें भेड़ की तरह ज़िबह किया गया, उनके साथ उनके ख़ानदान के अटठारह मर्दों को शहीद किया गया, जिनकी पूरी दुनिया में कोई मिसाल नहीं थी, सारे आसमानों और सातों ज़मीनों ने उनके क़त्ल पर गिरया किया, चार हज़ार फ़रिश्ते उनकी मदद के लिए नाज़िल हुए और जब आँहज़रत[अ०] को क़त्ल हुआ पाया, तो (वहीं ठहर गए और) उनकी क़ब्रे मुतह्हर के पास बाल फैलाए, गुबार आलूद हज़रत क़ाएम[अ०] के क़याम तक रहेंगे और उनकी नुसरत करेंगे और उनका नारा ''يَا لِثَارَاتِ الحُسَين'' (इमाम हुसैन[अ०] के ख़ूँख़्वाह व बदला लेने वाले) है।''

''ऐ शबीब के बेटे! अगर तुम्हें इस बात से ख़ुशी होती है कि ख़ुदावंदे आलम से बग़ैर किसी गुनाह के मुलाक़ात करो, तो इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत करो। ऐ शबीब के बेटे! अगर तुम्हें यह बात अच्छी लगती है जन्नत में बनाए गए महलों में पैग़म्बरे अकरम[स०] के साथ रहो, तो इमाम हुसैन[अ०] के क़ातिलों पर लानत करो।''

''ऐ शबीब के बेटे! अगर तुम्हें यह अच्छा लगता है कि इमाम हुसैन[अ०] के साथ शहीद होने वालों का सवाब हासिल करो तो जब भी इमाम हुसैन[अ०] को याद करो तो कहोः ऐ काश! मैं भी उनके साथ होता तो मैं भी अभी कामयाबी हासिल कर

लेता।"

"ऐ शबीब के बेटे! अगर तुम्हें यह बात पसंद है कि हमारे साथ जन्नत के बुलंद व बाला दरजात में रहो, तो हमारे ग़म में ग़मगीन और हमारी ख़ुशी में ख़ुशहाल हो जाओ और तुम विलायत के साथ रहो, क्योंकि अगर कोई शख़्स किसी पत्थर को भी दोस्त रखता हो (या उस पत्थर को अपना वली बना ले) तो ख़ुदावंदे आलम क़यामत के दिन उस शख़्स को उसी पत्थर के साथ महशूर फ़रमाएगा।"[1]

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४४, पेजः २८६ (नक़ल अज अमाली शेख़ सदूक़[रह०] व उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ०])

इमाम रज़ा[अ०] की दौराने इमामत की अहम मुश्किलात

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] की इमामत 183[हि०] से उनके वालिदे बुज़ुर्गवार इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत के बाद से शुरु हुई और 203[हि०] तक, यानी बीस साल तक जारी रही।

इस इमामत के ज़माने में, हज़रत रज़ा[अ०] को बहुत सारी मुश्किलात का सामना करना पड़ा, उनकी इमामत के शुरु में बड़ी सख़्त मुश्किल ''वाक़फ़िया'' फ़िरक़े की तरफ़ से पेश आई, जिसने काफ़ी अरसे तक शिया समाज को अपने साथ मसरूफ़ रखा।

पहली मुश्किल:

वाक़फ़िया फ़िरक़ा और इमाम रज़ा[अ०] का इस फ़िरक़े के साथ मुक़ाबला

वाक़फ़िया फ़िरक़ा और उसकी पैदाइश का सबब

इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत के बाद, उस सख़्त ज़माने में जब हुकूमते वक़्त ने समाज के पेश्वा और राहनुमा को शहीद कर दिया था और शिया समाज बड़ी बेचैनी का शिकार था, अचानक अल्लाह का एक और बड़ा सख़्त इम्तेहान पैदा हो गया और वह वाक़फ़िया ग्रुप का शक और शुब्हा पैदा करना था कि जो बहुत से शियों की गुमराही, धड़े-बंदी और कमज़ोरी की वजह बना। इस शक और शुब्हे की दुश्वारी और फैलाव इसलिए ज़्यादा था कि इस जाली और अपने बनाए हुए फ़िरक़े के बानी, इमाम मूसा काज़िम[अ०] के वकील और शिया समाज के जाने-पहचाने लोग थे, जिस वक़्त इमाम मूसा काज़िम[अ०] हारून अब्बासी के ज़िंदान में क़ैद थे, तो लोग इन वकीलों की तरफ़ रुजू करते थे और इमाम[अ०] का बहुत सा माल उन लोगों के पास जमा हो गया था। इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत के बाद, इस जमा माल पर क़ब्ज़ा करने के लिए, इन लोगों ने दावा किया कि इमाम काज़िम[अ०] शहीद नहीं हुए, बल्कि ज़िंदा हैं और वह वही इमाम क़ाएम[अ०] हैं, जो एक मुद्दत के बाद क़्याम फ़रमाएंगे।

शेख़ तूसी फ़रमाते हैं: इस वाक़फ़िया मज़हब को फैलाने वाले सबसे पहले तीन लोग, अली बिन हमज़ा बताएनी, ज़ियाद बिन मरवान क़ंदी और उसमान बिन ईसा नाम के थे, उन्होंने दुनिया की दौलत की ख़ातिर यह काम अंजाम दिया और हमज़ा बिन बज़ीअ, इब्नुल मकारी और करॉम ख़स्अमी जैसे दूसरे लोगों को भी माल से ख़रीदा और उनको अपना मुवाफ़िक़ व हम ख़याल बना लिया।[1]

'यूनुस बिन अब्दुर्रहमान' कहता है: जब इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत हुई तो उनके हर एक नुमाइंदे के पास बहुत ज़्यादा माल जमा था, ज़ियाद बिन मरवान के पास सत्तर हज़ार दीनार और अली बिन हमज़ा के पास तीस

---

[1] अल-ग़ैबत, पेज: ४२

हज़ार दीनार थे और यही चीज़ उनके वक़्फ़ और हज़रत काज़िम[अ०] की शहादत से इनकार की वजह बनी, जब मैंने हक़ को पहचान लिया और लोगों को इमाम रज़ा[अ०] (की इमामत) की तरफ़ दावत देता था, तो उन दोनों (अली बिन हमज़ा और ज़ियाद बिन मरवान) ने मुझ पर एतेराज़ किया और कहाः अगर तुम माल के लिए यह सब कुछ कर रहे हो तो हम तुम्हें बेनियाज़ कर देंगे और मुझे दस हज़ार दीनार की पेशकश की, ताकि मैं ख़ामोश रहूँ, लेकिन मैंने उन से कहाः इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०] और इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से रिवायत है कि जब बिदअतें ज़ाहिर होने लगें तो उलमा और दानिश्वरों की ज़िम्मेदारी है कि अपने इल्म व दानिश को ज़ाहिर करें, वरना उन से ईमान ले लिया जाएगा और मैं ख़ुदा की राह में जिहाद का रास्ता किसी भी सूरत में नहीं छोड़ूँगा, इसी वजह से वह दोनों मेरे दुश्मन हो गए।[1]

[1] अल-ग़ैबत, पेजः ४३

बहुत से शियों को वाक़फ़िया के बहकावों की वजह से गुमराह हो जाना

वाक़फ़ियों का बहकावा ऊपर ज़िक्र की हुई बातों की वजह से शुरु में बहुत फैल गया था और इसने बड़ी तादाद में शियों को गुमराह कर दिया था, इसीलिए हज़रत इमाम रज़ा[अ०] को इमामत की शुरुआत में बहुत ज़्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ा, लेकिन काफ़ी कोशिशों और अपने बावफ़ा अस्हाब की मदद से आप[अ०] ने इस फ़ितने को आहिस्ता-आहिस्ता महार कर लिया और वाक़फ़िया फ़िरक़ा ज़लील व रुसवा हो गया। उनमें से बहतु से बुज़ुर्ग नाम व मक़ाम वाले जैसे अब्दुर्रहमान बिन हज्जाज, रिफ़ाआ बिन मूसा, यूनुस बिन याकूब, जीमल बिन दुर्राज, हम्माद बिन ईसा, अहमद बिन मोहम्मद बिन अबी नस्र और हसन बिन अली वश्शा व... हज़रात ने अपनी ग़लती का एहसास कर लिया और हक़ की तरफ़ लौट आए।

'अहमद बिन मोहम्मद' कहता हैः हज़रत इमाम रज़ा[अ०] ने बुलंद आवाज़ से मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अहमद!'' मैंने अर्ज़ कियाः जी फ़रमाएं! आप[अ०] ने फ़रमाया, ''जब रसूले ख़ुदा[स०] ने रेहलत फ़रमाई तो लोगों ने ख़ुदा के नूर को गुल करने के लिए कोशिशें कीं, लेकिन ख़ुदा नहीं चाहता था, इसलिए उसने अपने नूर को हज़रत अमीरुलमोमिनीन[अ०] के ज़रिए कामिल किया और जब हज़रत अबुल हसन (इमाम मूसा काज़िम[अ०]) ने दुनिया से रेहलत फरमाई, तो अली बिन हमज़ा और उसके साथियों ने ख़ुदा के नूर को गुल करने की कोशिश की, लेकिन ख़ुदावंदे आलम ने इरादा फ़रमाया कि अपने नूर को कामिल करे, यक़ीनन हक़ वाला जब कोई उनके साथ आ जाए तो ख़ुश्हाल होते हैं, लेकिन अगर कोई उन से जुदा हो तो बेचैनी और इज़्तेराब नहीं दिखाते, क्योंकि उनको अपने काम का यक़ीन होता है। जबकि बातिल वाले जब कोई उनके साथ मिल जाए तो ख़ुश होते हैं, लेकिन अगर कोई उन से अलग हो तो बेताबी और बेचैनी का मुज़ाहरा करते हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम में शक व तरद्दुद होता है। ख़ुदा (जो बड़ी अज़मत और बुज़ुर्गी वाला है) फ़रमाता हैः فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ ''कुछ साबित क़दम और डावां-डोल'' हैं।[1] और हज़रत अबूअब्दुल्लाह इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते थे, पाएदार व साबित क़दम वह है, जो (एतेक़ाद में) साबित है और नापाएदार व डावाँडोल

---

[1] सूरए अन्आम, पेजः ६८

वह है जिसे (ईमान व एतेक़ाद) आरिया के तौर पर दिया गया है।[1] यानी इमाम मूसा काज़िम[अ०] के कुछ अस्हाब की गुमराही की वजह से डावाँडोल नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनका ईमान तो आरिया के तौर पर था।

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४८, पे०: २६१

इमाम रज़ा[अ०] के वाक़फ़िया फ़िरक़े के मुक़ाबले में इक़दामात

हज़रत इमाम रज़ा[अ०] ने इस बहकावे को दूर करने और इस गुमराह व ख़तरनाक फ़िरक़े का मुक़ाबला करने के लिए बड़े पैमाने पर कोशिशें कीं, कभी आप[अ०] इस गिरोह के एक्टिव लोगों और हामियों से बहस व मुनाज़रा करते और कुछ लोगों को करामात दिखाकर हिदायत फ़रमाते और कभी आप[अ०] उनके राज़ फ़ाश करके उनकी ख़यानत और झूठ को ज़ाहिर फ़रमाते थे, कभी शियों को उनके साथ उठने-बैठने से मना फ़रमाते और कभी बड़ी सख़्ती के साथ उन पर लान-तान करते और उनकी मज़म्मत फ़रमाते थे।

इमाम रज़ा[अ०] की वाक़फ़िया फ़िरके वालों से बातचीत

रिवायत में आया है कि वाक़फ़िया फ़िरक़े के अली बिन अबी हमज़ा, अहमद बिन सर्राज और हुसैन बिन हाशिम उर्फ़ इब्नुल मकारी नाम के तीन आदमी इमाम रज़ा के पास आए।

अली बिन हमज़ा ने इमाम से पूछा कि आपके वालिद कहाँ गए?

इमाम ने फ़रमाया कि दुनिया से चले गए।

उसने पूछा कि शहीद होकर?

इमाम ने कहा, हाँ।

फिर उसने पूछा कि वसीय्यत किसके नाम की है?

इमाम ने कहा कि मेरे नाम।

इतना सुनकर उसने कहा कि इसका मतलब यह है कि ख़ुदा की तरफ़ से जिस इमाम की इताअत वाजिब है वह आप ही हैं?

इमाम ने फ़रमाया कि हाँ।

इधर दूसरे दो आदमियों ने कहा कि ख़ुदा ने आपको ताक़त और क़ुदरत दी है। इमाम ने फ़रमाया कि वाए हो तुम पर! कौन सी क़ुदरत? क्या तुम चाहते हो कि मैं बग़दाद जाऊँ और हारून से कहूँ कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से भेजा गया इमाम हूँ। ख़ुदा की क़सम ऐसा करना मेरी ज़िम्मेदारी नहीं है। जो कुछ मैंने अभी तुम से कहा है उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि मुझे ख़बर मिली है कि तुम लोग इख़्तेलाफ़ का शिकार हो गए हो। इसलिए मैं चाह रहा था कि तुम्हें दुश्मनों के हत्थे चढ़ने से बचा लूँ।

अली बिन हमज़ा ने कहा कि आप ने ऐसी बात ज़ाहिर की है जो आप से पहले आपके बुज़ुर्गों में से किसी ने नहीं की थी। इमाम ने फ़रमाया कि नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है। ख़ुदा की क़सम! रसूले ख़ुदा ने भी ऐसा ही किया था। ख़ुदा ने जब अपने आख़िरी रसूल[स०] से कहा था कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को बुलाकर उन्हें इस्लाम की दावत दीजिए तो रसूल[स०] ने अपने ख़ानदान के चालीस लोगों की दावत की थी और उन से कहा था, ''मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुदा का भेजा हुआ रसूल हूँ।'' जिस आदमी ने सबसे ज़्यादा रसूल[स०] की बात को अनसुना किया और उनकी तौहीन की वह उनका चचा अबू लहब था। रसूल[स०] ने उन लोगों से कहा कि अगर अबू लहब मुझे एक खरोंच भी लगा दे तो मैं ख़ुदा का भेजा हुआ नहीं हूँ और यही मेरी रिसालत की पहली निशानी है जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ।

इसके बाद इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि आज मैं भी तुम से यही कह रहा हूँ कि अगर हारून रशीद मुझे एक खरोंच भी लगा दे तो मैं इमाम नहीं हूँ और यह मेरी इमामत की पहली निशानी है जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ।

अली बिन हमज़ा ने कहा कि रिवायत में आया है कि इमाम के कामों (गुस्ल, कफ़न, नमाज़े जनाज़ा और दफ़न) को इमाम के अलावा और कोई नहीं कर सकता (यानी अगर आप इमाम थे तो इमाम मूसा काज़िम के गुस्ल व कफ़न और दफ़न वग़ैरा को आप ही को करना चाहिए था जबकि सच यह है कि उस वक़्त आप मदीने में थे और वह बग़दाद में।)

इमाम[अ०] ने पूछा कि इमाम हुसैन[अ०] इमाम थे या नहीं?

उसने कहा कि हाँ।

उन्हें गुस्ल और कफ़न किसकी ज़िम्मेदारी थी?

इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] की।

इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] कहाँ थे? वह तो इब्ने ज़ियाद के हाथों गिरफ़्तार थे, फिर उन्होंने गुस्ल और कफ़न कैसे दिया?

इमाम ने फ़रमाया कि अगर इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] (क़ैद में होते हुए) करबला जा सकते हैं और अपने वालिद के गुस्ल, कफ़न और दफ़न का इन्तेज़ाम कर सकते हैं तो इमाम मूसा काज़िम[अ०] के गुस्ल, कफ़न और दफ़न का ज़िम्मेदार यानी इमाम रज़ा[अ०] भी मदीने से बग़दाद जाकर इन कामों को अंजाम दे सकते है और वापस जा सकते है जबकि वह तो क़ैद में भी नहीं है।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: २८, पेजः २६१, इख़्तियारुर्रिजाल, पेजः ४६३

वाक़फ़िया फ़िरक़े से दूर रहने का हुक्म

मोहम्मद बिन आसिम कहते हैं कि इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया कि मुझे ख़बर मिली है कि तुम वाक़फ़िया फ़िरक़े वालों के साथ उठते-बैठते हो। मैंने कहा कि आप पर क़ुरबान हो जाऊँ! मैं उनके साथ उठता-बैठता तो हूँ मगर उनका अक़ीदा अलग और मेरा अलग। इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि उनके साथ उठना-बैठना भी बंद कर दो! ख़ुदा फ़रमाता है कि क़ुरआन में तुम्हारे लिए बता दिया गया है कि जैसे ही तुम्हें पता चले कि वह ख़ुदा की निशानियों का इनकार करते हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं, उनके साथ उठना-बैठना बंद कर दो ताकि वह दूसरी बातों में लग जाएं वरना तुम भी उनकी तरह ही हो जाओगे। और यहाँ ख़ुदा की निशानियों से मुराद वह वसी और ख़ुदा के जानशीन हैं जिनका वाक़फ़िया इनकार करते हैं।[1]

यह या इस जैसी दूसरी हदीसें इमाम रज़ा[अ॰] के मानने वालों के लिए एक उसूल है कि उन लोगों के साथ उठने-बैठने से बचो जो दीन के मुख़ालिफ़ हैं। ऐसे लोगों के प्रोग्रामों में भी शिरकत न करो।

---

[1] बिहारुअनवार, जि०: २८, पेज: २६४

शियों की हिदायत के लिए इमाम रज़ा की कुछ करामतें

इब्ने उम्मी कसीर नामी एक आदमी कहता हैः इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत के बाद लोग वाक़फ़िया फ़िरक़े के क़ाएल हो गए थे। उस साल मैं हज करने गया और वहाँ अचानक मेरी नज़र इमाम रज़ा[अ०] पर पड़ गई। देखते ही मेरे दिल में क़ुरआन की यह आयत आ गई,

اَبَشَرًا مِنَّا وَاحِدًا نَتَّبِعُه

''क्या हम अपने ही में से एक शख़्स की पैरवी कर लें?''

इमाम रज़ा[अ०] बिजली की तेज़ी से मेरे पास आए और चूँकि मेरे दिल के हाल को जानते थे इसलिए फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! मैं ही वह इन्सान हूँ जिसकी पैरवी तुम्हें करनी चाहिए। मैंने कहा कि ख़ुदा और आप से माफ़ी चाहता हूँ। आपने फ़रमाया कि ठीक है तुम्हें बख़्श दिया गया है।[1]

एक दूसरी मिसाल यह है कि अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा कहते हैं, मैं वाक़फ़िया फ़िरक़े से था और हज करने गया था। ख़ाना काबा के किनारे खड़े होकर मैंने ख़ुदा से कहा कि ऐ ख़ुदा तुझे पता है कि मैं किसकी तलाश में हूँ। मेरी अपने बेहतरीन दीन की तरफ़ हिदायत फ़रमा! मैं यह दुआ कर ही रहा था कि मेरे दिल में आया कि इमाम रज़ा[अ०] के पास जाऊँ। हज के बाद मदीने आया और इमाम[अ०] के घर पहुँच कर ख़ादिम से कहा कि कह दो कि इराक़ से एक आदमी आया है। अचानक इमाम[अ०] की आवाज़ आई कि ऐ अब्दुल्लाह बिन मुग़ीरा अंदर आ जाओ! जैसे ही मैं अंदर गया इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली है और अपने दीन की तरफ़ तुम्हारी हिदायत कर दी है। मैंने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आप ही ख़ुदा की हुज्जत और लोगों पर उसके अमीन हैं।[2]

---

1 बिहारुअनवार, जि०: ४६, पेजः ३८

2 बिहारुअनवार, जि०: ४६, पेजः ३६

इमाम रज़ा[अ०] की ज़बानी वाकिफ़ फ़िरक़े के मानने वालों का अंजाम

इब्राहीम बिन यह्या कहते हैंः इमाम रज़ा[अ०] ने मुझ से फ़रमाया कि इस बदबख़्त हमज़ा बिन बज़ी ने क्या किया? मैंने कहा कि वह आ गया है। इमाम ने कहा कि वह समझता है कि मेरे वालिद ज़िंदा हैं। यह लोग आज शक में पड़ गए हैं और कल काफ़िरों के साथ हो जाएंगे।[1]

इमाम[अ०] ने वाक़फ़िया फ़िरक़े के एक मशहूर शख़्स इब्ने महरान को बुरा कहते हुए फ़रमाया, ख़ुदा तुम्हारे दिल के नूर को बुझा दे और तुम्हारे घर को ग़रीबी और फ़क़ीरी से भर दे।[2] साथ ही आप[अ०] ने वाक़फ़ियों के सरदार अली बिन अबी हमज़ा पर लानत की और उसे मुश्रिक व मलऊन कहा।

हुसैन बिन अली वश्शा जो पहले शक के शिकार थे लेकिन बाद में इमाम रज़ा[अ०] के एजाज़ से हक़ की तरफ़ आ गए थे, कहते हैं, ''मेरे आक़ा इमाम रज़ा[अ०] ने मुझे मर्व में बुलाया और फ़रमाया कि ऐ हसन! आज अली बिन हमज़ा कूफ़े में मर गया और उसको अभी-अभी दफ़न किया गया है। दो फ़रिश्ते उसके पास आए थे और उस से पूछा था कि तेरा ख़ुदा कौन है?

अल्लाह

तेरा रसूल कौन है?

मोहम्मद[स०]

तेरा वली कौन है?

अली बिन अबी तालिब।

उनके बाद?

हसन बिन अली।

उनके बाद?

हुसैन बिन अली।

उनके बाद?

अली बिन हुसैन।

उनके बाद?

मोहम्मद बिन अली।

उनके बाद?

---

1 बिहारुअनवार, जि०: ४८, पेजः २५६

2 बिहारुअनवार, जि०: ४८, पेजः २६१

जाफ़र बिन मोहम्मद।

उनके बाद?

मूसा बिन जाफ़र।

उनके बाद?

यहाँ आकर अली बिन हमज़ा की ज़बान लड़खड़ा गई। फ़रिश्तों ने दोबारा सख़्ती से उस से पूछा कि उनके बाद?

अब वह बिल्कुल ख़ामोश था।

फ़रिश्तों ने सवाल किया कि क्या इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने तुझे यही हुक्म दिया था? उसके बाद उसे आग के गुर्ज़ से इतनी ज़ोर से मारा कि क़यामत तक उसकी क़ब्र में आग लगी रहेगी।

हुसैन बिन अली वश्शा कहते हैंः इमाम[अ०] के पास से बाहर आया और उस दिन की तारीख़ याद कर ली। कुछ दिनों के बाद ही कूफ़े से एक ख़त आया कि अली बिन हमज़ा उसी दिन मरा था और उसे उसी वक़्त दफ़न किया गया था जिस वक़्त के लिए इमाम[अ०] ने कहा था।[1]

---

[1] बिहारुअनवार, जि०ः ४६, पेजः ३८

दूसरी मुश्किल:

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] की विलादत में देरी

इमाम रज़ा[अ०] के ज़माने में शियों का एक बहुत सख़्त इम्तेहान और दुश्मनों की इमाम[अ०] के साथ मुख़ालेफ़त के बहानों में से एक बहाना यह था कि इमाम रज़ा[अ०] के पहले बेटे की सूरत में इमाम मोहम्मद तक़ी की विलादत इमाम[अ०] की उम्र के आख़िरी दिनों में हुई थी जिस वक़्त आपकी उम्र चालीस साल से भी ज़्यादा थी यानी इमाम[अ०] की इमामत के दस साल गुज़र चुके थे जिसका आग़ाज़ आपकी उम्र के पैंतीसवें साल में हुआ था।

यह एक ऐसा फ़ैक्टर था जिसकी वजह से कुछ लोग इमाम रज़ा[अ०] पर ताने कसने लगे थे कि उनका कोई जानशीन नहीं है। इसीलिए इमाम रज़ा[अ०] बार-बार लोगों से यह बात कहते रहते थे कि ख़ुदा मुझे एक बेटा ज़रूर देगा।

कलीम बिन इमरान ने इमाम रज़ा[अ०] से कहा कि ख़ुदा से कहिए कि वह आपको एक बेटा अता कर दे! इमाम ने फ़रमाया कि मुझे एक बेटा मिलेगा जो मेरा वारिस होगा।[1]

इमाम[अ०] के एक सहाबी, बज़िंती से एक आदमी ने कहा कि अपने मालिक यानी इमाम रज़ा[अ०] से पूछकर बताओ कि उनके बाद इमाम कौन है? उन्होंने इमाम[अ०] के पास जाकर सवाल किया तो इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि मेरे बाद मेरा बेटा इमाम होगा। इसके बाद कहा कि जिसका बेटा ही न हो क्या वह कह सकता है कि मेरा बेटा मेरा इमाम होगा? और फिर एक वक़्त के बाद इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] की विलादत हुई।[2]

उक़बा बिन जाफ़र ने इमाम रज़ा[अ०] से कहा कि आपकी उम्र इतनी ज़्यादा हो गई है लेकिन अभी तक आपका कोई बेटा नहीं है। इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि इस अम्र का मालिक जब तक अपने जानशीन को न देख ले दुनिया से नहीं जाता यानी मैं उस वक़्त तक इस दुनिया से नहीं जाऊँगा जब तक अपने जानशीन को न देख लूँ।[3]

एक शख़्स ने इमाम से कहा कि क्या आपके बाद इमामत आपके चचाओं

---

1 बिहारुअनवार, जि०: ५०, पेज: १५

2 बिहारुअनवार, जि०: ४८, पेज: २१

3 बिहारुअनवार, जि०: ४८, पेज: ३५

या मामूओं में चली जाएगी? आप ने फ़रमाया कि नहीं। उसने फिर पूछा कि क्या भाईयों में जाएगी? इमाम ने कहा कि नहीं। उसके बाद उस ने पूछा कि आख़िर आपके बाद इमाम कौन होगा? (यानी आपका तो कोई बेटा ही नहीं है)। इमाम[अ०] ने कहा कि मेरा बेटा, जबकि उस वक़्त तक आपका कोई बेटा नहीं था।[1]

अकसर आप से इस बारे में सवाल किया जाता था और आप[अ०] हर बार यही कहते थे कि ख़ुदा मुझे एक बेटा अता करेगा।[2]

वाक़फ़िया फ़िरक़े के एक आलिम ने इमाम रज़ा[अ०] से सवाल किया कि क्या आप इमाम हैं? इमाम[अ०] ने कहा कि हाँ! उसने कहा कि ख़ुदा को गवाह बनाकर कहता हूँ कि आप इमाम नहीं हैं।

इमाम[अ०] काफ़ी देर तक ज़मीन की तरफ़ सर झुकाए देखते रहे और फिर सर ऊपर उठाकर पूछा कि तुम किस बुनियाद पर कह रहे हो कि मैं इमाम नहीं हूँ? उसने कहा कि इमाम सादिक़[अ०] से रिवायत है कि जिसका बेटा न हो वह इमाम नहीं हो सकता, जबकि आपकी इतनी उम्र हो गई है और अभी तक आपका कोई बेटा नहीं है।

इमाम रज़ा[अ०] ने दोबारा पहले से भी ज़्यादा देर तक अपना सर झुकाए रखा और फिर सर उठाकर कहा कि ख़ुदा को गवाह बनाकर कह रहा हूँ कि वह दिन दूर नहीं जब ख़ुदा मुझे एक बेटा अता करेगा।

रावी कहता है कि अभी एक साल भी नहीं गुज़रा था कि इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] की विलादत हो गई।[3]

इमाम तक़ी[अ०] की विलादत और इमाम रज़ा[अ०] की पेशीनगोई के सच साबित होने के बाद कि जो ख़ुद इमाम रज़ा[अ०] की इमामत पर दो दलीलें हैं, लोगों ने इब्ने क़्याफ़ा से कहा कि क्या यह दो निशानियाँ तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं हैं? उसने क़ुबूल किया और कहा कि हाँ! ख़ुदा की क़सम! यह उनकी इमामत की बहुत बड़ी निशानी है लेकिन एक हदीस को बहाना बना लिया और अपने अक़ीदे को नहीं छोड़ा।[4]

यही वजह है कि इमाम मोहम्मद तक़ी की विलादत शियों के लिए बहुत अहम थी। इसी वजह से इमाम रज़ा[अ०] ने उन्हें मुबारक बच्चा कहकर पुकारा था।

एक शख़्स यहया सन्आनी कहता है कि मैं मक्के में इमाम रज़ा[अ०] के पास

---

1 बिहारुअनवार, जि०: ५०, पेज: २१

2 बिहारुअनवार, जि०: ५०, पेज: ३५

3 बिहारुअनवार, जि०: ४६, पेज: ३४

4 बिहारुअनवार, जि०:४६, पेज: ६८

गया। मैंने देखा कि इमाम[अ०] केला छील कर अपने बेटे को दे रहे हैं। मैंने कहा कि क्या वह मुबारक बच्चा यही है? इमाम[अ०] ने कहा कि हाँ यह्या!

هَذَا الْمَوْلُودُ الَّذِی لَمْ یُولَدْ فِی الاِسلامِ مِثْلُه مَوْلُودٌ اَعْظَمُ بَرَکَةً عَلَی شِیعَتِنَا مِنهُ

यह वही बच्चा है इस्लाम में जिस से ज़्यादा मुबारक बच्चा और कोई पैदा नहीं हुआ है।[1]

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के बारे में इन सवालों और एतेराज़ों से यह बात उभर कर सामने आती है कि उस वक़्त के बहुत से लोग अपने इमाम बल्कि इमामत के सिस्टम के बारे में ज़्यादा मालूमात नहीं रखते थे। वैसे उस वक़्त का सियासी माहोल भी उसकी बहुत बड़ी वजह थी वरना न जाने कितनी हदीसों के ज़रिए इमामों, इमामत और इमामत के सिस्टम को इमामों के नामों के साथ ख़ुदा की तरफ़ से तै कर दिया गया था जो रसूल[स०] ने लोगों को बता दिया था। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि वसीय्यत (यानी इमामत) का मसला मोहम्मद मुस्तफ़ा[स०] पर आसमान से तहरीरी तौर पर नाज़िल कर दिया गया था। जबकि इसके अलावा कोई भी चीज़ तहरीरी तौर पर और मोहर लगी हुई नाज़िल नहीं की गई थी। यह तहरीर हज़रत जिब्रईल[अ०] ने रसूले इस्लाम[स०] को दी थी कि आप[अ०] हज़रत अली[अ०] और उनके फ़रजंदों तक भी पहुँचा दें। इस तहरीर पर कई मोहरें थीं और हज़रत अली[अ०] को हुक्म था कि एक मोहर खोलें और जो कुछ लिखा है उस पर अमल करें। इमाम अली[अ०] ने ऐसा ही किया। इसके बाद इमाम हसन[अ०] ने भी इसी तरह दिए गए हुक्म पर अमल किया और उसके बाद उस तहरीर को इमाम हुसैन[अ०] को दे दिया। जैसे ही इमाम[अ०] ने मोहर खोली तो लिखा देखाः एक गिरोह के साथ शहादत के लिए घर से बाहर निकलो यानी क़्याम करो। इन लोगों को सिर्फ़ तुम्हारे साथ ही शहादत नसीब होगी। इसलिए अपनी जान और जिस्म को ख़ुदा की राह में बेच दो। और इमाम[अ०] ने ऐसा ही किया। इसके बाद तहरीर इमाम ज़ैनुलआबेदीन[अ०] तक पहुँची। इमाम[अ०] ने खोला तो लिखा देखाः सर झुका लो और ख़ामोश रहो। घर के अंदर बैठ जाओ और अपने ख़ुदा की इबादत करो, यहाँ तक कि तुम्हारा आख़िरी वक़्त आ जाए। इमाम[अ०] ने ऐसा ही किया और इस तहरीर को अपने बेटे इमाम बाक़िर[अ०] को दे दिया। आप[अ०] ने खोला तो देखा कि लिखा हैः लोगों के सामने हदीसें बयान करो, फ़तवे दो और ख़ुदा के अलावा किसी से भी न डरो क्योंकि कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। इमाम[अ०] ने ऐसा ही किया और इस तहरीर को अपने बेटे इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] को दे दिया। इमाम[अ०] ने लिखा देखाः लोगों के बीच

---

[1] बिहारुअनवार, जि०: ५०, पेज: ३५

हदीसें बयान करो, फ़तवे दो, अपने बुज़ुर्गों के इल्म को फैलाओ, अपने वालिद की तस्दीक़ करो और ख़ुदा के अलावा किसी से मत डरो क्योंकि तुम महफ़ूज़ हो और ऐसा इमाम मेहदी[अ०] तक तमाम इमामों के साथ हुआ।[1]

[1] उसूले काफ़ी, किताबुल हुज्जत, जि०: २, पेज: २८, बिहारुअनवार, जि०: ३६, पेज: १६२

तीसरी मुश्किल:

इमाम अली रज़ा[अ०] की वली अहदी

यह स्ट्रेटिजी जिसको मामून रशीद अब्बासी ने तैयार किया था, एक ऐसा इलाही इम्तेहान था जिसमें उस वक़्त के शिया बुरी तरह घिर गए थे क्योंकि अभी बनी अब्बास ख़ासकर मामून रशीद के हाथों रसूल[स०] की आल औलाद के क़त्ले आम और जुल्म, साथ ही इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत को ज़्यादा वक़्त नहीं गुज़रा था कि मामून की वली अहदी वाली इस पेशकश ने सबको चौंका दिया था। बनी अब्बास ख़ासकर हारून रशीद की अहलेबैत[अ०] से दुश्मनी और इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत की वजह से उस वक़्त के अवाम हुकूमत के ख़िलाफ़ नफ़रत से भरे हुए थे और चाहते थे कि इमाम रज़ा[अ०] मामून की इस पेशकश को क़ुबूल न करें। उधर इमाम[अ०] को इतना मजबूर किया गया कि इमाम[अ०] के पास क़ुबूल करने के अलावा कोई रास्ता बचा ही नहीं था मगर फिर भी एक ग्रुप ने एतेराज़ और सवाल करने शुरु कर दिए। इधर वाक़फ़िया फ़िरक़े को बड़ा अच्छा मौक़ा मिल गया था इसलिए उसने इमाम[अ०] के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा करना शुरु कर दिया। नतीजा यह हुआ कि इन सारे हालात की वजह से सादा और नादान अवाम अपने वक़्त के इमाम[अ०] के सामने सर झुकाने के बजाए ख़ुद उन पर ही एतेराज़ करने लगे और न जाने कितनी बार इमाम[अ०] को यह सवाल सुनना पड़ा कि आप[अ०] मामून के दरबार में दाख़िल ही क्यों हुए? और इमाम[अ०] एक ही जवाब देते थे कि जिस वजह से मेरे दादा हज़रत अली[अ०] शूरा में दाख़िल हुए थे इसी वजह से मैं मामून के दरबार में गया हूँ।[1]

कभी-कभी किसी एतेराज़ करने वाले के जवाब में यह भी कहते थे कि रसूल अफ़ज़ल हैं या उनका वसी?

रसूल[स०]।

फिर आप कहते थे कि मुसलमान अफ़ज़ल हैं या मुश्रिक?

मुसलमान।

इसके बाद आप कहते थे कि अज़ीज़े मिस्र मुश्रिक था और यूसुफ़[अ०] नबी

---

[1] बिहारुअनवार, जि०: ४६, पेज: १४०, शूरा वह मीटिंग थी जो दूसरे ख़लीफ़ा के हुक्म से उनके जानशीन को तै करने के लिए बुलाई गई थी।

थे जबकि मामून मुसलमान है और मैं वसी। (जैसा कि कुरआन में है) ख़ुद हज़रत यूसुफ़[अ०] ने अज़ीज़े मिस्र से ख़्वाहिश की थी कि उन्हें वली बनाया जाए जबकि मुझे वली अहदी को क़ुबूल करने पर मजबूर किया गया है।[1]

[1] बिहारुअनवार, जि०: ४६, पेज: १३६

वली अहदी को क़ुबूल करने की वजह से इमाम रज़ा[अ०] को शहीद करने का प्लान

मोहम्मद बिन ज़ैद कहते हैं: जैसे ही मामून ने इमाम रज़ा[अ०] को अपना वली अहद बनाने का एलान किया, फ़ौरन ही ख़वारिज में से एक शख़्स ने ज़हर से भरा चाकू तैयार किया और अपने साथियों से कहा कि ख़ुदा की क़सम! मैं उस शख़्स के सामने जा रहा हूँ जो ख़ुद को रसूल[स०] का बेटा बताता है और फिर भी उसने ज़ालिम और तागूत के दरबार में सरकारी ओहदा क़ुबूल कर लिया है। मैं उसके पास जाकर उस से वजह मालूम करूँगा और अगर उसने कोई सही वजह नहीं बताई तो वहीं क़त्ल कर दूँगा। इतना कहा और अपने दोस्तों के बीच से निकल कर इमाम[अ०] के घर पहुँच गया।

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया: मैं एक शर्त पर तुम्हारे सवाल का जवाब दूँगा। अगर तुम्हें वह शर्त मंजूर हो तो बताओ। उसने कहा क्या शर्त है? इमाम[अ०] ने कहा कि अगर मेरे जवाब से तुम मुतमइन हो गए तो इस चाकू को तोड़ दोगे और ज़मीन पर फेंक दोगे जो तुम्हारी आस्तीन में छुपा हुआ है।

सामने वाला भौंचक्का रह गया था। उसने वहीं चाकू निकाला और तोड़कर फेंक दिया। इसके बाद कहा कि अब बताइये कि आप ने तागूत का दिया हुआ सरकारी ओहदा क्यों क़ुबूल कर लिया है, जबकि यह लोग आपके मुताबिक़ काफ़िर हैं और फिर आप तो औलादे रसूल[स०] हैं!

इमाम[अ०] ने कहा कि तुम्हारी नज़र में यह लोग बड़े काफ़िर हैं या अज़ीज़े मिस्र और उसके मुल्क वाले? क्या मामून और उसके साथी ख़ुद को मुसलमान नहीं कहते जबकि अज़ीज़े मिस्र और उसके मुल्क वाले तो ख़ुदा को पहचानते और मानते भी नहीं थे।

क्या हज़रत यूसुफ़[अ०] ख़ुद रसूल[स०] और रसूल[स०] के बेटे नहीं थे? जैसा कि क़ुरआने करीम ने कहा है कि उन्होंने अज़ीज़े मिस्र से कहा था: ज़मीन के ख़ज़ाने (मिस्र की दौलत) मेरे ज़िम्मे कर दो क्योंकि मैं एक अक़लमंद मुहाफ़िज़ हूँ। उनका उठना-बैठना उस वक़्त के फ़िरऔन के साथ था जबकि मैं रसूल[स०] की औलाद में से हूँ और मुझे इस काम के लिए मजबूर किया गया है जिसे मैंने बड़ी मुश्किल से क़ुबूल किया है। अब बताओ क्या तुम अब भी मेरे ऊपर एतेराज़ कर सकते हो? यह सब सुनकर वह ख़ारजी शख़्स बोला कि अब मुझे आपके ऊपर कोई एतेराज़ नहीं है। मैं गवाही देता हूँ कि आप रसूले ख़ुदा[स०] के बेटे और सच्चे हैं।[1]

---

[1] बिहारुअनवार, जि०: ४९, पेज: ५५

लौह और इमामों के नाम

जिस वक़्त इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ॰] की शहादत क़रीब थी, आप ने अपने बेटे इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] को अपने पास बुलाया ताकि उन्हें अपना जानशीन बना दें। इमाम बाक़िर[अ॰] के भाई, ज़ैद बिन अली ने कहाः अगर आप मेरे साथ भी हसन[अ॰] और हुसैन[अ॰] जैसा बरताव करते तो ग़लत न होता (यानी मुझे अपना जानशीन बना देते)। इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि अमानतें, शबाहतों से नहीं दी जाती हैं और ख़िलाफ़त किसी को देखकर नहीं दी जाती है बल्कि यह वह चीज़ें हैं जिनके बारे में पहले ही से ख़ुदा ने अपना फ़ैसला सुना दिया है।

इसके बाद आप ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह को बुलाया और उन से कहा कि ऐ जाबिर! जो सहीफ़ा तुम ने देखा है ज़रा उसके बारे में बतओ। जाबिर ने कहा कि हाँ! मैं रसूल[स॰] की बेटी जनाबे फ़ातिमा[स॰] के पास गया था ताकि इमाम हुसैन[अ॰] की विलादत की मुबारकबाद पेश कर दूँ। वहाँ मैंने देखा कि जनाबे फ़ातिमा[स॰] के हाथ में एक ऐसा सहीफ़ा है जो चमक रहा है। मैंने कहा कि ऐ औरतों की सरदार! यह सहीफ़ा जो आपके पास है यह किसका है? फ़रमाया कि इसमें मेरे बेटों में से उनके नाम हैं जो इमाम और पेश्वा होंगे। (और एक रिवायत में फ़रमाया कि यह वह लौह है जो ख़ुदा ने रसूल[स॰] को दी है। उसमें मेरे बाबा का नाम, मेरे शौहर का नाम और मेरे दो बेटों के नाम और मेरे बेटों में से औसिया के नाम हैं। मेरे बाबा ने यह मुझे दिया है ताकि मैं इसको देखकर ख़ुश हो सकूँ)।

मैंने कहा कि ज़रा दीजिए देखूँ तो, फ़रमाया कि अगर मुझ से मना न किया गया होता तो दिखा देती क्योंकि उसको रसूल[स॰], उनके वसी या उनके ख़ानदान के अलावा और कोई नहीं छू सकता। हाँ! अगर चाहो तो उसको अंदर से देख ज़रूर सकते हो।

जाबिर कहते हैं कि मैंने देखा कि इसमें लिखा थाः अबुल क़ासिम मोहम्मद बिन अब्दुल्लाहिल मुस्तफ़ा उनकी माँ आमना, अबुल हसन अली बिन अबी तालिब अल-मुर्तज़ा उनकी माँ फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ़, अबू मुहम्मद अल-हसन बिन अली अल-बिर्र, अबु अब्दुल्लाहिल हुसैन बिन अली अत्तक़ी, उनकी माँ फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद, अबू मोहम्मद अली इब्निल हुसैन अल-अद्ल उनकी माँ शहर बानो बिन्त यज़्दजर्द, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली अल-बाक़िर उनकी माँ उम्मे अब्दुल्लाह फ़ातिमा बिन्ते हसन बिन अली बिन अबी तालिब, अबू अब्दुल्लाह जाफ़र बिन

मोहम्मद अस्सादिक़ उनकी माँ उम्मे फ़रवा बिन्ते क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबी बकर, अबू इब्राहीम मूसा बिन जाफ़र उनकी माँ हमीदा, अबुल हसन अली बिन मूसा अल-रज़ा उनकी माँ नजमा, अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली अज़्ज़की उनकी माँ ख़ीज़रान, अबुल हसन अली बिन मोहम्मद अल-अमीन उनकी माँ सोसन, अबू मोहम्मद हसन बिन अली अल-रफ़ीक़ उनकी माँ समाना जिनकी कुन्नियत उम्मुल हसन है, अबुल क़ासिम मोहम्मद बिन अल-हसन जो ख़ुदा के मुहिब हैं जिनकी माँ का नाम नरजिस है। ख़ुदा का उन सब पर दुरूद व सलाम हो।[1]

लेखकः "ऊपर जो कुछ बयान हुआ यह बहुत सी दूसरी रिवायतों में भी आया है और मशहूर शिया उलमा जैसे शेख़ सदूक़, शेख़ तूसी, शेख़ मुफ़ीद, तबरिसी, नोमानी, कुलैनी और दूसरे उलमा ने अपनी-अपनी किताबों में इस वाक़िए को थोड़े-थोड़े फ़र्क़ के साथ नक़ल किया है।"

[1] बिहारुअनवार, जि०: ३६, पेजः १६३

इमाम रज़ा[अ०] की हिजरत

मामून ने अपने बहुत से ख़त और अपने सरकारी आदमी भेजकर बार-बार इमाम अली रज़ा[अ०] को अपने पास आने की दावत दी थी। इमाम[अ०] इस सफ़र को बिल्कुल पसंद नहीं कर रहे थे और जानते थे कि इस सफ़र में उनकी ज़िंदगी का ख़ात्मा हो जाएगा, फ़िर भी मजबूर होकर आप[अ०] को इस सफ़र के लिए तैयार होना ही पड़ा।[1]

[1] काफ़ी, जि०: २, पेज: २०७

मदीने से रुख़सत

इमाम[अ॰] कई बार रसूले इस्लाम[स॰] की क़ब्र से रुख़सत होने के लिए आए और इस तरह से पेश आए जिस से पूरी तरह साफ़ था कि आप[अ॰] इस सफ़र को बिल्कुल पसंद नहीं कर रहे हैं। रुख़सत होते वक़्त आप[अ॰] बहुत ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे और जब एक आदमी मुख़व्वल सजिस्तानी ने आप[अ॰] को इस सफ़र की मुबारकबाद दी तो आप[अ॰] ने कहा कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो! मैं अपने दादा के मदीने से जा रहा हूँ और परदेस में ही इस दुनिया से रुख़सत हो जाऊँगा।

जिस वक़्त इमाम मदीने से निकल रहे थे, आप[अ॰] ने अपने सारे रिश्तेदारों को अपने पास बुलाया और कहा कि मेरे ऊपर ख़ूब आँसू बहाना क्योंकि अब मैं मदीने वापस नहीं आऊँगा।[1] इसके बाद अपने कमसिन बेटे हज़रत तक़ी को अपने साथ लेकर मस्जिदुन्नबी गए। वहाँ इमाम तक़ी[अ॰] रसूल[स॰] की क़ब्र से लिपटे हुए थे और इसी हाल में इमाम रज़ा[अ॰] ने कहा कि ऐ ख़ुदा के रसूल[स॰]! मैं अपने बेटे को आपके हवाले कर रहा हूँ। इसके बाद अपने तमाम वकीलों और अस्हाब से कहा कि यह जो कुछ कहें उस पर अमल करना और किसी भी मामले में इनकी मुख़ालेफ़त न करना। साथ ही अपने क़रीबी सहाबियों के बीच इमाम तक़ी[अ॰] की इमामत का एलान भी किया।[2]

---

1 उयूनु अख़बार्रिज़ा, जि०: २, पेजः २१७

2 इस्बातुल वसीय्यत, पेजः ३४६, इब्ने शहरे आशोब मनाक़िब पेजः १६६

इमाम रज़ा[अ०] के सफ़र का रास्ता

मदीने से मर्व तक इमाम रज़ा[अ०] के सफ़र का रास्ता कहाँ से और कैसे था, इसमें इख़्तेलाफ़ है। जैसे क्या इमाम[अ०] पहले मक्के गए थे और वहाँ से अपना सफ़र आगे बढ़ाया था या पहले कूफ़े गए थे?

जो चीज़ नज़र आती है वह यह है कि इमाम[अ०] के सफ़र का रास्ता कुछ इस तरह तै किया गया था कि रास्ते में शियों और अलवियों के किसी भी मूवमेंट या तहरीक में जान न पड़ सके। इसलिए कुछ रिवायतों में है कि आप[अ०] कूफ़े में दाख़िल हुए बग़ैर बाहर ही से आगे बढ़ गए थे।[1]

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: १४६

नबाज गाँव

अपने सफ़र को आगे बढ़ाते हुए इमाम[अ॰] बसरे के क़रीब एक गाँव नबाज पहुँचे। अबू हबीब नबाजी कहते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि रसूले इस्लाम[स॰] नबाज में तश्रीफ़ लाए हैं और मस्जिदे हज्जाज में दाख़िल हुए हैं। मैं आपके पास गया और सलाम किया। आप[अ॰] के सामने खजूर का एक तश्त रखा हुआ था। रसूल[स॰] ने एक मुटठी खजूर मुझे भी दी। मैंने उन्हें गिना तो वह अटठारह खजूर थे। इतने में मेरी आँख खुल गई और मैंने इस ख़्वाब की ताबीर यह मान ली कि मैं अभी अटठारह साल और जियूँगा। अभी बीस दिन ही गुज़रे थे कि मैंने सुना कि इमाम रज़ा[अ॰] मदीने से आए हुए हैं और मस्जिद में बैठे हैं। मैं मस्जिद की तरफ़ गया और देखा कि लोग इमाम[अ॰] की ज़ियारत के लिए दौड़े चले आ रहे हैं। मैं भी इमाम[अ॰] के पास गया। मैंने देखा कि इमाम[अ॰] ठीक उसी जगह बैठे हुए हैं जहाँ रसूले इस्लाम[स॰] बैठे हुए थे। इमाम[अ॰] के पैरों के ठीक नीचे वैसी ही एक चटाई थी जैसी रसूले इस्लाम[स॰] के पैरों में रखी थी। इमाम[अ॰] के सामने भी वैसा ही तश्त रखा हुआ था जैसा रसूल[स॰] के सामने था। मैंने सलाम किया। इमाम[अ॰] ने मेरे सलाम का जवाब दिया और मुझे अपने पास बुलाकर एक मुटठी खजूर मुझे भी दे दिए। मैंने उन्हें गिना तो वह भी उतने ही थे जितने रसूल[स॰] ने मुझे उस दिन ख़्वाब में दिए थे यानी अटठारह। मैंने कहा कि ऐ रसूल[स॰] के बेटे! थोड़े और दे दीजिए। कहा कि अगर रसले ख़ुदा ने भी और दिए होते तो मैं भी दे देता।[1]

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ॰], जि॰: २, पे॰: ८-४५७

अहवाज़

रिवायतों के मुताबिक़ इमाम रज़ा[अ॰] अहवाज़ में बीमार हो गए थे। अबू हाशिम जाफ़री इमाम के पास पहुँचे। गर्मी का मौसम था और बहुत गर्मी थी। एक हकीम को बुलाया गया। इमाम[अ॰] ने उस हकीम से एक जड़ी-बूटी का नाम लेकर कहा कि इस वक़्त यही मेरी दवा है और साथ ही हकीम को उस जड़ी-बूटी के फ़ाएदे भी बताए लेकिन हकीम ने कहा कि यह जड़ी-बूटी इस वक़्त कहीं नहीं मिलेगी। इमाम[अ॰] ने कहा कि अच्छा थोड़ा गन्ना ले आओ। हकीम ने कहा कि उसको ढूँढना तो पहली वाली दवा को ढूँढने से भी ज़्यादा बड़ा काम है क्योंकि यह गन्ने का मौसम नहीं है। इमाम[अ॰] ने कहा कि गन्ना और वह जड़ी-बूटी यहीं तुम्हारी ज़मीन में मौजूद है। आबे शादरवान से आगे बढ़ो, चक्की के पास एक काले चेहरे का आदमी रहता है। उस से पूछना वह बता देगा। एक आदमी को उसके पास उसी एड्रेस पर भेज दिया गया। वह गया और जाकर दोनों चीज़ें ले आया। जैसे ही रजा बिन ज़हाक (मामून का आदमी जो इमाम को मर्व ले जा रहा था) को इस वाक़िए की ख़बर मिली उसने फ़ौरन अपने साथियों से कहा कि यहाँ से जल्दी से आगे चलो वरना अगर ज़्यादा रुक गए तो यहाँ के लोग इमाम[अ॰] के आशिक़ हो जाएंगे। फ़ौरन ही क़ाफ़िले को आगे बढ़ा दिया गया।[1]

इमाम[अ॰] अहवाज़ से निकल ही रहे थे कि पुले अरबक के पास जाफ़र बिन मोहम्मद नौफ़ली ने इमाम[अ॰] से कहा कि कुछ लोगों का मानना है कि आपके वालिद अभी ज़िंदा हैं। इमाम[अ॰] ने कहा कि झूठ बोलते हैं। उन पर ख़ुदा की लानत हो! अगर मेरे वालिद ज़िंदा होते तो उनकी मीरास न बंटती और उनकी बीवियाँ दूसरी शादी न करतीं। ख़ुदा की क़सम! मेरे वालिद ने उसी तरह मौत का ज़ाएक़ा चखा है जिस तरह अली बिन अबी तालिब[अ॰] ने चखा था। मैंने कहा कि आप[अ॰] के बाद हमारी ज़िम्मेदारी क्या है? कहा कि मेरे बाद तुम मेरे बेटे मोहम्मद की पैरवी करोगे और उनके बताए रास्ते पर चलोगे। इसके बाद फ़रमाया कि मेरी और हारून की क़ब्र इस तरह है और अपनी दो उंगलियों को आपस में मिला दिया।[2]

---

1 मुस्नद इमामुर्रिज़ा, जि॰: १, पेज: १७५

2 उयूनु अख़बारिर्रिज़ा, जि॰: २, पेज: ४६३

फ़ारस की तरफ सफ़र [1]

कुछ लोगों ने यह भी लिखा है कि इमाम[अ०] ने बहबहान (अरजान) की एक मस्जिद में नमाज़ भी पढ़ी थी।[2] उस शहर में एक क़दमगाह भी है जिसका नाम क़दम गाहे इमाम रज़ा[अ०] है।[3]

इसके बाद इमाम रज़ा[अ०] आगे बढ़े और अब्रक़ोह पहुँचे जहाँ की क़दमगाह भी मशहूर है। इसके बाद आप दहशीर से होते हुए आगे बढ़ गए। यह वही दहशीर है जिसका दूसरा नाम फ़राशाह या इस्लामिया जदीद है और जहाँ की क़दमगाह आज भी मशहूर है। शीराज़ का रास्ता यज़्द की तरफ़ यहीं से होकर जाता है। क़दमगाहे इस्लामिया की मेहराब में जो पत्थर लगा हुआ है उसके मुताबिक़ इस क़दमगाह को गरशासब बिन अली ने सनः 512 में बनाया था। उस वक़्त यह जगह मस्जिदे मशहदे अली बिन मूसर्ररज़ा के नाम से मशहूर थी। इस इमारत में तारीख़ी पत्थर, कतबे, इंटीरियर डिज़ाइनिंग और भी दूसरी बहुत सी यादगारी चीज़ें हैं।[4]

इस किताब के लेखक लिखते हैं किः "मुझे फ़ख़्र है कि मेरे कुछ रिश्तेदार जिनमें मेरे जद्दे आला हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सैय्यद अबुल क़ासिम फ़राशाही जो वहाँ की एक मशहूर और अज़ीम शख़्सियत और साहेबे करामत थे, अपनी औलाद के साथ इस क़दमगाह में और उसके आसपास दफ़्न हैं। इसी तरह मेरे दादा आयतुल्लाह सैय्यद अब्दुल्लाह जो यज़्द के एक अज़ीम आलिमे दीन और वहाँ के हाकिमे शरा थे, यज़्द में इमाम ज़ादा जाफ़र की बारगाह में दफ़्न हैं। ख़ुदा उन सब पर अपनी रहमत नाज़िल करे!"

---

1 उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: ३, पेजः १४६, अल इर्शाद, जि०: २ पेजः २५५, काफी, पेजः ४०२-४०७

2 मिराअतुल बुलदान, जि०: १, पेजः ३६८

3 मिराअतुल बुलदान, जि०: १, पेजः ३६८

4 जुग़राफ़ियाए तारीख़ी हिजरते इमाम रज़ा[अ०] पेजः १०७

ख़ुरासान की तरफ़ कूच

शेख़ सदूक़ रिवायत करते हैंः इमाम रज़ा[अ०] जब ग़र्रा या क़ज़्ज़ा महल्ले में दाख़िल हुए तो आप[अ०] ने बादाम का एक बीज बोया जो फ़ौरन ही एक पेड़ बन गया जिस से एक साल तक बादाम फलते रहे। लोगों को पता चला तो वह उस पेड़ के पास आने लगे और जो भी बीमार होता था वह उसके बादाम खाकर ठीक हो जाता था। अगर किसी की आँख में कोई तकलीफ़ होती थी या किसी औरत को बच्चे की विलादत में परेशानी होती थी या अगर कोई जानवर किसी बीमारी का शिकार हो जाता था तो उन सब का उसी पेड़ की पत्तियों या बादाम से इलाज हो जाता था। यहाँ तक कि एक दिन अबू उमर नाम के एक आदमी ने उस पेड़ को काट दिया जिसकी वजह से उसकी बेपनाह दौलत का ख़ातमा हो गया। उस पेड़ के बाक़ी बचे हिस्से को उसके दो बेटों ने अपना घर बनाने के लिए काट दिया और दोनों सख़्त बीमार होकर एक साल के फ़ासले से मर गए।[1]

मोहद्दिस कुम्मी ने इमाम[अ०] के क़ाफ़िले के ऊँट चलाने वालों से नक़ल किया हैः वह लोग कहते हैं कि जब हम लोग इमाम[अ०] के साथ अपने गाँव करदे या करमंद इस्फ़हान पहुँचे तो हम ने इमाम[अ०] से कहा कि हमें अपने हाथ से लिखी हुई एक हदीस दे दीजिए। इमाम[अ०] ने यह हदीस उन लोगों को दीः

كُن مُحِبًّا لآلِ مُحَمَّدٍ وَاِن كُنتَ فَاسِقًا وَمُحِبًّا لِمُحِبِّيهِم وَاِن كَانُوا فَاسِقِينَ

आले मोहम्मद[अ०] और रसूल[स०] के ख़ानदान के चाहने वाले बनो चाहे फ़ासिक़ ही क्यों न हो और उनके चाहने वालों के दोस्त बनो चाहे वह फ़ासिक़ ही क्यों न हो।[2]

---

1 उयूनु अख़्बारिज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ३७४

2 मुन्तहल आमाल, जि०: २, पेजः १७७

नेशापूर

इमाम रज़ा[अ॰] सन् 200[हि॰] में नेशापूर पहुँचे और शहर की एक शख़्सियत अबू याक़ूब इस्हाक़ बिन राहविये के साथ नेशापूर के एक गाँव महदिया तक इमाम[अ॰] के इस्तेक़बाल के लिए पहुँचे। अबू याक़ूब बहुत बूढ़े थे फिर भी उन्होंने इमाम[अ॰] के नाक़े की मिहार अपने कंधों पर रखी और पैदल चलते हुए नेशापूर तक आए।[1] नेशापूर में एक हम्माम है जो बाद में हम्मामे रज़ा के नाम से मशहूर हो गया, इसी हम्माम में एक हौज़ था और इसी हम्माम में इमाम रज़ा[अ॰] ने ग़ुस्ल करके उसके किनारे नमाज़ पढ़ी थी। जैसे ही लोगों ने यह मंज़र देखा, उस हौज़ में नहाना शुरु कर दिया और उसका पानी तबर्रुक के तौर पर पीने लगे और वहीं नमाज़ पढ़ना शुरु कर दी और उसके बाद ख़ुदा से अपनी दुआएं माँगने लगे जो पूरी होने लगीं। शेख़ सदूक़ लिखते हैंः वह चश्मा जो कोहलान के नाम से मशहूर है, उस ज़माने से आज तक लोगों के लिए एक मुक़द्दस और पाकीज़ा जगह है जहाँ वह अपनी बीमारियों का इलाज करते हैं।[2]

इमाम रज़ा[अ॰] कुछ दिन नेशापूर में रहे। इसी बीच आप[अ॰] एक दिन इमाम सज्जाद[अ॰] की औलाद में से एक इमाम ज़ादा मोहम्मद महरूक़ की क़ब्र की ज़ियारत के लिए भी गए थे। हाकिम नेशापूरी कहते हैंः इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया कि हमारे ख़ानदान का एक फ़र्द यहाँ दफ़न है। आओ उनकी क़ब्र की ज़ियारत को चलें। इसके बाद आप[अ॰] "तलाजर्द" में सुलतान मोहम्मद महरूक़ के रौज़े की ज़ियारत के लिए गए।[3]

---

1 ख़लीफ़ा नेशापूरी तारीख़ नेशापूर, पेजः१७७, जुग़राफ़ियाए तारीख़ी हिजरी इमाम रज़ा[अ॰] पेजः १३२, तालीफ़ जलील इरफ़ान मनिश में देखें

2 उयूनु अख़्बारिर रज़ा[अ॰], जि०: २, पेजः ३७६

3 तारीख़ नेशापूर, पेजः १७, इमाम अली बिन मूसा अल-रज़ा[अ॰] पेजः ८२ में देखें

हदीस सिलसलतुज़्ज़हब

इमाम रज़ा[अ॰] नेशापूर से निकलना ही चाहते थे कि मोहम्द बिन राफ़े, अहमद बिन हारिस, यह्या बिन यह्या और इस्हाक़ बिन राहविया जैसे हदीस लिखने वालों ने इमाम[अ॰] के नाक़े की मिहार को थाम लिया और कहाः आपको आपके पाक अजदाद की क़सम! हमारे लिए अपने वालिद की कोई हदीस बयान कीजिए। एक दूसरी रिवायत में है कि मोहद्दिस अबू ज़रआ और मोहम्मद बिन सालिम ने इमाम[अ॰] से कहा कि ऐ इमामों के बेटे! ऐ पाक व पाकीज़ा और ऐ रसूलों के वारिस! आपको आपके पाक अजदाद का वास्ता! अपना चेहरा हमें दिखाइए और अपने अजदाद की एक हदीस हमारे लिए बयान कीजिए जो हमारे लिए आपकी एक यादगार बन सके।

इस मौक़े पर इमाम[अ॰] की सवारी रुक गई, पर्दा हटा और मुसलमानों की आँखें इमाम[अ॰] के नूरानी चेहरे से नूरानी हो गईं। इमाम[अ॰] के सर के दोनों तरफ़ के बाल बिल्कुल रसूल[स॰] के बालों की तरह थे। लोगों में हैजान बरपा हो गया, हर तरफ़ से रोने और गिरये की आवाज़ें आने लगीं, लोग फ़रियाद करने लगे, अपने लिबास चाक कर दिए और ज़मीन पर लौटने लगे। कुछ लोग इमाम के नाक़े की मिहार को चूम रहे थे और कुछ इमाम[अ॰] के क़रीब से क़रीब होने की कोशिश कर रहे थे। यह सब होते हुए इतना वक़्त हो गया कि ज़ोहर का वक़्त आ गया। अभी तक भी लोगों की आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। जब यह सिलसिला किसी तरह नहीं रुका तो वहाँ के बुज़ुर्गों और क़ाज़ियों ने बुलंद आवाज़ से कहा कि ऐ लोगो! ग़ौर से सुनो और रसूल और उनके बेटे को परेशान मत करो! इसके बाद इमाम रज़ा[अ॰] ने 24 हज़ार लिखने वालों के बीच फ़रमायाः ख़ुदा के नेक बंदे, मेरे वालिद मूसा बिन जाफ़र ने मुझे ख़बर दी है और फ़रमाया हैः मेरे वालिद जाफ़र बिन मोहम्मद सादिक़ ने मुझे ख़बर दी है और कहा है कि अबू जाफ़र मोहम्मद बिन अली, बाक़िरुल उलूम ने कहा है कि मुझे अली बिनुल हुसैन[अ॰] सैय्यदे सज्जाद[अ॰] ने ख़बर दी है और कहा है कि मुझे जन्नत के जवानों के सरदार हज़रत हुसैन[अ॰] ने ख़बर दी है और कहा है कि मुझे अली बिन अबी तालिब[अ॰] ने ख़बर दी है कि रसूल[स॰] ने उन से फ़रमाया कि जिब्रईल कह रहे थे कि ख़ुदावंदे आलम ने फ़रमाया हैः ‘‘मैं वह ख़ुदा हूँ जिसके अलावा कोई माबूद नहीं है, इसलिए बस मेरी ही इबादत करो!

لاَ اِلٰه الا الله حِصنِی فَمَن قَالَهَا مُخلِصًا دَخَلَ حِصنِی وَمَن دَخَلَ حِصنِی اَمِنَ مِن عَذَابِی

ला-इला-ह इल-लल्लाह मेरा क़िला है। जो भी (ख़ुलूस के साथ) *ला-इला-ह इल-लल्लाह* कहेगा वह मेरे क़िले में आ जाएगा और जो भी मेरे क़िले में आ जाएगा वह मेरे अज़ाब से महफ़ूज़ हो जाएगा।''

अभी इमाम[अ०] की सवारी आगे बढ़ी ही थी कि इमाम[अ०] ने कहाः इसकी कुछ शर्तें हैं और मैं उनमें से एक शर्त हूँ।[1]

[1] उयूनु अख़्बारिर्ज़ा[अ०], जि०: २, पेजः १३२

रिबाते साद में एक बीमार को शिफ़ा

ख़ुरासान से एक क़ाफ़िला किरमान की तरफ़ बढ़ रहा था कि किरमान पहाड़ के क़रीब उस पर डाकुओं ने हमला कर दिया। डाकुओं ने एक ऐसे आदमी को पकड़ लिया जिसके बारे में उन्हें गुमान था कि उसके पास बहुत दौलत है। उन लोगों ने उस आदमी को ख़ूब मारा कि शायद अपनी जान बचाने के लिए ही अपनी सारी दौलत दे दे। इसके बाद उसे वहीं पहाड़ के पास, बर्फ़ के अंदर दबा दिया और उसके मुँह को भी बर्फ़ से भर दिया और उसे वहीं छोड़कर चले गए कि जब दोबारा वापस आएंगे तो यह थक हार कर अपनी सारी दौलत दे देगा। उन लोगों के जाने के बाद एक औरत उधर से गुज़री और उसने उस आदमी को खोलकर आज़ाद कर दिया और वह वहाँ से भागने में कामयाब हो गया। मगर बर्फ़ की वजह से उसका मुँह और ज़बान की हालत बहुत ख़राब हो गई थी, इतनी ख़राब कि वह बहुत मुश्किल से बात कर पा रहा था। उसने ख़ुरासान में सुना कि इमाम रज़ा[अ॰] नेशापूर में मौजूद हैं। उसने ख़्वाब भी देखा कि कोई उस से कह रहा है कि रसूले ख़ुदा[स॰] के फ़रज़ंद, इमाम रज़ा[अ॰] ख़ुरासान आए हुए हैं। उनके पास जाओ और जाकर अपना हाल बयान करो, वह तुम्हारा इलाज कर देंगे। वह आदमी कहता है कि मैं ख़्वाब में ही इमाम[अ॰] के पास गया और अपना सारा हाल बयान कर दिया। इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि ज़ीरा, आवेशन और नमक को बराबर-बराबर कूटो और दो-तीन बार अपने मुँह पर लगाओ, उसी से ठीक हो जाओगे।

उस आदमी की आँख खुली और वह इस नुस्ख़े पर अमल किए बिना ही नेशापूर की तरफ़ चल दिया। नेशापूर पहुँचा तो लोगों ने उसे बताया कि इमाम[अ॰] तो यहाँ से जा चुके हैं और अब इस वक़्त रिबाते साद में हैं।

वह वहाँ से इमाम[अ॰] के पास पहुँचा और बड़ी मुश्किल से अपनी परेशानी इमाम[अ॰] से बताई। इमाम[अ॰] ने कहा मैंने तो तुम्हें ख़्वाब में ही इसका इलाज बता दिया था। वही इस बीमारी का इलाज है। उस आदमी ने कहा कि मेहरबानी करके दोबारा बता दीजिए। इमाम[अ॰] ने वही नुस्ख़ा दोबारा बता दिया। उस आदमी ने उस नुस्ख़े पर अमल किया और बिल्कुल ठीक हो गया।

अबू हामिद अहमद बिन अली सआलबी कहते हैं: मैंने अबू अहमद बिन अब्दुर्रहमान उर्फ़ सफ़वान से सुना है कि वह कहते हैं: मैंने उस आदमी को देखा है और यह सारा वाक़िआ ख़ुद उसकी ज़बान से सुना है।[1]

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि॰: २, पेज: ४५८

दह-सुर्ख़

इमाम रज़ा[अ॰] नेशापूर से तूस की तरफ़ बढ़ते हुए दह-सर्ख़ या क़रयतुल हमरा पहुँचे। अब्दुस्सलाम बिन सालेह हरवी लिखते हैंः इमाम रज़ा[अ॰] से कहा गया कि ऐ रसूल[स॰] के बेटे! नमाज़े ज़ोहर का वक़्त हो गया है। इमाम[अ॰] सवारी से नीचे उतरे और पानी लाने के लिए कहा। कहा गया कि पानी तो ख़त्म हो गया है। इमाम[अ॰] ने अपने हाथों से ज़मीन को खोदा और फ़ौरन पानी निकलना शुरु हो गया। इमाम[अ॰] और साथ में मौजूद सभी लोगों ने वुज़ू किया वह चश्मा अभी तक बाक़ी है।[1]

दह-सर्ख़ से तूस की तरफ़ बढ़ते हुए इमाम[अ॰] कोहे संग तराशान (कोह संगी) से गुज़रे तो कहाः ऐ ख़ुदा! इस पहाड़ में बरकत दे दे ताकि यह पहाड़ लोगों के लिए फ़ायदेमंद बन जाए। इस पहाड़ से बने हुए हर बर्तन में ग़िज़ा को बाबरकत बना दे। इसके बाद इमाम[अ॰] ने हुक्म दिया कि इस पहाड़ के पत्थरों से देगें तैयार की जाएं और उनमें खाना बनाया जाए। यह भी हुक्म दिया कि मेरा खाना इसके अलावा किसी और बर्तन में न पकाया जाए। खाना तैयार हो गया तो इमाम[अ॰] ने धीरे-धीरे खाना शुरु कर दिया।

उस दिन के बाद से लोग इसी पहाड़ से अपने बर्तन तैयार करते थे और उन्हीं में खाना तैयार करते थे। ख़ुदा ने भी इमाम[अ॰] की दुआ की वजह से इस पहाड़ को बरकत वाला बना दिया था।[2]

---

[1] उयूनु अख़्बार्रिज़ा[अ॰], जि॰: २, पेजः ३७६

[2] उयूनु अख़्बार्रिज़ा[अ॰], जि॰: २, पेजः ३७६

तूस

इसके बाद इमाम रज़ा[अ०] तूस पहुँचे और वहाँ हमीद बिन क़हतबा के घर में ठहरे जिसमें एक बहुत बड़ा बाग़ और हारून का मक़बरा भी था। यह वह जगह थी जिसका ज़िक्र इमाम[अ०] ने बहुत दफ़ा किया था और यह भी कहा था कि मुझे हारून के बराबर में दफ़न किया जाएगा। जैसे ही इमाम घर में दाख़िल हुए फ़ौरन हारून की क़ब्र के पास गए और हाथ से वहीं क़ब्र के पास एक लाइन खींची और फ़रमायाः यह मेरी क़ब्र की जगह है। मुझे यहीं दफ़न किया जाएगा। ख़ुदा बहुत जल्दी इस जगह को मेरे शियों और चाहने वालों का मरकज़ बना देगा। ख़ुदा की क़सम! अगर कोई शिया मेरी ज़ियारत करेगा और मेरे ऊपर दुरूद भेजेगा तो हम अहलेबैत[अ०] की शिफ़ाअत, बख़्शिश और ख़ुदा की रहमत उस पर वाजिब हो जाएगी।

इसके बाद इमाम[अ०] ने अपना चेहरा क़िब्ले की तरफ़ करके नमाज़ पढ़ी और दुआ की। फिर सजदे में जाकर पाँच सौ बार तस्बीह पढ़ी और वापस पलट गए।[1]

---

[1] उयूनु अख़बारिरज़ा, जि०ः २, पेजः ३७७

सरख़्स

कुछ किताबों से यह भी समझ में आता है कि इस शहर में इमाम[अ०] पर बहुत सख़्त नज़र रखी गई थी यहाँ तक कि आप[अ०] को किसी से मुलाक़ात करने की भी इजाज़त नहीं थी। नीचे जो वाक़िआ बयान किया जा रहा है उसमें इमाम के घर को क़ैदख़ाने का नाम दिया गया है।

अब्दुस्सलाम बिन सालेह कहते हैं: मैं सरख़्स में उस मकान पर पहुँचा जहाँ इमाम[अ०] को क़ैद करके रखा गया था। दरवाज़े पर खड़े आदमी से मुलाक़ात की इजाज़त चाही मगर उसने मना कर दिया। मैंने पूछा कि क्यों? उसने कहा इसलिए कि इमाम[अ०] रोज़ाना आठ हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ते हैं और उसके बाद थोड़ा बहुत इमाम[अ०] की इबादत के बारे में भी बताया। मैंने उस से कहा कि इमाम[अ०] से पूछ कर बताओ कि क्या मुझ से मुलाक़ात कर सकते हैं। वह गया और जाकर मुलाक़ात की इजाज़त ले आया। मैं अंदर गया तो देखा कि इमाम[अ०] मुसल्ले पर बैठे हुए किसी सोच में डूबे हुए हैं। मैंने कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! लोग आप[अ०] के बारे में यह सब क्या बातें कर रहे हैं? पूछा कि कौन सी बातें? मैंने कहा कि वह लोग कह रहे हैं कि आप ने फ़रमाया है, लोग हमारे बंदे हैं।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया:

اَللّٰهُمَّ فَاطِرِ السَّمٰوَاتِ وَالاَرْضِ عَالِمُ الغَيبِ

ऐ अबा सल्त! तुम जानते हो कि मैंने कभी ऐसा कुछ नहीं कहा है और न मैंने अपने बुज़ुर्गों को ऐसा कुछ कहते सुना है। तुम जानते हो कि इस उम्मत ने हमारे ऊपर कितना ज़ुल्म किया है, यह बातें भी उन्हीं ज़ुल्मों में से एक हैं। इसके बाद फ़रमाया कि ऐ अब्दुस्सलाम! जैसा कि कहा जा रहा है कि लोग हमारी मख़लूक़ हैं, अगर ऐसा है तो हम उन लोगों को किसकी तरफ़ दावत दे रहे हैं और किसकी तरफ़ बुला रहे हैं?

मैंने कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! आप सच कह रहे हैं। इमाम[अ०] ने कहा कि ऐ अब्दुस्सलाम! क्या तुम भी दूसरों की तरह इस विलायत और इमामत का इनकार करते हो जो ख़ुदा ने हमारे लिए वाजिब की है? मैंने कहा कि मआज़ल्लाह! बल्कि मैं तो आपकी विलायत और इमामत को मानता हूँ।[1]

बहरहाल इमाम रज़ा[अ०] के लिए मामून की तरफ़ से वली अहदी और आपको दी जाने वाली ज़ाहिरी इज़्ज़त और एहतेराम वाली पॉलीसी को देखते

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: ७-४२६

हुए ऐसा नहीं लगता कि मर्व जाते हुए रास्ते में इमाम[अ] को कहीं क़ैद भी किया गया होगा। हो सकता है कि रावी ने इमाम[अ] के लिए कुछ हालात को देखते हुए यह कह दिया हो कि इमाम[अ] को क़ैद भी किया गया था। या जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है, ऐसा भी हो सकता है कि यह वाक़िआ बाद वाले सफ़र का रहा हो यानी उस वक़्त का जब मामून की पॉलीसी के बदल जाने की वजह से इमाम[अ] मर्व से वापस पलट रहे थे।

सरख़्स से इमाम रज़ा[अ] के रुख़सत होते वक़्त, अहमद बिन उबैद कहते हैं कि मेरे दादा कहते थेः मुझे नेशापूर में इमाम[अ] की ख़िदमत गुज़ारी पर लगाया गया था। मैं अगली मंज़िल यानी सरख़्स तक इमाम[अ] के साथ रहा था और चाहता था कि मर्व तक इमाम[अ] के साथ रहूँ लेकिन सरख़्स से एक मंज़िल गुज़र जाने के बाद इमाम[अ] ने कजावे से अपना चेहरा बाहर निकाला और फ़रमाया कि ऐ ख़ुदा के बंदे! अब पलट जाओ। तुमने हमारे बारे में अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर दिया है और हमारे साथ तुम ने बड़ा अच्छा बरताव किया है। तुम्हारे इस साथ की कोई हद तै नहीं है (यानी तुम्हें तुम्हारा सवाब मिल गया है)।[1]

[1] आसार व अख़बारे इमाम रज़ा[अ]: जुग़राफ़ियाए तारीख़ी हिजरत इमाम रज़ा[अ] पेजः १५१ में देखें

मर्व

आख़िरकार इमाम रज़ा[अ०] चार महीनों के सफ़र की परेशानियाँ बर्दाश्त करने के बाद सन् 201[हि०] के पहले हिस्से में मामून की सलतनत, मर्व पहुँच गए।[1]

इमाम[अ०] जैसे ही मर्व पहुँचे, लोगों ने बड़े जोश व ख़रोश और जज़्बाती अंदाज़ में आपका इस्तेक़बाल किया। ऐसा इस्तेक़बाल कि मर्व में इस से पहले इस तरह की ख़ुशी और जश्न का माहोल देखा ही नहीं गया था। लोगों का एक बहुत बड़ा सैलाब इमाम के इस्तेक़बाल के लिए शहर से बाहर तक आया था। इमाम[अ०] लोगों की सफ़ों के बीच से होते हुए उस मकान में दाख़िल हो गए जो मामून के महल के क़रीब आप[अ०] के लिए तैयार कराया गया था।[2]

---

1 उयूनु अख़्बारिरज़ा[अ०], जि०: २, पेज: १४६

2 अल-इरशाद, जि०: २, पेज: २५०

वली अहदी का माजरा

मामून के बार-बार ज़ोर देने, पै-दर-पै ख़तों और फिर उसके इमाम रज़ा[अ॰] के इन्कार को न मानने की वजह से आख़िरकार इमाम[अ॰] को सन् 201[हि॰] में मर्व जाना ही पड़ा। मामून ने शुरु में इमाम[अ॰] को ख़िलाफ़त की पेशकश की और इमाम[अ॰] से कहा कि ए रसूल[स॰] के बेटे! मैं आपके इल्म, फ़ज़्ल, कमाल, ज़ोह्द, तक़्वा और इबादत को अच्छी तरह जानता हूँ और आपको ख़िलाफ़त के लिए ख़ुद से बेहतर मानता हूँ।

इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया कि मुझे ख़ुदा का बंदा होने पर ज़्यादा फ़ख़्र है और मैं दुनिया में ज़ोह्द व तक़्वे के ज़रिए आख़िरत में निजात की उम्मीद रखता हूँ। हराम कामों से बचकर उसके बदले सवाब की उम्मीद है और दुनिया में इन्केसारी और तवाज़ो करके ख़ुदावंदे आलम से क़रीब होना चाहता हूँ। मामून ने कहा कि मेरा ख़याल यह है कि ख़ुद को ख़िलाफ़त से हटाकर आपको ख़िलाफ़त दे दूँ और फिर आप की बैअत कर लूँ।

इमाम[अ॰] ने फ़रमायाः अगर यह ख़िलाफ़त तुम्हारा हक़ है और इसे ख़ुदा ने तुम्हारे लिए क़रार दिया है तो तुम्हारे लिए इस लिबास को अपने जिस्म से उतार कर दूसरे को पहनाना जाएज़ नहीं है जिसे ख़ुदा ने तुम्हें पहनाया है। और अगर ख़िलाफ़त तुम्हारा हक़ नहीं है तो तब भी तुम्हारे लिए जाएज़ नहीं है कि तुम ऐसी चीज़ मुझे दो जो तुम्हारे लिए है ही नहीं।

मामून ने कहा कि ऐ रसूल[स॰] के बेटे! ख़िलाफ़त तो आपको क़ुबूल करना ही पड़ेगी।

इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि जहाँ तक मेरे इख़्तियार की बात है मैं किसी भी क़ीमत पर इसे क़ुबूल नहीं करूँगा।

मामून ज़ोर देता रहा और जब मायूस हो गया तो उसने इमाम[अ॰] से कहा कि अगर आप ख़िलाफ़त को क़ुबूल नहीं कर रहे हैं और नहीं चाहते हैं कि मैं आपकी बैअत करूँ तो आप मेरे वली अहद बन जाइए ताकि मेरे बाद यह ख़िलाफ़त आपको मिल जाए।

इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमायाः ख़ुदा की क़सम! मेरे वालिद ने अपने बुज़ुर्गों और उन्होंने अमीरुलमोमिनीन से और उन्होंने रसूले इस्लाम[स॰] से सुन कर मुझे ख़बर दी है कि मैं तुम से पहले इस दुनिया से जाऊँगा और मुझे ज़हर देकर मज़लूमाना शहीद किया जाएगा। ज़मीन और आसमान के फ़रिश्ते मेरे ऊपर आँसू बहाएंगे और मैं परदेस में हारून रशीद की क़ब्र के पास दफ़न किया जाऊँगा।

मामून ने रोते हुए कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! जब तक मैं ज़िंदा हूँ किसमें इतनी हिम्मत है कि आपको शहीद कर सके या कोई और नुक़सान पहुँच सके?

इमाम[अ०] ने फ़रमायाः अगर चाहूँ तो बता सकता हूँ कि मुझे कौन शहीद करेगा।

मामून ने कहाः ऐ फ़रज़ंदे रसूल[स०]! इन सब बातों से आपका मक़सद यह है कि आप मुश्किलों से दूर रहना चाहते हैं और क़ुबूल न करके चाहते हैं कि लोग आपको ज़ाहिद, मुत्तक़ी और परहेज़गार कहें।

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः ख़ुदा की क़सम! जब से ख़ुदा ने मुझे पैदा किया है मैंने कभी झूठ नहीं बोला है और न ही मैंने दुनिया की ख़ातिर ज़ोहद और तक़्वे को अपनाया है। वैसे भी मैं जानता हूँ कि तुम हक़ीक़त में चाहते क्या हो।

मामून ने कहाः बताइए! मैं क्या चाहता हूँ?

इमाम[अ०] ने फ़रमायाः क्या वाक़ई मैं अमान में हूँ?

मामून ने कहाः हाँ! आप अमान में हैं।

इमाम[अ०] ने फ़रमायाः तुम चाहते हो कि लोग कहने लगें कि अली बिन मूसा[अ०] दुनिया से बेज़ार नहीं थे बल्कि यह तो दुनिया थी जो अभी तक उन्हें नहीं मिल सकी थी। नहीं देखते हो कि इमाम[अ०] ने वली अहदी को इसीलिए क़ुबूल किया है ताकि एक न एक दिन ख़िलाफ़त तक भी पहुँच जाएं।

इमाम[अ०] का इतना कहना था कि मामून को गुस्सा आ गया और उसने कहा कि आप हमेशा कोई न कोई ऐसी बात कर देते हैं जिस से मुझे गुस्सा आ जाता है और फिर मेरे गुस्से से अमान भी पा जाते हैं। ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि या तो आप खुद से वली अहदी को क़ुबूल कर लेंगे या फिर मैं ऐसा करने पर आपको मजबूर कर दूँगा और अगर फिर भी आप ने क़ुबूल नहीं किया तो आपको क़त्ल कर दूँगा।

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमायाः ख़ुदा ने मुझे ख़ुद अपने ही हाथों हलाकत में पड़ने से मना किया है। अगर ऐसा ही है तो जैसा तुम्हारा दिल चाहे वैसा कर लो! मैं क़ुबूल कर लूँगा लेकिन इस शर्त के साथ कि मैं न ही किसी को कोई ओहदा दूँगा और न ही किसी को उसके ओहदे से हटाऊँगा और न ही किसी क़ानून या सिस्टम को बदलूँगा। मैं वली अहदी को क़ुबूल करने के बाद सिर्फ़ दूर रह कर ही मश्वरा दूँगा बाक़ी मेरा कोई अमल दख़ल नहीं होगा।

मामून ने यह शर्त मान ली और हज़रत[अ०] को अपना वली अहद बना दिया।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: १२८

कुछ रिवायतों में है कि इमाम[अ०] ने कहा कि ऐ ख़ुदा! तूने मुझे ख़ुद अपने ही हाथों हलाकत में पड़ने से मना किया है। अगर मैंने इसकी वली अहदी की पेशकश को क़ुबूल नहीं किया तो इसकी तरफ़ से कुछ ही क़दमों की दूरी पर मौत मेरा इंतेज़ार कर रही है। मैं इस वक़्त बिल्कुल मजबूर हूँ... ऐ ख़ुदा! तेरे अहद के अलावा कोई अहद, अहद नहीं है। अगर कोई वली है तो बस तेरी तरफ़ से। मुझे अपने दीन को क़ाएम करने और अपने रसूल[स०] की सुन्नत को ज़िंदा करने में कामयाब फ़रमा! तू ही मेरा मददगार है और तू ही सबसे बेहतर मौला और मददगार है। इसके बाद रोते हुए और ग़मगीन हालत में अपनी बयान की हुई शर्तों के साथ वली अहदी को क़ुबूल कर लिया।[1]

इमाम के इस तरह से वली अहदी को क़ुबूल करने के बाद मामून ने हुक्म दिया कि तमाम फ़ौजी अफ़सर, सारे क़ाज़ी, सरकारी ओहदेदार और अब्बासी ख़ानदान के अफ़राद एक साथ आएं और बैअत करें। मामून ने इस काम के लिए दौलत भी ख़ूब ख़र्च की थी ताकि अपने अफ़सरों को राज़ी कर सके लेकिन इस सबके बावजूद भी जुलूदी, अली बिन इमरान और मूसा (या अबू यूनुस) नाम के तीन अफ़सरों ने हज़रत अली रज़ा[अ०] की बैअत नहीं की जिसकी वजह से मामून ने उन्हें क़ैद में डाल दिया था।

बैअत का यह प्रोग्राम बहुत शानदार और बड़े पैमाने पर मुनअक़िद किया गया था। इस मौक़े पर इमाम[अ०] के नाम का एक सिक्का भी ढाला गया था और इमाम[अ०] की तारीफ़ में लोगों ने मिंबरों से ख़ुतबे भी दिए थे।

---

[1] बिहारुल अनवार, जि०: २६, पेज: १३१

इमाम[अ०] ने अपनी शर्तों को मानने पर मजबूर किया।

इमाम रज़ा[अ०] फ़रमाते हैंः एक दिन मामून ने मुझ से कहा कि ऐ अबल हसन! काश आप एक ख़त उन कुछ अफ़सरों को लिख देते जो कुछ इलाक़ों में हमारे ख़िलाफ़ तहरीकें चला रहे हैं (यानी अपने उन तरफ़दारों को हुकूमत के ख़िलाफ़ क़दम उठाने से रोक देते)।

मैंने कहा कि ऐ अमीर! अगर तुम उन शर्तों पर अमल करोगे जिन शर्तों पर मैंने वली अहदी को क़ुबूल किया है कि न तो कोई हुक्म जारी करूँगा और न किसी को कोई ओहदा दूँगा और न ही किसी को उसके ओहदे से हटाऊँगा तो मैं भी अपने वादे पर अमल करूँगा।

यह वली अहदी मेरे लिए कोई नेमत नहीं है। मैं मदीने में था और सारी दुनिया में मेरा हुक्म चल रहा था। मैं मदीने में ख़ुद अपनी सवारी पर सवारी करता था और गली-कूचों में आता-जाता था। मदीने में वहाँ के लोगों के लिए मैं ही सबसे ज़्यादा महबूब इन्सान था। वहाँ अगर कोई मुझ से कोई ऐसी हाजत या ज़रूरत बयान करता था जो मेरे बस में होती थी तो मैं उसे ज़रूर पूरा करता था।

मामून ने कहा कि मैं आपकी शर्तों पर अमल करूँगा और अपने वादे से मुकरूँगा नहीं।[1]

---

[1] बिहारुल अनवार, जि० :४६, पेजः १५५, काफ़ी से नक़्ल किया गया।

मामून और उसके बुरे मक़सद

हारून रशीद के बेटे मामून अब्बासी का नाम अब्दुल्लाह था। उसकी माँ हारून के दरबार में ख़िदमत करने वाली एक बदसूरत कनीज़ थी जिसका नाम मराजिल था। मामून सन् 170[हि०] यानी उसी साल पैदा हुआ था जिस साल हारून को ख़िलाफ़त मिली थी और सन् 218[हि०] यानी इमाम रज़ा[अ०] की शहादत के पंन्द्रह साल बाद 48 साल की उम्र में इस दुनिया से चला गया था।

पैदाइश के बाद ही मामून की माँ मर गयी थी इसलिए मामून ने इस बच्चे की परवरिश के लिए उसे जाफ़र बिन यह्या बरमकी को दे दिया था। इस बच्चे की तालीम और तरबियत की ज़िम्मेदारी फ़ज़ल बिन सहल को दी गई जो ज़ुर-रियासतैन के नाम से मशहूर था जो आगे चलकर मामून का वज़ीर बन गया था और उसी के हाथों सरख़्स हम्माम में क़त्ल भी कर दिया गया था।

अपने भाई अमीन के बरख़िलाफ़ मामून एक मेहनत-मशक़्क़त करने वाला और ऐशो इश्रत से दूर रहने वाला इन्सान था। साथ ही उसे तरह-तरह के इल्म और फ़न भी आते थे जिनमें वह माहिर था। इसके अलावा दूसरे तमाम ख़लीफ़ाओं के मुक़ाबले में फ़िक़्ा और कलाम का भी बड़ा आलिम था।

हज़रत अली[अ०] ने अपनी पेशीनगोइयों में बनी अब्बास के ख़ुलफ़ा में से मामून के बारे में फ़रमाया था कि उनमें से सातवाँ ख़लीफ़ा इन सब के बीच सबसे ज़्यादा पढ़ा-लिखा और स्कॉलर होगा।[1]

---

[1] मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब, जि०: २, पेज: २७६

मामून की मुश्किलें और परेशानियाँ

यह बात तो बिल्कुल साफ़ है कि अपने अक़ीदे और अपने नज़रियात व सोच की बुनियाद पर मामून कोई ऐसा इन्सान नहीं था कि ख़िलाफ़त जैसी इतनी बड़ी चीज़ किसी और को दे दे क्योंकि यही वह ख़िलाफ़त तो थी जिसके लिए उसने इतने पापड़ बेले थे, यहाँ तक अपने भाई अमीन को भी क़त्ल कर दिया था। इतना ही नहीं बल्कि दूसरे हिस्टोरिकल फैक्ट्स भी इस नज़रिए को साबित करते हैं। इसलिए अगर वह इमाम रज़ा[अ०] को ख़िलाफ़त या वली अहदी की पेशकश कर रहा था तो उसके पीछे उसकी सियासत और स्ट्रेटिजी के अलावा और कुछ नहीं था क्योंकि उसके सामने ऐसी सियासी मुश्किलें आ खड़ी हुई थीं जिनका तोड़ इसके अलावा और कुछ था ही नहीं कि वह इमाम[अ०] के सामने वली अहदी की पेशकश रख दे।

मामून के सामने जो मुश्किलें थीं वह यह हैं:

1- अवाम ख़ासकर अब्बासी ख़ानदान उसे एक बाग़ी मानता था क्योंकि उसने अपने बाप हारून की वसीय्यत के ख़िलाफ़ काम किया था और अपने भाई अमीन को क़त्ल कर दिया था जो कि मामून का बनाया हुआ ख़लीफ़ा था।

2- ख़ानदानी लिहाज़ से भी वह किसी असली ख़ानदान का नहीं था क्योंकि उसकी माँ एक ग़ैर अरब कनीज़ थी और उसकी कोई समाजी पहचान भी नहीं थी। जबकि अमीन की माँ, ज़ुबैदा हाशमी एक तालीम-याफ़्ता और पढ़ी लिखी औरत मानी जाती थी।

3- मामून के आसपास के लोग ज़्यादातर ईरानी थे। अरब ख़ास कर बनी अब्बास उन लोगों की हुकूमत से राज़ी नहीं थे।

4- अलवियों का, ईरान ख़ास कर ख़ुरासान में अच्छा ख़ासा असर था और यह लोग बनी अब्बास ख़ास कर मामून के बाप, हारून से इस वजह से बहुत नाराज़ थे क्योंकि उसके हाथ बहुत से अलवियों के ख़ून से रंगे हुए थे। उन अलवियों ने जगह-जगह हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर रखी थी। कूफ़े में अबुस्सराया, बसरे में ज़ैद बिन मूसा, मक्के और हिजाज़ में मोहम्मद बिन जाफ़र, यमन में इब्राहीम बिन मूसा, मदीने में मोहम्मद बिन सुलेमान, वासित में जाफ़र बिन ज़ैद बिन अली और मदाएन में मोहम्मद बिन इस्माईल वग़ैरा... यह उन बग़ावतों के कुछ नमूने हैं जिनसे मामून की मुश्किलों का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

5- शियों और ईरानियों के बीच इमाम रज़ा[अ०] के असर से मामून बहुत

परेशान था। इसलिए वह चाहता था कि किसी भी तरह इमाम[अ०] को अपनी नज़र के सामने रखे।

मामून ने इन तमाम हालात और मुश्किलों पर नज़र डालने के बाद फ़ैसला किया कि अगर इमाम रज़ा[अ०] वली अहदी को क़ुबूल कर लें तो उसकी बहुत सी मुश्किलें अपने आप हल हो जाएंगी क्योंकि एक तरफ़ तो अलवियों की बग़ावतों को रोका जा सकेगा और दूसरी तरफ़ अपनी हुकूमत को भी शरई हुकूमत के तौर पर पेश किया जा सकेगा और साथ ही ईरानियों को भी अपनी तरफ़ खींचा जा सकेगा। इस काम से उसे यह फ़ायदे होने वाले थेः-

1- अलवियों की बग़ावतों का कुचलना।

2- इमाम रज़ा[अ०] को दरबार में लाकर अपनी हुकूमत को शरई बनाकर पेश करना।

3- ईरानियों को अपनी तरफ़ खींचना जो अलवियों के तरफ़दार थे।

4- इमाम रज़ा[अ०] को अपनी निगाहों के सामने रखना और उनकी तरफ़ से किसी भी मुमकिना इक़दाम से बचना।

5- हुकूमती कामों में उलझा कर इमाम रज़ा[अ०] की शख़्सियत को पामाल करना और आप[अ०] की रूहानी और मानवी शख़्सियत को दुनिया तलब बनाकर लोगों के सामने पेश करना।

अगरचे इमाम रज़ा[अ०] ने मामून की ज़िद और उसकी ज़बरदस्ती की वजह से वली अहदी को क़ुबूल कर लिया था लेकिन आप[अ०] ने ऐसा रास्ता अपनाया था कि मामून की सारी स्ट्रेटिजी न सिर्फ़ यह कि नाकाम हो गई बल्कि ख़ुद उसी के ख़िलाफ़ चली गई जिस से मामून को ख़ुद अपने किए पर शर्मिंदा होना पड़ा।

इमाम[अ०] ने जो रास्ता चुना और जो स्ट्रेटिजी अपनाई उसको इस तरह ख़ुलासा किया जा सकता हैः-

1- एक मुद्दत तक वली अहदी को क़ुबूल न करना यहाँ तक कि इमाम[अ०] को मजबूर करने के अलावा मामून के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं बचा था।

2- वली अहदी को इस शर्त के साथ क़ुबूल करना कि हुकूमत में किसी भी तरह का दख़ल नहीं देंगे।

3- अहलेबैत की टीचिंग्स और तालीमात को फैलाने के लिए ज़बरदस्त कल्चरल-एजुकेश्नल इंक़ेलाब की बुनियाद।

4- करामतों के ज़रिए विलायत और इमामत की ताक़त का इज़हार।

5- मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर मामून और उसके नज़रियों की मुख़ालेफ़त।

नमाज़े ईदे फ़ित्र

इमाम रज़ा[अ॰] की वली अहदी के दौर का एक अहम वाक़िआ ईदे फ़ित्र की नमाज़ है। मामून ने इमाम[अ॰] से कहा कि इस साल ईद की नमाज़ आप पढ़ाएंगे।

इमाम[अ॰] ने उस से फ़रमाया कि तुम ने मुझ से मेरी शर्तों को मानने का वादा किया था इसी लिए मैंने वली अहदी को क़ुबूल किया था जिसमें से एक शर्त यही थी मैं हुकूमती कामों में दख़ल नहीं दूँगा।

मामून ने कहा कि मैं सिर्फ़ यह चाहता था कि अवाम, फ़ौज और एडमिनिस्ट्रेशन का दिल मुतमइन हो जाए और यह लोग उस मक़ाम को पहचान लें जो ख़ुदा ने आपको दिया है।

मामून ने इस बात पर इतना ज़ोर दिया कि आख़िर में इमाम[अ॰] को कहना पड़ा कि अगर मुझे इस काम से दूर ही रखो तो यह मुझे ज़्यादा पसंद है वरना मैं उसी तरह नमाज़े ईद के लिए जाऊँगा जिस तरह रसूले इस्लाम[स॰] और अली बिन अबी तालिब[अ॰] जाया करते थे।

मामून ने कहा जिस तरह आपको अच्छा लगे वैसे ही जाइए लेकिन जाइए ज़रूर।

सुबह में जैसे ही लोगों को मालूम हुआ कि इमाम रज़ा[अ॰] नमाज़े ईद की इमामत के लिए घर से निकल रहे हैं, हर तरफ़ औरतों, मर्दों, बच्चों, बूढ़ों से गली-कूचे और घरों की छतें भर गईं थीं। सरकारी अफ़सर भी इमाम[अ॰] के घर आ गए थे। सूरज निकलते वक़्त इमाम[अ॰] ने ग़ुस्ल किया, सफ़ेद अमामा लगाया जिसकी एक पट्टी सीने पर डाली और दूसरी कंधों से होती हुई कमर पर डाल दी। इसके बाद अपने तरफ़दारों और चाहने वालों से भी कहा कि जैसा मैंने किया है तुम लोग भी वैसा ही कर लो। फिर हाथ में असा लिया और नंगे पाँव बाहर आए, आसमान की तरफ़ देखा और चार बार तकबीर कही। ऐसा लग रहा था कि घरों के दरवाज़े और दीवारें भी इमाम के साथ-साथ तकबीर कह रही हैं।

सरकारी अमले और लोग जो कि अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए थे, जैसे ही उन लोगों ने इमाम और उनके साथियों को इस शक्ल में देखा फ़ौरन अपने घोड़ों से नीचे उतर आए और अपने जूते उतार लिए। रिवायत में है कि कुछ तो बड़ी मुश्किल से और चाकू से अपने जूतों के तसमे काट रहे थे।[1] इमाम[अ॰] घर के दरवाज़े के पास रुके और बुलंद आवाज़ से कहाः *अल्लाहो अकरबर अ़ला मा हदाना...* लोगों ने भी

---

[1] मुन्तहल आमाल, जि०-२

इमाम[अ॰] के साथ इसको दोहराया। लोगों के रोने और फ़रियादों की आवाज़ों ने शहर की दीवारों को हिलाकर रख दिया था। इमाम[अ॰] आगे बढ़ते और हर दस क़दम के बाद रुकते थे और इस तरह तकबीर कहते थे जैसे ज़मीन और आसमान भी आप[अ॰] के साथ-साथ तकबीर कह रहे हों।

मामून के वज़ीर और फ़ौज के कमाण्डर, फ़ज़ल बिन सहल ने उस से कहा कि अगर (इमाम) रज़ा इसी तरह नमाज़े जमाअत के लिए आगे बढ़ते रहे तो लोग उन्हीं के होकर रह जाएंगे। इसलिए बेहतर यही है कि उन से लौटने के लिए कह दो। मामून ने एक आदमी को भेजा और इमाम[अ॰] को वापस होने के लिए कह दिया। इमाम[अ॰] ने अपने जूते पहने और वापस पलट गए।[1]

[1] उसूले काफ़ी, किताबुल हुज्जत, जि०: २, पेज: ४०७

देबिल का क़िस्सा

देबिल बिन अली ख़ुज़ाई इमाम रज़ा[अ०] के ज़माने में एक बहुत बड़े और मशहूर शायर थे। एक बार वह मर्व में इमाम[अ०] के पास आए और कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! मैंने आपकी शान में एक क़सीदा कहा है और क़सम खाई है कि आप से पहले किसी और को नहीं सुनाऊँगा।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि ठीक है सुनाओ!

देबिल ने अपना वह मशहूर क़सीदा पढ़ना शुरु कर दिया जिसकी शुरुआत इस तरह होती है:-

مدارس آیات خلت عن تلاوة

ومنزل وحی مقفر العرصات

''ख़ुदा की निशानियों के मदरसे तिलावत से ख़ाली हो गए हैं और वही के नाज़िल होने की जगह बेरौनक़ हो गई है।''

फिर अहलेबैत[अ०] की मज़लूमियत और उनके हक़ों की पामाली को बयान करते हुए कहने लगा:-

اری فیئهم فی غیرهم متقسّما

وایدیهم من فیئهم صفرات

''मैं देख रहा हूँ कि उनकी दौलत दूसरों के बीच तक़सीम हो रही है लेकिन उनके हाथ ख़ाली हैं।''

इतना सुनना था कि इमाम[अ०] रोने लगे और कहा कि ऐ देबिल! तुम ने सच कहा है।

इसके बाद देबिल ने अपना क़सीदा फिर से पढ़ना शुरु कर दिया यहाँ तक कि इस शेर तक पहुँच गए:-

لقد خفت فی الدّنیا وایام سعیها

وانّی لارجوا الامن بعد وفاتی

''मैं दुनिया और उसकी चीज़ों से डर रहा था लेकिन यह उम्मीद ज़रूर है कि मरने के बाद हर तरह के ख़तरे से महफ़ूज़ हो जाऊँगा।''

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा तुम्हें इस डर से महफ़ूज़ रखे।

इसके बाद देबिल अहलेबैत[अ०] की क़ब्रों की हालत बयान करते हुए इस शेर तक पहुँचे:-

وقبر ببغداد لنفس زکیة

تضمّنها الرّحمن فی الغرفات

''अहलेबैत[अ०] की पाकीज़ा रूहों की क़ब्रों में से एक क़ब्र बग़दाद में है (यानी इमाम मूसा काज़िम[अ०] की क़ब्र) जिसे ख़ुदावंदे आलम ने जन्नत के महलों में से एक महल में जगह दी है।

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि क्या मैं दो शेर बढ़ा दूँ ताकि तुम्हारा क़सीदा मुकम्मल हो जाए।

देबिल ने कहा कि बिल्कुल बढ़ा दीजिए ऐ रसूल[स०] के बेटे!

इमाम[अ०] ने यह दो शेर बढ़ाएः-

وَقَبر بِطُوسٍ يَا لَهَا مِن مُصيبة

توقّدّ بِالاَحشاء فی الحرقات

الی الحَشر حَتّی يَبعَث الله قَائمًا

يُفرّج عنّا الهمّ والكربات

''और एक क़ब्र तूस (मशहद) में है, यह कितनी बड़ी मुसीबत है जिस से दिलों में आग लगी हुई है ऐसी आग जो क़यामत तक नहीं बुझेगी। ख़ुदावंदे आलम अपना आख़िरी इमाम[अ०] भेजेगा और वही हमें इस मुसीबत और ग़मों के पहाड़ से निजात देगा।''

देबिल ने कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! तूस में यह किसकी क़ब्र है?

इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि यह मेरी क़ब्र है। ज़्यादा दिन नहीं गुज़रेंगे कि यही तूस मेरे शियों और ज़ाएरों का मरकज़ बन जाएगा। जान लो! जो इस परदेस में मेरी ज़ियारत को आएगा वह क़यामत में बख़्शा हुआ मेरे साथ होगा।

देबिल को इमाम[अ०] का तोहफ़ा

देबिल जब अपना क़सीदा पूरा कर चुके तो इमाम[अ०] ने उन से कहा कि रुके रहना। ख़ुद घर के अंदर गए और कुछ देर के बाद इमाम[अ०] का ख़ादिम इमाम[अ०] के नाम के ढले हुए 100 रिज़वी दीनार लेकर आया और देबिल से कहा कि मेरे आक़ा ने कहा है यह तुम्हारे सफ़र का ख़र्च है।

देबिल ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! मैं इसके लिए नहीं आया था और न ही मैंने किसी लालच में क़सीदा कहा था। इतना कहकर पैसों की वह थैली वापस कर दी और इमाम[अ०] से उनका एक लिबास तबर्रुक के तौर पर माँगा।

इमाम रज़ा[अ०] ने अपना एक लिबास उसी दीनार वाली थैली के साथ भेज दिया और अपने ख़ादिम से कहा कि देबिल से कह देना कि इस थैली को ले लो क्योंकि बहुत जल्दी तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़ेगी। इसलिए इसे वापस मत करो।

देबिल ने वह लिबास और पैसों की थैली ले ली और एक क़ाफ़िले के साथ मर्व चल पड़े। रास्ते में डाकुओं ने उस क़ाफ़ले पर हमला बोल दिया और देबिल के साथ-साथ तमाम क़ाफ़िले वालों को गिरफ़्तार कर लिया।

डाकू उन लोगों का माल आपस में तक़सीम करने लगे। इतने में उन्हीं में से किसी एक ने यह शेर पढ़ाः

اَری فیئهم فِی غَیرهُم متقسّما

وَایدهِم مِن فِیئهم صفرات

"मैं देख रहा हूँ कि उनकी दौलत दूसरों के बीच तक़सीम हो रही है लेकिन उनके हाथ ख़ाली हैं।"

यह वही शेर था जो देबिल ने पढ़ा था।

देबिल ने उस से पूछा कि यह किसका शेर है?

उसने कहा कि देबिल बिन अली ख़ुज़ाई का।

देबिल ने कहा कि मैं ही तो देबिल हूँ।

उस डाकू ने यह तमाम माजरा अपने सरदार से बताया तो वह सरदार देबिल के पास आया और कहा कि तुम देबिल हो?

कहा कि हाँ!

उसने कहा कि अच्छा! अपना पूरा क़सीदा सुनाओ!

देबिल ने क़सीदा पढ़कर सुना दिया।

क़सीदा सुनकर सरदार ने हुक्म दिया कि देबिल और दूसरे सभी लोगों

को आज़ाद कर दो और देबिल के एहतेराम में उन सबका माल और दौलत के माल को वापस कर दो और सबको देबिल के एहतेराम में आज़ाद करदो।

इसके बाद देबिल आगे बढ़ गए। यहाँ तक कि कुम पहुँच गए। कुम पहुँचे तो कुम के रहने वालों ने देबिल से क़सीदा सुनाने के लिए कहा। देबिल ने कहा कि सब लोग जामा मस्जिद में जमा हो जाएं। जब सब लोग आ गए तो देबिल ने अपना क़सीदा सुना दिया। क़सीदा सुनने के बाद क़सीदे के बदले में लोगों ने देबिल को बहुत सी दौलत दी।

उधर किसी तरह कुम वालों को उस लिबास के बारे में पता चल गया जो इमाम रज़ा[अ०] ने देबिल को दिया था। बस फिर क्या था, लोगों ने देबिल से कहा कि एक हज़ार दीनार में उस लिबास को हमारे हाथ बेच दो लेकिन देबिल ने मना कर दिया। उन लोगों ने कहा कि उसका एक टुकड़ा ही एक हज़ार दीनार में बेच दो लेकिन देबिल ने उसे भी क़ुबूल नहीं किया और कुम से आगे बढ़ गए।

एक गाँव में अरब जवानों के एक ग्रुप ने वह लिबास उन से छीन लिया। देबिल कुम आए और उन लोगों से वह लिबास वापस माँगा लेकिन उन जवानों ने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया यहाँ तक कि इस बारे में अपने बुज़ुर्गों की बात भी नहीं मानी और देबिल से कहा कि हम यह लिबास वापस नहीं करेंगे। इसके बदले में एक हज़ार दीनार ले लीजिए और जाइए। देबिल ने पहले तो क़ुबूल नहीं किया लेकिन जब मायूस हो गए तो बोले कि अच्छा ठीक है मुझे इसका एक टुकड़ा ही दे दो। उन जवानों ने एक हज़ार दीनार में उस लिबास का एक टुकड़ा देबिल को दे दिया।

देबिल अपने वतन वापस आए तो देखा कि चोरों ने उनके घर का सारा समान चुरा लिया है। देबिल ने इमाम[अ०] के दिए हुए उन सौ दीनारों को शियों में बेच दिया। उन लोगों ने हर दीनार को 100 दीनार में ख़रीद लिया। इस तरह देबिल को दस हज़ार दीनार मिल गए और देबिल को इमाम[अ०] की वह बात याद आ गई कि बहुत जल्द तुम्हें इन पैसों की ज़रूरत पड़ेगी।

शिफ़ा देने वाला कपड़ा

देबिल की एक कनीज़ थी जिस से वह बहुत मोहब्बत करते थे। एक बार उस कनीज़ की आँखों में बहुत ज़्यादा तकलीफ़ हो गई और हकीमों ने कह दिया कि सीधी आँख का इलाज नहीं हो सकता क्योंकि वह ला-इलाज हो चुकी है लेकिन बाईं आँख के इलाज के लिए कोशिश की जा सकती है, शायद फ़ायदा हो जाए।

देबिल बहुत परेशान हो गए। अचानक उनको याद आया कि उनके पास इमाम[अ०] के लिबास का एक टुकड़ा भी तो रखा हुआ है। फ़ौरन उस टुकड़े को उस कनीज़ की आँखों पर मल दिया और उस रात वह कपड़ा उसके माथे पर भी बाँध दिया। जैसे ही सुबह हुई तो क्या देखा कि इमाम रज़ा[अ०] की बरकत से उस कनीज़ की आँखें बिल्कुल ठीक हो चुकी हैं बल्कि पहले से भी बेहतर हो चुकी हैं।[1]

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: २, पेज: २६७, बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: २३८

मामून की नाकामी और उसकी एक नई चाल

इमाम अली रज़ा[अ०] की वली अहदी के बाद मामून को कुछ ऐसे हालात का सामना करना पड़ा जिनके बारे में उसने सोचा भी नहीं था और वह भी इस तरह कि जिस जाल में वह इमाम रज़ा[अ०] को फंसाना चाह रहा था उस में ख़ुद ही फंस गया। वह हालात हम यहाँ बयान कर रहे हैं। इमाम रज़ा[अ०] का इल्मी डिस्कशन और प्रोग्रामों और मुनाज़रों में शिरकत करना और यहूदियों, ईसाईयों और दूसरी क़ौमों से मुनाज़रा करना और उन सब पर बाज़ी ले जाना जिसकी वजह से लोगों के बीच आपके इल्म, परहेज़गारी, तक़वा और अख़लाक़ के चर्चे हर तरफ़ फैल गए थे। इसके अलावा इमाम[अ०] के ऐसे बहुत से काम और इक़दाम जिन से यह ज़ाहिर हो जाता था कि इमाम[अ०] हुकूमत पर भरोसा और एतेमाद नहीं करते हैं इसी तरह बनी अब्बास और उनके बुज़ुर्गों की मामून से नफ़रत क्योंकि उसने सिर्फ़ ख़िलाफ़त के लिए उस वक़्त के ख़लीफ़ा, अपने भाई अमीन को क़त्ल कर दिया था और सबसे बढ़कर यह कि उसने इमाम रज़ा[अ०] को अपना वली अहद बना दिया था जिसका मतलब यह था कि आगे चलकर यह हुकूमत बनी अब्बास के हाथों से निकल कर अलवियों के हाथ में चली जाएगी। यह ऐसा फ़ैक्टर था जिसकी वजह से मामून के बारे में बनी अब्बास की नफ़रत बढ़ती ही जा रही थी जिसका सुबूत मामून के ख़िलाफ़ बग़दाद वालों की बग़ावत और उसकी जगह इब्राहीम बिन मेहदी, इब्ने शकला की बैअत थी।[1] उन ना-अमनी भरे हालात में अब्बासियों और अलवियों के अलावा दूसरे फ़िरक़े भी मैदान में आ गए थे जिसकी वजह से जंगों, तहरीकों और बग़ावतों का माहोल गर्म हो गया था। इन हालात में मामून की हुकूमत बिल्कुल कमज़ोर हो गई थी।[2]

---

1 तबरी, जि०: ७, पेज: १४०

2 मुक़द्दमा इब्ने खुलदून, जि०: १, पेज: ४०५

पहला क़दम: फ़ज़्ल बिन सहल का क़त्ल

जैसे ही मामून ने देखा कि उसकी हर चाल और स्ट्रेटिजी चारों ख़ाने चित हो गई है उसने फ़ौरन ही अपनी पॉलीसी को बदलने का फ़ैसला किया और सियासत के बजाए फ़ौज का रुख़ किया। जिसके लिए उसने बग़दाद जाने का फ़ैसला किया ताकि वहाँ जाकर वहाँ के अमनो अमान को वापस लाने के साथ-साथ नाराज़ अब्बासियों को भी मना सके।

किताबों में लिखा हैः इस सिलसिले में उसने सबसे पहला क़दम यह उठाया कि अपने उस्ताद, वज़ीर और अपनी फ़ौज के सुप्रीम कमाण्डर फ़ज़्ल बिन सहल को क़त्ल करवाने का फ़ैसला किया। फ़ज़्ल बिन सहल वही शख़्स है जिसने मामून की ख़िलाफ़त व हुकूमत बनाने के लिए अपनी भरपूर कोशिशें की थीं और मामून की सियासत और हुकूमत में उसका बहुत अहम रोल था।

क़िस्सा यह है कि फ़ज़्ल बिन सहल मामून के फ़ैसले के मुताबिक़ बग़दाद जाने के लिए सरख़्स आया हुआ था। उधर मामून ने अपने चार दूसरे क़रीबी साथियों को हुक्म दिया कि जाओ और अजनबियों की तरह वहीं हम्माम में फ़ज़्ल बिन सहल को क़त्ल कर दो। और फिर अपनी साज़िश को पूरा करने के लिए और इस क़त्ल के इल्ज़ाम से बचने के लिए उसने हुक्म दिया कि फ़ज़्ल के क़ातिलों को ढूँढने के लिए फ़ौरन इक़दाम किया जाए। साथ ही क़ातिलों को पकड़ने वाले के लिए इनाम का एलान भी कर दिया।[1] और आख़िरकार उन चारों को ही फ़ज़्ल के क़त्ल के इल्ज़ाम में फाँसी पर चढ़ा दिया और उनके सर काट कर फ़ज़्ल के भाई हसन बिन सहल की तस्कीन के लिए भेज दिए।[2] मामून का यही वह पहला क़दम था जो उसने अब्बासियों को राज़ी करने के लिए उठाया था क्योंकि फ़ज़्ल बिन सहल ही वह शख़्स था जिस पर यह इल्ज़ाम था कि अब्बासियों से हुकूमत को लेकर वह अलवियों को दे रहा है।

कुछ रिवायतों में मिलता है कि हसन बिन सहल ने एक ख़त लिखकर फ़ज़्ल बिन सहल से कहा था कि मैंने तुम्हारे लिए फ़ाल देखा है जिसमें नहूसत को दूर करने के लिए आया है कि तुम, इमाम रज़ा[अ०] और मामून के साथ हम्माम जाओ और अपनी हजामत (बदन के किसी हिस्से से खून

---

[1] तबरी, जि०: ७, पेजः १४८

[2] मुहाज़ेरातु तारीख़िल उममिल इस्लामियह, पेजः१८२ इमाम अली बिन मूसा अर्रज़ा, पेजः १६५ को देखें

निकालना) कराओ ताकि ख़ून के बह जाने से यह नहूसत भी दूर हो जाए।

जब फ़ज़ल ने यह दरख़्वास्त मामून के पास भेजी तो उसने इमाम रज़ा[अ०] से गुज़ारिश की। इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि मैं कल हम्माम नहीं जाऊँगा। तुम्हारे लिए भी यही बेहतर है कि तुम भी न जाओ और इसी तरह फ़ज़ल भी कल न जाए तो बेहतर है। जब मामून ने ज़्यादा ज़ोर दिया तो इमाम[अ०] ने कहा कि मैंने आज रात रसूले ख़ुदा[स०] को ख़्वाब में देखा था जो कह रहे थे कि ऐ अली[अ०]! कल हम्माम मत जाना। तुम्हारा और फ़ज़ल का हम्माम जाना सही नहीं है। मामून ने जब यह सुना तो वह चुप हो गया।

मग़रिब के बाद इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि आज की रात में जो अज़ाब नाज़िल होने वाला है उस से ख़ुदा की पनाह माँगो! नमाज़े सुबह के बाद फिर आप[अ०] ने यही कहा कि आज जो अज़ाब नाज़िल होने वाला उस से ख़ुदा की पनाह माँगो! सूरज निकलते वक़्त इमाम[अ०] ने अपने ख़ादिम यासिर से कहा कि जाओ! छत पर जाओ और सुनो क्या कोई आवाज़ आ रही है? वह कहता है कि जब मैं ऊपर गया तो मुझे रोने और गिरया करने की आवाज़ सुनाई दी। इसी बीच मामून भी आ गया और उसने इमाम[अ०] से कहा कि आप ने फ़ज़ल के बारे में सही राय दी थी, ख़ुदा आपको अज्र दे! फ़ज़ल को हम्माम में क़त्ल कर दिया गया। फ़ज़ल के हिमायती, तरफ़दार, फ़ौजी और हुकूमती अफ़सरान मामून के दरवाज़े पर जमा हो गए थे और कह रहे थे कि मामून ही ने उसे क़त्ल किया है। वह लोग अपने साथ मामून के दरवाज़े को जलाने के लिए आग भी लेकर आए थे ताकि उसे ज़िंदा जलाकर अंदर घुस जाएं। मामून ने इमाम[अ०] से कहा कि अगर मुमकिन हो तो लोगों के पास जाकर उन्हें समझा-बुझा कर वापस कर दीजिए। इमाम[अ०] दरवाज़े पर आए तो देखा कि दरवाज़े पर एक भीड़ जमा है। आप[अ०] ने अपने हाथ से इशारा किया और कहा कि वापस जाओ! वापस जाओ! ख़ुदा की क़सम! लोग वापस होने के लिए इस तरह भाग रहे थे कि एक-दूसरे पर गिरे पड़ रहे थे। इमाम[अ०] जिसको भी इशारा करते थे वह वापस होने के लिए भागने लगता था।[1]

---

[1] उसूले काफ़ी, जि०: २, पेजः ४०६, उयूनु अख़्बारिर्रज़ा[अ०]

इमाम रज़ा[अ०] का क़त्ल

बहर हाल फ़ज़ल बिन सहल के क़त्ल से अब्बासियों को सुकून तो बहुत मिला लेकिन यक़ीनन यह अभी काफ़ी नहीं था क्योंकि उन लोगों का असली एतेराज़ इमाम रज़ा[अ०] की वली अहदी पर था क्योंकि इस से उन्हें आगे की उम्मीद ख़त्म होती दिखाई पड़ रही थी। इसलिए मामून ने फ़ैसला किया कि अब किसी भी तरह से इमाम[अ०] को रास्ते से हटाना है।

मामून को यह काम इतनी महारत से करना था कि न सिर्फ़ यह कि उस पर क़त्ल का इल्ज़ाम न लगे बल्कि इमाम[अ०] की शहादत से भी वह फ़ाएदा उठा ले और उसने ऐसा ही करने की कोशिश की कि इतनी चालाकी से यह काम किया कि कुछ हिस्टोरियंस भी शक कर बैठे कि इमाम रज़ा[अ०] को मामून ने क़त्ल किया था या किसी और ने?[1]

मामून ने बग़दाद के लिए मर्व से अपना सफ़र शुरु किया। सरख़्स के एक हम्माम में फ़ज़ल बिन सहल को क़त्ल करवाया और फिर तूस वापस आ गया ताकि वहाँ से बग़दाद के लिए सफ़र शुरु कर दे। तूस पहुँच कर अपने बाप हारून की क़ब्र पर रुका ताकि वहाँ रुक कर इमाम रज़ा[अ०] की शहादत की घिनावनी साज़िश की प्लानिंग करके उस पर अमल भी कर ले ताकि बग़दाद पहुँचने से पहले ही अब्बासियों के ग़ुस्से और नाराज़गी को कम कर दे। इस्लामी रिवायतें और तारीख़ी सच्चाईयाँ उन सुबूतों से भरी पड़ी हैं जो यह साबित करते हैं कि मामून ही ने इमाम[अ०] को शहीद किया था। इमाम अली[अ०] ने फ़रमाया था कि मेरी औलाद में से एक मर्द ख़ुरासान की ज़मीन पर ज़हर से मज़लूमाना शहीद किया जाएगा। उसका नाम मेरा नाम और उसके वालिद का नाम मूसा बिन इमरान है। याद रखो! जो भी परदेस में उसकी ज़ियारत करेगा, ख़ुदावंदे आलम उसके गुनाहों को बख़्श देगा।[2]

हज़रत फ़ातिमा[स०] के पास जो लौह थी जिसमें इमामों के नाम लिखे हुए थे, उसमें भी इमाम रज़ा[अ०] के बारे में लिखा था कि उन्हें एक मग़रूर इफ़रीत शहीद करेगा।[3]

इमाम सादिक़[अ०] ने फ़रमाया था कि मेरा पोता ख़ुरासान के शहर तूस में शहीद किया जाएगा। जो भी मारफ़त के साथ उसकी ज़ियारत करेगा, मैं ख़ुद

---

1 बिहारुल अनवार, जि०: ४६, पेज: ३११

2 वसाएलुश्शीआ, १०, बाब पेज: ८२, अल-मज़ारेह पेज: ६

3 उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: १, पेज: ३५१

उसका हाथ पकड़कर उसे जन्नत में ले जाऊँगा।[1]

इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने भी फ़रमाया था कि मेरा बेटा अली ज़हर से मज़लूमाना शहीद किया जाएगा और हारून के पास दफ़न किया जाएगा। जो भी उसकी ज़ियारत करेगा वह ऐसे ही है जैसे उसने पैग़म्बर[स०] की ज़ियारत की हो।[2]

ख़ुद इमाम रज़ा[अ०] ने भी फ़रमाया था कि ख़ुदा की क़सम! हम में से हर एक को शहीद होना है। पूछा गया कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! आपको कौन शहीद करेगा? फ़रमाया कि मेरे ज़माने का सबसे बदतर इन्सान मुझे ज़हर से शहीद करेगा।[3]

इमाम[अ०] ने मामून से भी वली अहदी वाले वाक़िए में कहा था कि मैं तुम से पहले ज़हर से मज़लूमाना तौर पर शहीद होऊँगा और अगर मुझे इजाज़त होती तो यह भी बता देता कि कौन शहीद करेगा?[4]

---

1 वसाएलुश्शीआ, जि०: १०, बाबः ८२, अल-मज़ारेह पेजः १०

2 वसाएलुश्शीआ, जि०: २१, बाबः ८२, अल-मज़ारेह पेजः १०

3 उयूनु अख़्बार्रिज़ा, जि०: २, पेजः २५६

4 उयूनु अख़्बार्रिज़ा, जि०: २, पेजः १४०

इमाम रज़ा[अ०] पर हमले का नाकाम हो जाना

कुछ किताबों में मिलता है कि एक रात मामून ने अपने तीस गुलामों को धारदार और ज़हरीली तलवारें देकर इमाम रज़ा[अ०] को क़त्ल करने के लिए भेजा कि जाओ इमाम[अ०] के टुकड़े-टुकड़े कर दो। इस काम को करने और इसे छुपाने के लिए उसने उन लोगों को इनाम देने का वादा भी किया। हुक्म के मुताबिक़ उन लोगों ने अपना काम कर दिया और यह समझ कर कि इमाम[अ०] को क़त्ल कर दिया है मामून को जाकर रिर्पोट दे दी। मामून अगले दिन काले कपड़े पहन कर और ग़मगीन चेहरा बनाकर ज़ाहिर हुआ लेकिन जब उसको ख़बर मिली कि इमाम[अ०] बिल्कुल सही सालिम हैं तो उसके चेहरे का रंग काला पड़ गया। उसने कपड़े बदले और हुक्म दिया कि कह दो कि इमाम[अ०] बेहोश हो गए थे और अब उन्हें होश आ गया है। इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! उन लोगों के बहाने और साज़िशें उस वक़्त तक कामयाब नहीं होंगी जब तक जो कुछ तक़दीर में लिखा है वह पूरा न हो जाए।[1]

[1] उयूनु अख़्बार्रिरज़ा, जि०: २, पेज: २१५

इमाम रज़ा[अ०] की शहादत

इमाम रज़ा[अ०] इतनी ज़्यादा सख़्तियों और मुश्किलों में जी रहे थे कि जब जुमे के दिन नमाज़ तमाम की, जबकि आप पसीने में शराबोर और ख़ाक आलूद थे तो दुआ के लिए हाथ उठाए और कहाः ऐ ख़ुदा! अगर मेरी मौजूदा मुश्किलों और परेशानियों का हल सिर्फ़ मौत है तो मुझे इसी वक़्त मौत दे दे!

हालात इतने सख़्त और परेशान करने वाले थे कि इमाम हमेशा ग़मगीन और परेशान रहते थे और इसी हालत में आप[अ०] इस दुनिया से चले गए थे।[1]

अपनी शहादत से एक रात पहले आप[अ०] ने हरसमा से कहा कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ उसे सुनो और याद कर लो! अब मेरे लिए ख़ुदा की तरफ़ लौटने का वक़्त आ गया है, अब मैं अपने बाप-दादा से मुलाक़ात करने जा रहा हूँ। इस ज़ालिम (मामून) ने ज़हरीले अंगूर और अनार से मुझे शहीद करने का फ़ैसला कर लिया है। उसने अंगूर को सूई और धागे से ज़हरीला किया है और अनार को अपने ग़ुलाम के ज़हरीले हाथों से छिलवाया है। वह कल मुझे अनार और अंगूर खाने के लिए बुलाएगा जिसके बाद ख़ुदा का वादा पूरा हो जाएगा।[2]

आगे चलकर रिवायत में लिखा है कि इमाम रज़ा[अ०] की शहादत के बाद जब हरसमा ने अंगूर और अनार के ज़हरीला होने के बारे में इमाम[अ०] की बातें मामून को बताईं तो मामून का रंग कभी ज़र्द पड़ रहा था, कभी लाल और कभी काला, यहाँ तक कि वह बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में ज़ोर-ज़ोर से कह रहा था! ख़ुदा की तरफ़ से मामून पर वाए हो! पैग़म्बर[स०] की तरफ़ से मामून पर वाए हो! अली बिन अबी तालिब[अ०] की तरफ़ से मामून पर वाए हो! फ़ातिमा ज़हरा[स०] की तरफ़ से मामून पर वाए हो!... और जब उसे होश आया तो उसने हरसमा से कहा कि ख़ुदा की क़सम! इस पूरी दुनिया में न तो तू और न ही कोई और, मेरे लिए इमाम रज़ा[अ०] से ज़्यादा महबूब नहीं है। ख़ुदा की क़सम! अगर मुझे कभी पता चल गया कि जो कुछ तूने देखा और सुना है वह दूसरों को भी बता दिया है तो वही तेरा आख़िरी दिन होगा। हरसमा ने वादा किया कि अगर उसने इस बारे में किसी को कुछ

---

[1] उयूनु अख़्बार्रिज़ा[अ०], जि०: २, पेजः १४

[2] उयूनु अख़्बार्रिज़ा[अ०], जि०: २, पेजः २४८

भी बताया तो उसका ख़ून मामून के लिए हलाल होगा। मामून ने इस वाक़िए को छुपाने के बारे में वादा लेकर ही उसे जाने दिया।[1]

इमाम रज़ा[अ] ने अबा सल्त से कहाः हारून की क़ब्र पर जाओ और उसके चारों तरफ़ से एक मुटठी मिट्टी लेकर आओ। जब अबा सलत लेकर आए तो इमाम[अ] ने सर की तरफ़ वाली मिट्टी को सूँघा और ज़मीन पर फेंक दिया और फ़रमाया कि मामून चाहता है कि मुझे इस जगह दफ़न करे लेकिन इस जगह इतना बड़ा पत्थर निकलेगा कि सारे ख़ुरासान के फावड़े मिल कर भी उसे नहीं निकाल सकेंगे। इसके बाद पैरों की तरफ़ वाली मिट्टी को सूँघा और वही कहा। आख़िर में क़िब्ले की तरफ़ वाली मिट्टी (हारून के सामने वाली जगह की मिट्टी) को सूँघा और फ़रमाया कि इसी जगह मेरी क़ब्र बनाई जाएगी...

इसके बाद फ़रमाया कि ऐ अबा सल्त! कल मैं उस ज़ालिम के पास जाऊँगा। अगर मैं वहाँ से खुले सर वापस आऊँ तो मुझ से बात कर लेना ताकि तुम्हारी बातों का जवाब दे दूँ और अगर सर ढक कर वापस आऊँ तो मुझ से बात मत करना।

अबा सल्त कहते हैंः अगले दिन इमाम[अ] ने कपड़े बदले और मेहराब में इंतेज़ार करने के लिए बैठ गए। इतने में मामून का ग़ुलाम आ गया और उसने इमाम[अ] से चलने के लिए कहा। इमाम[अ] चल दिए। मैं भी इमाम[अ] के साथ गया। मामून के सामने अंगूरों और दूसरे फलों से भरी हुई टोकरी रखी हुई थी। उसके हाथ में भी अंगूरों का एक गुच्छा था जिसमें से वह खा रहा था। जैसे ही इमाम[अ] को देखा अपनी जगह से उठा और इमाम[अ] को गले लगाया। इमाम[अ] की पेशानी को चूमा और अपनी जगह बिठा दिया। फिर अंगूरों का वह गुच्छा इमाम[अ] को देने के बाद बोलाः ऐ रसूल[स] के बेटे! मैंने आज तक इस से अच्छे अंगूर नहीं देखे हैं। इमाम[अ] ने फ़रमाया कि क्या जन्नत के अंगूर से भी बेहतर कोई अंगूर हो सकता है! मामून ने कहा कि इसमें से खाइए। इमाम[अ] ने फ़रमाया कि नहीं! रहने दो। उसने कहा कि नहीं, आपको खाना ही पड़ेगा। अगर आप नहीं खाएंगे तो मेरे ऊपर इल्ज़ाम लगने का ख़तरा है और लोग मुझ पर शक करेंगे। इमाम[अ] ने वह गुच्छा उठा लिया और उसमें से तीन दाने खाए, बाक़ी को ज़मीन पर फेंक कर उठ खड़े हुए।

मामून ने पूछा कि कहाँ जा रहे हैं? कहा कि जहाँ तुम ने मुझे भेजा है। इसके बाद इमाम[अ] अपना सर ढके हुए बाहर तशरीफ़ लाए, इसलिए मैंने

---

[1] उयूनु अख़्बारिज़ा[अ], जि०: २, पेजः २५३

उनके हुक्म के मुताबिक़ उन से कुछ नहीं कहा। इमाम[अ०] घर में आए और अपने बिस्तर पर लेट गए। इसके बाद दरवाज़े को बंद करने का हुक्म दे दिया। मैं दरवाज़ा बंद करके हैरान-परेशान सहन में बैठ गया। इतने में मैंने एक बहुत ख़ूबसूरत और काले बालों वाले एक नौजवान को देखा जो इमाम रज़ा[अ०] से बहुत मिल रहा था। मैं उसके पास गया और उस से पूछा कि तुम बंद दरवाज़े से कैसे अंदर आ गए? उसने कहा कि जो मुझे मदीने से यहाँ लेकर आया है वही मुझे इस बंद दरवाज़े से भी अंदर लेकर आया है।

मैंने पूछा कि आप कौन हैं? उन्होंने कहा कि अबा सल्त! मैं तुम्हारे ऊपर ख़ुदा की हुज्जत हूँ। मैं मोहम्मद बिन अली[अ०] (इमाम जवाद) हूँ। इसके बाद वह अपने वालिद के पास गए। जैसे ही इमाम रज़ा[अ०] ने अपने बेटे को देखा फ़ौरन अपनी जगह से उठे और उन्हें अपनी आग़ोश में भर लिया, उनकी दोनों आँखों के बीच बोसा लिया और अपने बेटे के ख़ूब बोसे लिए। साथ ही (इमामत के बारे में) कुछ राज़ की बातें भी कीं जिन्हें मैं नहीं समझ सका... इसके बाद इमाम[अ०] की रूह आसमान की तरफ़ परवाज़ कर गई।

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ने ग़ुस्ल देना शुरु किया ही था कि मैंने चाहा कुछ मदद कर दूँ लेकिन उन्होंने कहा कि नहीं! रहने दो! मेरे साथ कुछ ऐसे लोग हैं जो मेरी मदद कर सकते हैं। इसके बाद फ़रमाया कि अंदर जाकर कफ़न और हनूत ले आओ। मैं कफ़न लेकर आया और इमाम[अ०] ने अपने वालिद को कफ़न दिया और इसके बाद नमाज़े मैय्यत पढ़ी। फिर फ़रमाया कि ताबूत भी लेकर आओ। मैंने कहा कि क्या बढ़ई से बनवाकर लाऊँ? फ़रमाया कि नहीं! अंदर जाओ! वहाँ ताबूत रखा है। मैं अंदर गया तो मैंने वहाँ एक ताबूत रखा देखा जो पहले था ही नहीं। इमाम[अ०] ने उस ताबूत में अपने वालिद को लिटाया और दो रकअत नमाज़ पढ़ी। इसके बाद अचानक छत फटी और ताबूत उसमें से ऊपर जाकर ग़ायब हो गया।

मैंने कहा कि ऐ रसूल[स०] के बेटे! अभी मामून आएगा और इमाम रज़ा[अ०] के बारे में पूछेगा, क्या कहूँ? फ़रमाया कि ख़ामोश रहो! ऐ अबा सल्त! ऐसा कोई पैग़म्बर नहीं गुज़रा है जो पूरब में इस दुनिया से जाए और उसका वसी और जानशीन पश्चिम में हो और ख़ुदा उन दोनों के जिस्मों व रूहों को एक जगह जमा न कर दे (यानी इमाम रज़ा[अ०] को रसूले इस्लाम[स०] के पास ले गए हैं)। अभी इमाम[अ०] की बात ख़त्म भी नहीं हुई थी कि छत दोबारा फटी और ताबूत नीचे आ गया। इमाम मोहम्ममद तक़ी[अ०] ने अपने वालिद को ताबूत से बाहर निकाला और बिस्तर पर लिटा दिया जैसे अभी ग़ुस्ल व कफ़न हुआ ही न हो।

इसके बाद फ़रमाया कि ऐ अबा सल्त! मामून के लिए दरवाज़ा खोल दो! मैंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि मामून अपने ग़ुलामों के साथ आया हुआ है।

वह मलऊन जबकि ख़ुद उसी ने इमाम[अ०] को शहीद किया था, अपना गिरेबान चाक किए हुए रोता हुआ दरवाज़े पर खड़ा था और कह रहा था कि ऐ मेरे मौला! ऐ मेरे आक़ा! आप की शहादत ने मेरा जिगर टुकड़े-टुकड़े कर दिया है।

और फिर जैसा इमाम रज़ा ने बताया था वैसा ही हुआ।[1] रिवायात के मुताबिक़ इमाम[अ०] की शहादत 55 साल की उम्र में सफ़र 203[हि०] में हुई थी।

---

1 उयूनु अख़बारिर्ज़ा, जि०: २, पेज: २४४-२४५, ख़ुलासे के साथ

इमाम रज़ा[अ०] के ज़माने के कुछ ख़ास वाक़िए

सन् 183[हि०]: इमाम मूसा काज़िम[अ०] की शहादत

सन् 184[हि०]: हारून रशीद के बेटे अहमद उर्फ़ सिबती जो दुनिया को छोड़े हुए था और इबादत में मशगूल था, उसका इंतेक़ाल हुआ। वह हफ़्ते के दिन काम करता था और उसी एक दिन की मज़दूरी से पूरा हफ़्ता गुज़ारता था और इबादत करता था।

सन् 188[हि०]: अरबी लिट्रेचर यानी नह्व, लुग़त और क़राअत के माहिर अली बिन हमज़ा और हनफ़ी फ़क़ीह मोहम्मद बिन हसन शैबानी हारून रशीद के साथ तूस गए हुए था और उन दोनों का ही रै शहर पहुँच कर इंतेक़ाल हो गया था जिस पर हारून ने कहा था हम फ़िक़ा और अरबिया को रै शहर में दफ़न करके आ रहे हैं।

कुछ रिवायतों के मुताबिक़ शायरे अहलेबैत[अ०] इस्माईल बिन मोहम्मद जो सैय्यद हुमैरी के नाम से मशहूर थे, वह भी हारून रशीद के ज़माने ही में इंतेक़ाल कर गए थे लेकिन हदीसों और तारीख़ के मुताबिक़ नज़र यह आता है कि उनकी वफ़ात इमाम जाफ़र सादिक़ के ज़माने में हुई थी। इस शायर ने अहलेबैत[अ०] के फ़ज़ाएल को फैलाने में इतनी कोशिश की थी कि इमामों के दूसरे किसी भी सहाबी नहीं की थी। उन्होंने कनासा कूफ़ा में कहा था कि अली[अ०] की ऐसी एक भी फ़ज़ीलत नहीं है जो किसी ने बयान की हो और मैंने इसे अपनी शायरी में बयान न किया हो। मेरा यह घोड़ा जितना बड़ा है मैं इसे इतना ही ज़्यादा खिलाता हूँ। हदीस बयान करने वाले हदीस बयान करते हैं और सैय्यद उन्हें शेर में ढाल देता है। सैय्यद हुमैरी ने यह कहा ही था कि एक आदमी ने एक फ़ज़ीलत बयान की और सैय्यद ने फ़ौरन उसे शेर में ढाल दिया और अपना कहा हुआ पूरा कर दिया।

हारून रशीद की हुकूमत के ज़माने में अलवियों और तालिबियों की एक बहुत बड़ी तादाद शहीद कर दी गई थी और उनकी इतनी बड़ी तादाद होने की वजह से ही तारीख़ में उनके नाम भी नहीं लिखे जा सके हैं जैसे इद्रीस बिन अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना जिनकी मिस्र और अफ़रीक़ा में एक बहुत बड़ी हुकूमत थी जिनको हारून की साज़िश से ज़हर दे दिया गया था। इसी तरह दूसरे सादात जैसे यह्या बिन अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना और मोहम्मद बिन यह्या उनके बेटे जो क़ैद ही में इस दुनिया से चले गए थे। हज़रत जाफ़रे तैयार के पोते हुसैन बिन अब्दुल्लाह बिन इस्माईल जो ताज़ियानों के ज़ख़्मों से शहीद हो गए थे या फिर इमाम सज्जाद[अ०] के पोते

अब्बास बिन मोहम्मद जिनको हारून ने गुर्ज़ मार कर शहीद किया था क्योंकि हारून ने उन्हें ज़िनाकार का लड़का कह दिया था जिस पर उन्होंने हारून से कहा था कि मेरी माँ नहीं बल्कि तुम्हारी माँ ज़िनाकार है जो असल में कनीज़ थी और गुलाम बेचने वालों का जिसके यहाँ आना जाना था। इतना सुनकर हारून इतने तैश में आ गया था कि उसने फ़ौरन एक गुर्ज़ से उन पर हमला किया और वह शहीद हो गए थे।

इस तरह अलवियों की एक बहुत बड़ी तादाद मामून के ज़माने में ख़त्म हो गई थी जिसमें से एक वाक़िआ हमीद बिन क़हतबा और दूसरे साठ सादात का एक साथ ही शहीद होना भी तारीख़ी किताबों में लिखा है।[1]

189[हि०]: बरामका ख़ानदान के उरूज का ज़माना ख़त्म हो रहा था। मुल्की और हुकूमती मामले उन्हीं लोगों के हाथ में थे लेकिन यह सब हारून के हाथों ख़त्म कर दिए गए थे जिनका इबरतनाक वाक़िआ तारीख़ में आज भी लिखा हुआ है। हारून की साज़िश इतनी ज़बरदस्त थी कि जाफ़र बिन यहूया बरमकी जो हारून की बहन के शौहर और हारून के बहुत क़रीबी थे, वह भी उस वक़्त तक अपने क़त्ल होने के बारे में नहीं सोच सके थे जब तक हारून ने अपने एक आदमी को उनके क़त्ल का हुक्म नहीं दे दिया था। जब हारून का भेजा हुआ आदमी उन्हें क़त्ल करने के लिए उनके घर पहुँचा तो उन्होंने उस से कहा कि अरे हटो! यह मज़ाक़ है, हारून अकसर मुझ से मज़ाक़ करता रहता है। आख़िरकार तै यह हुआ कि उन्हें हारून के ख़ेमे के पीछे ले जाया जाए और एक बार फ़िर हारून से क़त्ल के बारे में सवाल किया जाए। उन्होंने जब दोबारा हारून का हुक्म सुना तो अपनी आँखों पर अपना रुमाल बाँध लिया और उनकी गर्दन काट दी गई। सबसे बड़ी बात यह कि हारून के भेजे हुए उस आदमी ने उन्हें शहीद कर दिया तो हारून ने उस से कहा कि फुलाँ-फुलाँ को बुलाओ, जब सब आ गए तो उन से कहा कि इस आदमी की गर्दन काट दो क्योंकि मैं जाफ़र के क़ातिल को अपनी निगाहों के सामने नहीं देख सकता।[2]

सन् 193[हि०]: 3 जमादिल अव्वल, हफ़्ते के दिन। हारून रशीद तूस (मशहद) में इस दुनिया से चला गया। उसने 23 साल और कुछ महीने ख़िलाफ़त की थी। अपनी मौत के वक़्त उसकी उम्र 44 साल और चार महीने थी और उसे वहीं दफ़न किया गया जहाँ बाद में इमाम अली रज़ा[अ०] को दफ़न किया गया था जहाँ आज इमाम रज़ा[अ०] का रौज़ा है। इमाम रज़ा[अ०] पहले ही बार-बार इसकी ख़बर दे चुके थे। इमाम[अ०] कभी-कभी फ़रमाते थे

---

[1] उयूनु अख़बारिर्रज़ा, जि०: १, पेज: ८८

[2] मुरव्वेजुज़्ज़हब, जि०: ३, पेज: ४६५

कि मुझे और हारून को एक ही कुब्बे में दफ़न देखोगे [1] और कभी-कभी फ़रमाते थे कि मुझे और उसे शहरे तूस में एक जगह जमा कर दिया जाएगा।[2] कभी-कभी यह भी कहते थे कि मैं और हारून इन दोनों की तरह हो जाएंगे। इतना कहकर अपनी दो उंगलियाँ एक दूसरे से मिला देते थे।[3]

इस सिलसिले में देबिल के शेर भी हैं जिनमें वह इस तरह कहते हैं:-

तूस में दो क़ब्रें हैं जिनमें एक क़ब्र दुनिया के सबसे अच्छे इन्सान की और दूसरी सबसे बुरे इन्सान की है और अपनी जगह यह बात लोगों के लिए एक सबक़ है। न वह ज़लील इन्सान उस पाकीज़ा सिफ़त इन्सान के वुजूद से कोई फ़ायदा उठा पाएगा और न ही उस पाकीज़ा सिफ़त इन्सान को उस बुरे इन्सान के साथ से कोई नुक़सान पहुँचेगा।

15 जमादिल अव्वल सन् 193 हि० के दिन हारून के बेटे मोहम्मद अमीन जो हारून का वली अहद था और उस वक़्त बग़दाद में था, उसकी बैअत ले ली गई। उसकी माँ यानी जाफ़र की बेटी ज़ुबैदा बनी अब्बास के ख़ानदान की एक बहुत इज़्ज़तदार औरत थी जिसके कामों में से एक काम तबरेज़ शहर की बुनियाद या उसकी नौआबादकारी और मक्के के रास्ते में कुछ कुँएं वग़ैरा हैं। उसकी सौ कनीज़ें थीं जो हाफ़िज़े क़ुरआन भी थीं इसलिए हमेशा उसके महल में सदाए क़ुरआन शहद की मक्खियों के छत्ते की तरह आती रहती थी। ज़ुबैदा का इंतेक़ाल सन् 216 हि० में हुआ था।

क़ाज़ी नूरुल्लाह ने मजालिसुल मोमिनीन में लिखा है कि ज़ुबैदा बहुत पक्की शिया थी और चूँकि हारून उसके उस पक्के अक़ीदे को समझ गया था इसलिए उसने उसे तलाक़ दे दी थी और तलाक़ नामा उसके पास भेज दिया था। ज़ुबैदा ने तलाक़ नामे के पीछे लिखकर भेज दिया था कि पिछले हालात पर मैं शुक्र करती थी मगर मौजूदा हालात पर भी मुझे कोई शर्मिंदगी या अफ़सोस नहीं है।[4]

अभी मोहम्मद अमीन की हुकूमत को 18 दिन भी नहीं हुए थे कि उसने हारून के जारी किए हुक्म को तोड़कर अपने भाई मामून को हटाकर अपने बेटे मूसा नातिक़ को अपना वली अहद बनाने का फ़ैसला कर लिया। मामून, हारून के ज़माने में अमीन के जानशीन के तौर पर पहचनवाया गया था। अमीन ने इस बारे में अपने वज़ीरों और मश्वरा देने वालों से मश्वरा किया मगर अली बिन ईसा बिन माहान के अलावा सब ने कहा कि यह ठीक नहीं

---

1 आलामुल हिदायह पेजः ३६

2 आलामुल हिदायह पेजः ३६

3 आलामुल हिदायह पेजः ३६

4 ततिम्मा अल-मुन्तहा, मोहद्दिस क़ुम्मी

होगा, इसके ग़लत असर सामने आएंगे।

लेकिन अमीन ने मामून के हटाने का हुक्म जारी कर ही दिया और अली बिन ईसा को कमाण्डर बनाकर एक बहुत बड़ा लश्कर मामून से जंग करने के लिए ख़ुरासान भेज दिया। इधर मामून ने भी ताहिर बिन हुसैन की सरदारी में चार हज़ार का लश्कर रवाना कर दिया। दोनों लश्कर रै शहर के पास एक-दूसरे के आमने-सामने आ गए और वहीं जंग शुरु हो गई। अमीन की फ़ौज का सरदार अपने बड़े लश्कर के होने की वजह से मग़रूर हो गया था इसलिए ग़लतियाँ कर बैठा और मामून की फ़ौज से हार गया और क़त्ल हो गया। मामून ने इस जीत के बाद अमीन को गद्दी से हटा दिया और ताहिर हुसैन को हरसमा बिन अयुन के साथ बग़दाद के लिए रवाना कर दिया। काफ़ी लम्बी जंग, घेराव, क़त्ल-ग़ारतगरी और बरबाद होने के बाद बग़दाद के लोगों को होश आया तब जाकर उन्होंने अमीन से अलग होने का फ़ैसला किया। उधर ताहिर ने भी माल व दौलत की लालच देकर वहाँ के बुज़ुर्गों को मामून का साथी बना लिया था और इस तरह अमीन से ख़िलाफ़त छीन ली गई, मगर हरसमा ने अमीन को अमान दे दी और दोनों ने एक छोटी सी कश्ती में एक-दूसरे से मुलाक़ात की। हरसमा अमीन का एहतेराम करता था लेकिन ताहिर ने कुछ लोगों को अमीन को गिरफ़्तार करने के लिए भेज दिया। उन लोगों ने पानी में घुसकर कश्ती को डिबो दिया लेकिन हरसमा और अमीन ने तैर कर अपनी जान बचा ली। ख़ुदा का करना यह हुआ कि अमीन उस जगह पानी से बाहर आया जहाँ ताहिर की फ़ौज पहले से ही मौजूद थी। इसलिए उसे आसानी से गिरफ़्तार कर लिया गया और इस से पहले कि उसकी मुलाक़ात ताहिर से हो पाती, ख़ुद ताहिर ही के हुक्म से उसे क़त्ल कर दिया गया। यह वाक़िआ पीर के दिन 25 मोहर्रम सन् 198 हि॰ का है।

उस वक़्त अमीन की उम्र 33 साल थी और उसने क़रीब पाँच साल ख़िलाफ़त की थी। अमीन ऐश व आराम, शराब व कबाब, दुनिया परस्ती और हुस्न का दीवाना था। साथ ही काफ़ी वक़्त तक मामून के लश्कर के साथ भी उसकी जंग चली थी, इन दोनों फ़ैक्टर्स की वजह से उन दिनों हज़रत अबूतालिब अ॰ की औलाद को ज़्यादा परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ा और इस बीच कोई बड़ा वाक़िआ भी पेश नहीं आया।

सन् 196 हि॰: अमीन के क़त्ल हो जाने के बाद बग़दाद वालों ने भी मामून की बैअत की।

सन् 198 हि॰: मामून ने अपने भाई क़ासिम बिन रशीद को वली अहदी के ओहदे से हटाया।

सन् 199 हि॰: अपने वक़्त के बहुत बहादुर और जंगी माहिर अबुस्सराया

सरी बिन मुंसिर शैबानी ने कूफ़े में बग़ावत का परचम बुलंद किया और लोगों को मोहम्मद बिन इब्राहीम की बैअत के लिए बुलाया और कूफ़े के सारे लोगों ने एक साथ उसकी बैअत कर ली।

मोहम्मद बिन इब्राहीम का काम बहुत आगे बढ़ गया था और उन्होंने ख़लीफ़ा की फ़ौज को कई महाज़ों पर शिकस्त दी। यहाँ तक कि मोहम्मद का इंतेक़ाल हो गया और लोगों ने मोहम्मद बिन मोहम्मद बिन ज़ैद बिन अली बिन हुसैन की बैअत कर ली। उन्होंने अपने मुलाज़िमों को आसपास के इलाक़ों में भेजना शुरु कर दिया।

आख़िरकार मामून के वज़ीर, फ़ज़ल बिन सहल के भाई हसन बिन सहल ने हरसमा को उसे हराने के लिए भेजा और वह तीस हज़ार के फ़ौजी लश्कर के साथ कूफ़े की तरफ़ रवाना हो गया। जिसके बाद हरसमा और अबुस्सराया की फ़ौज के बीच एक बहुत भयानक जंग हुई जिसमें हरसमा की फ़ौज हार गई। लेकिन इसके बावजूद कि अबूस्सराया ने अपने फ़ौजियों को इस बात से होशियार कर दिया था कि हरसमा की फ़ौज की कमीन में उसके पीछे आने वाले लशकर से बच कर रहें फिर भी वह लोग उसके पाच हज़ार सिपाहियों के जाल में फंस गए और दोबारा जंग शुरु हो गई। हरसमा जिसे गिरफ़्तार कर लिया गया था उसे अब दोबारा आज़ाद करा लिया गया था उसने अपनी शातिराना चालें चलना शुरू कर दी और यह पेशकश रखीः अगर तुम लोग चाहते हो कि हुकूमत, अब्बासियों के हाथों से निकल जाए तो इतना सब्र कर लो कि हम लोग पीर के दिन एक साथ बैठकर बातचीत कर लें। जिसको चुन लिया जाए सब उसकी बैअत कर लें। उसकी यह साज़िश काम कर गई और कूफ़े की फ़ौज पीछे हट गई। अबुस्सराया ने अपने फ़ौजियों को चीख़-चीख़ कर ख़ूब समझाया कि यह धोखा और साज़िश है, वह लोग हार की कगार पर हैं और हम बस जीतने ही वाले हैं लेकिन उसकी फ़ौज ने उसकी एक न सुनी। आख़िरकार उसने गुस्से में आकर जंग ख़त्म कर दी और जुमे के दिन एक तक़रीर की और उसमें उन लोगों को हज़रत अली[अ०] का क़ातिल और इमाम हुसैन[अ०] का साथ छोड़ देने वाला बताया। उन लोगों की इस बेवफ़ाई पर उसने उन्हें ख़ूब बुरा-भला कहा। उसकी इस जज़्बाती तक़रीर को सुनकर कुछ लोगों की ग़ैरत वापस आई लेकिन उसने जंग को दोबारा शुरु करने से बिल्कुल इनकार कर दिया और कुछ लोगों के साथ पीर की रात में 13 मोहर्रम को कूफ़े से बाहर निकल गया।

इधर कूफ़े की अहम शख़्सियतों ने हरसमा से अवाम के लिए अमान माँगी और उसने सब लोगों को अमान दे दी। जब हालात कंट्रोल में आ गए तो वह बग़दाद चला गया। आख़िरकार अबुस्सराया ने भी अमान के बाद हार मान ली जिसके बाद उसे हसन बिन सहल के पास भेज दिया गया लेकिन

उसने उसे अपने भाई के क़त्ल के इल्ज़ाम में जान से मार दिया और उसके सर को शहर के पूरब वाले हिस्से में और बदन को पश्चिम वाले हिस्से में लटकवा दिया।

इसी साल मामून ने इमाम अली रज़ा[अ॰] को इज़्ज़त और एहतेराम के साथ शहर मर्व लाने के लिए रजा बिन अबी ज़हाक और यासिर ख़ादिम को मदीने भेजा। सन् 201[हि॰] में एक बहुत बड़े प्रोग्राम में इमाम रज़ा[अ॰] की वली अहदी की रस्म अंजाम दी गई जिसमें बड़ी-बड़ी शख़्सियतें, सादात, उलमा और मशहूर लोग शिरकत करने वालों में शामिल थे। मामून ने सबसे पहले अपने बेटे अब्बास को इमाम रज़ा[अ॰] की बैअत करने का हुक्म दिया और उसके बाद दूसरे तमाम लोगों ने बैअत की। इस मौक़े पर उसने अवाम को ख़ूब तोहफ़े दिए। शायरों और ख़तीबों ने शेर पढ़े और तक़रीरें कीं। इसके बाद मामून ने हुक्म जारी किया कि अब से बनी अब्बास अपने काले लिबास के बजाए हरा लिबास पहना करेंगे।

सन् 201[हि॰]: इमाम मूसा काज़िम[अ॰] की बेटी हज़रत फ़ातिमा मासूमा[स॰] ने शहर मर्व में अपने भाई इमाम रज़ा[अ॰] से मुलाक़ात करने के लिए मदीने से कूच किया। रास्ते में सावा शहर में बीमार हो गईं तो पूछा कि यहाँ से क़ुम कितनी दूर है? बताया गया कि दस फ़रसख़। इतना सुनकर अपने ग़ुलाम से कहा कि मुझे क़ुम की तरफ़ ही ले चलो। लेकिन ज़्यादा सही रिवायत है कि ख़ानदाने साद उनके पास आया था और उसने उन से क़ुम चलने की गुज़ारिश की थी। क़ुम तक मासूमा[स॰] के ऊँट की मिहार मूसा बिन ख़ज़रज ने थाम रखी थी। क़ुम पहुँच कर उन्होंने मासूमा को अपने ही घर में रहने की जगह दी थी। हज़रत मासूमा[स॰] कुल 17 दिन क़ुम रह सकीं और इसके बाद आपकी वफ़ात हो गई। आप[अ॰] को वहीं क़ुम में दफ़न कर दिया गया जहाँ आज भी आप[अ॰] का रौज़ा आम और ख़ास सभी के लिए मरकज़ बना हुआ है। ख़ुदा का आप पर दुरूद व सलाम हो!

सन् 202[हि॰]: मामून के उस्ताद, वज़ीर, सुप्रीम फ़ौजी कमाण्डर और सबसे क़रीबी फ़ज़ल बिन सहल को सरख़्स हम्माम में क़त्ल कर दिया गया। उसी साल मालिकी फ़िरक़े के इमाम मालिक बिन अनस ने भी मदीने में वफ़ात पाई जिन्हें जन्नतुल बक़ी में रसूले इस्लाम[स॰] की बीवियों वाले हिस्से में दफ़न किया गया।[1]

---

[1] इमाम रज़ा[अ॰] की इमामत के ज़माने के वाक़िआत ज़्यादा तर मोहद्दिसे क़ुम्मी की किताब 'ततिम्मतुल मुन्तहा' से लिए गए हैं।

इमाम रज़ा[अ०] की ज़ियारत की फ़ज़ीलत[1]

हमदान बिन इस्हाक़ कहते हैं: मैं इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] के पास गया और उन से मालूम किया कि अगर कोई इन्सान मशहद में आपके वालिद की क़ब्र की ज़ियारत करे तो उसका अज्र क्या है?

इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि जो भी मशहद में मेरे वालिद की ज़ियारत करेगा ख़ुदावंदे आलम उसके अगले-पिछले गुनाहों को बख़्श देगा।

हमदान कहते हैं कि मैं इमाम[अ०] की ज़ियारत के बाद हज करने गया और वहाँ मेरी मुलाक़ात अय्यूब बिन नूह से हुई। उसने मुझ से कहा कि इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] ने मुझ से कहा है कि जो भी मशहद में मेरे वालिद की क़ब्र की ज़ियारत करेगा, ख़ुदा उसके अगले-पिछले गुनाहों को बख़्श देगा। ख़ुदा उसकी ख़ातिर उस वक़्त तक के लिए मोहम्मद[स०] और अली[अ०] के मिंबर के सामने एक मिंबर बना देगा जब तक तमाम लोगों का हिसाब किताब न हो जाए।

---

[1] इमाम रज़ा[अ०] की ज़ियारत के सिलसिले में हदीसें, वसाएलुश्शीआ, जि०-१० बाब-८२ से ८८ तक अबवाबुल मज़ार में नक़्ल हुई हैं।

इमाम रज़ा[अ०] की शफ़ाअत

हज़रत अली[अ०] ने फ़रमाया हैः मेरे बेटों में से एक बेटा मशहद में ज़हर से मज़लूमाना तौर पर शहीद किया जाएगा। उसका नाम मेरा नाम और उसके वालिद का नाम मूसा बिन इमरान है। याद रखो! जो भी परदेस में उसकी ज़ियारत को जाएगा, ख़ुदावंदे आलम उसके अगले-पिछले गुनाहों को बख़्श देगा, चाहे यह गुनाह सितारों, बारिश की बूँदों या फिर पेड़ों की पत्तियों के बराबर ही क्यों न हों।

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया हैः जो भी मेरे उस हक़ की पहचान के साथ मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा जो अल्लाह तआला ने मेरी इताअत के सिलसिले में वाजिब किया है तो मैं और मेरे दादा-परदादा क़यामत में उसकी शिफ़ाअत करेंगे और जिसकी भी हम शिफ़ाअत कर देंगे वह निजात पा जाएगा चाहे उसके गुनाह तमाम जिन्नों और इन्सानों के बराबर हों।

इमाम रज़ा[अ०] ही ने एक दूसरी जगह पर फ़रमाया हैः बहुत जल्दी मैं ज़हर से मज़लूमाना तौर पर शहीद कर दिया जाऊँगा। जो भी मेरी मारफ़त (इमाम की इमामत के इक़रार) के साथ मेरी ज़ियारत करेगा, ख़ुदावंदे आलम उसके अगले-पिछले गुनाहों को बख़्श देगा।

इमाम के सहाबी अबा सल्त कहते हैंः एक बार मैं इमाम रज़ा[अ०] के पास मौजूद था कि क़ुम से कुछ लोग इमाम[अ०] के पास आए। सलाम किया और इमाम[अ०] ने उनका एहतेराम करते हुए फ़रमाया कि मरहबा! तुम लोग ही हमारे हक़ीक़ी शिया हो। एक ज़माना आने वाला है जब तुम लोग मशहद में मेरी क़ब्र की ज़ियारत किया करोगे। जो भी ग़ुस्ल करने के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा उसके गुनाह ऐसे माफ़ कर दिए जाएंगे जैसे अभी माँ के पेट से बाहर आया हो।

जन्नती ज़ाएर

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ॰] ने फ़रमाया हैः जो भी मेरे वालिद की ज़ियारत करेगा, उसके लिए जन्नत है। इसके बाद फ़रमाया कि मैं उस इन्सान के लिए ख़ुदा की तरफ़ से जन्नत की ज़मानत लेता हूँ जो मशहद में दफ़न मेरे वालिद की ज़ियारत उनके हक़ की मारेफ़त के साथ करेगा।

अली बिन अस्बात से रिवायत हैः मैंने इमाम तक़ी[अ॰] से अर्ज़ किया कि जो मशहद में आपके वालिद की ज़ियारत करे, उस इन्सान का क्या अज्र है? फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम! उसका अज्र जन्नत है, ख़ुदा की क़सम! उसका अज्र जन्नत है।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] ने फ़रमाया हैः मेरा पोता मशहद में शहीद किया जाएगा। जो भी उसके हक़ की मारेफ़त के साथ उसकी ज़ियारत करेगा, मैं ख़ुद उसका हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में ले जाऊँगा, चाहे वह गुनाहे कबीरा करने वाला ही क्यों न हो। सवाल किया गया कि हक़ की मारेफ़त का क्या मतलब है? फ़रमाया कि ज़ियारत करने वाले को मालूम होना चाहिए कि वह ऐसा इमाम है जिसकी इताअत वाजिब है, जिसे परदेस में शहीद किया जाएगा।

रसूले इस्लाम[स॰] ने फ़रमाया है कि बहुत जल्दी मेरे जिगर का एक टुकड़ा मशहद में दफ़न किया जाएगा। जो मोमिन उसकी ज़ियारत करेगा ख़ुदावंदे आलम जन्नत को उस पर वाजिब कर देगा और उसके जिस्म को जहन्नम पर हराम कर देगा।

इमाम मूसा काज़िम[अ॰] ने इमाम रज़ा[अ॰] की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया कि जो भी मेरे इस बेटे की ज़ियारत करेगा, उसके लिए जन्नत जैसे तोहफ़ा है।

रसूल[स०] का ज़ाएर

हज़रत जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया हैः जो भी ग़ुरबत में उन (इमाम रज़ा[अ०]) की ज़ियारत करेगा और यह जान कर करेगा कि वह अपने वालिद के बाद ख़ुदा की तरफ़ से ऐसे इमाम हैं जिनकी इताअत वाजिब है तो वह शख़्स ऐसे ही है जिसने रसूले ख़ुदा[स०] की ज़ियारत की हो।

इमाम रज़ा[अ०] ने भी फ़रमाया है कि ख़ुरासान में एक जगह है जो आने वाले ज़माने में फ़रिश्तों के आने-जाने का मरकज़ होगी। क़यामत तक आसमान से एक गिरोह नीचे आएगा और एक गिरोह ऊपर जाएगा। रावी ने पूछा कि कौन सी जगह?

इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि वह तूस (मशहद) है। ख़ुदा की क़सम! यह जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। जो भी वहाँ मेरी ज़ियारत को जाएगा वह उस शख़्स की तरह है जिसने रसूले ख़ुदा[स०] की ज़ियारत की हो। अल्लाह तआला उसके लिए एक हज़ार बेहतरीन हज और एक हज़ार मक़बूल उमरों का सवाब लिखेगा। इसके अलावा मैं और मेरे वालिद क़यामत में उसकी शिफ़ाअत भी करेंगे।

इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने फ़रमाया है कि मेरा बेटा अली[अ०] ज़हर से मज़लूमाना शहीद किया जाएगा जिसे हारून के पास दफ़न किया जाएगा। जो भी उसकी ज़ियारत करेगा वह उस शख़्स की तरह है जिसने रसूल[स०] की ज़ियारत की हो।

शोहदा का सवाब

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने एक हदीस में फ़रमाया हैः जो मारेफ़त के साथ उन (इमाम रज़ा[अ०]) की ज़ियारत करेगा, अल्लाह तआला उसे रसूल[स०] के सामने शहीद होने वाले सत्तर नेक शहीदों का अज्र देगा।

इमाम अली रज़ा[अ०] ने भी फ़रमाया हैः ख़ुदा की क़सम! हम में से हर एक को या क़त्ल होना है या शहीद। इमाम[अ०] के सहाबी अबा सल्त ने पूछा कि आप को कौन शहीद करेगा? इमाम[अ०] ने जवाब दिया कि मेरे ज़माने में दुनिया का सबसे बुरा इन्सान मुझे ज़हर देकर शहीद करेगा और फिर एक तंग जगह पर परेदस में दफ़न कर देगा। याद रखो! जो भी उस परदेस में मेरी ज़ियारत को आएगा अल्लाह तआला उसे एक लाख शहीदों, एक लाख सिद्दीक़ों, एक लाख हज व उमरा और एक लाख मुजाहिदों का सवाब देगा और उसे हमारे साथ महशूर करेगा। ऐसा शख़्स जन्नत के सबसे आला दर्जों में हमारे साथ होगा।

खुदा का ज़ाएर

इमाम मूसा काज़िम[अ॰] ने फ़रमाया हैः जो भी मेरे बेटे अली[अ॰] की क़ब्र की ज़ियारत करेगा वह खुदा के नज़दीक उस शख़्स की तरह है जिसने सत्तर बेहतरीन हज किए हों।

रावी ने कहा कि सत्तर हज? इमाम[अ॰] ने कहा कि हाँ! सत्तर हज। रावी ने फिर भी ताज्जुब से पूछा कि सत्तर हज? इमाम[अ॰] ने कहा कि हज की क्या बात है, कभी-कभी तो हक़ भी क़ुबूल नहीं होता है, उसकी ज़ियारत करने वाला शख़्स तो ऐस है जैसे उसने अर्श पर अल्लाह तआला की ज़ियारत की हो।

हाजतों को पूरा और ग़मों को दूर करने वाला

रसूले इस्लाम[स०] ने फ़रमाया थाः जल्दी ही मेरे जिगर का एक टुकड़ा ख़ुरासान (मशहद) में दफ़न किया जाएगा। जैसे ही कोई परेशान इन्सान उसकी ज़ियारत करेगा ख़ुदावंदे आलम उसकी परेशानी को दूर कर देगा और जो गुनाहगार भी उसकी ज़ियारत करेगा ख़ुदा उसके गुनाहों को बख़्श देगा।

इमाम अली नक़ी[अ०] ने फ़रमाया हैः जिसको भी ख़ुदा से कोई हाजत पूरी करवाना हो उसे चाहिए कि ग़ुस्ल करके मेरे जद इमाम रज़ा[अ०] की मशहद में ज़ियारत करे। वहाँ जाकर क़ब्र के सिरहाने दो रकअत नमाज़ पढ़े और अपनी हाजत को क़ुनूत में ख़ुदा से तलब करे। अगर वह ऐसा करेगा तो उसकी दुआ क़ुबूल हो जाएगी मगर शर्त यह है कि किसी गुनाह या क़त-ए-रहम के बारे में दुआ न माँगे। बेशक! वह जगह जन्नत की जगहों में से एक जगह है। कोई भी मोमिन ऐसा नहीं है जो उस क़ब्र की ज़ियारत करे और ख़ुदावंदे आलम उसको जहन्नम की आग से आज़ाद न करे और बेहतरीन जगह में दाख़िल न करे।

मुस्तहब हज से भी बेहतर

अहमद बिन मोहम्मद बज़न्ती से रिवायत हैः मैंने एक बार इमाम रज़ा[अ०] के हाथ से लिखा हुआ पढ़ा था कि मेरे शियों तक यह पैग़ाम पहुँचा दो कि मेरी ज़ियारत एक हज़ार हज के बराबर है।

बज़न्ती कहते हैं कि मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से कहा कि हज़ार हज? इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि हाँ! ख़ुदा की क़सम! हज़ार-हज़ार (दस लाख) हज उस शख़्स के लिए हैं जो उनके हक़ की मारेफ़त के साथ उनकी ज़ियारत करे।

एक दूसरी रिवायत में है कि इमाम मूसा काज़िम[अ०] ने फ़रमाया था कि जो भी मेरे बेटे अली[अ०] की क़ब्र की ज़ियारत करेगा उसके लिए सत्तर हज़ार हज का सवाब है।

इमाम अली रज़ा[अ०] ने एक रिवायत में फ़रमाया है कि ख़ुदा मेरे ज़ाएरों के लिए हज़ार बेहतरीन हज और हज़ार मक़बूल उमरों का सवाब लिखेगा।

एक दूसरी रिवायत में है कि जो भी इस परदेस में मेरी ज़ियारत को आएगा, अल्लाह तआला उसके लिए हज़ार हज व उमरों का सवाब लिखेगा।

लेखक का मानना हैः सवाब में यह फ़र्क़ शायद ज़ियारत के लिए सफ़र की सख़्तियों, आसानियों, ख़ुलूस, ईमान, मारेफ़त और ज़ाएरों के दरजात की वजह से है।

जहन्नम से निजात

इमाम तक़ी[अ॰] ने फ़रमाया हैः तूस (मशहद) के दो पहाड़ों के बीच एक ऐसी मिट्टी है जो जन्नत की मिट्टियों में से है। जो भी वहाँ जाएगा वह क़यामत में जहन्नम की आग से बचा रहेगा।

एक दूसरी हदीस में है कि जो भी तूस में मेरे वालिद की क़ब्र की ज़ियारत करेगा, ख़ुदावंदे आलम उसके अगले-पिछले गुनाहों को बख़्श देगा। उसके लिए रसूल[स॰] के मिंबर के सामने एक मिंबर तैयार किया जाएगा यहाँ तक कि ख़ुदा दूसरे बंदों का हिसाब किताब कर ले।

इमाम रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया हैः जो भी दूर होने के बावजूद मेरी ज़ियारत करेगा, मैं क़यामत में तीन मौक़ों पर उसके पास आऊँगा ताकि उसे बचा सकूँः एक उस वक़्त जब नाम-ए-आमाल को सीधे और उलटे हाथ में दिया जाएगा, दूसरे पुल सेरात पर और तीसरे मीज़ान पर।

ख़ुदा के बेहतरीन मेहमान

इमाम मूसा काज़िम[अ॰] ने एक हदीस में फ़रमाया है, ''क़यामत के दिन चार आदमी ''अव्वलीन'' में से और चार आदमी ''आख़िरीन'' में से अर्श पर मौजूद होंगे। अव्वलीन में से चार आदमीः नूह[अ॰], इब्राहीम[अ॰], मूसा[अ॰] और ईसा[अ॰] हैं। आख़िरीन में से चारः मोहम्मद[स॰], अली[अ॰], हसन[अ॰] और हुसैन[अ॰] हैं। इसके बाद इमाम[अ॰] ने फ़रमाया कि अइम्मा[अ॰] की क़ब्रों के ज़ाएर हमारे साथ होंगे। याद रखो! ज़ाएरों में सबसे ऊँचा दर्जा मेरे बेटे (रज़ा[अ॰]) के ज़ाएरों का होगा।

इमाम अली रज़ा[अ॰] ने फ़रमाया है, ''मैं ज़हर से मज़लूमाना तौर पर क़त्ल किया जाऊँगा और मुझे हारून के पास दफ़न किया जाएगा। अल्लाह तआला मेरी क़ब्र को मेरे शियों और मेरे चाहने वालों का मरकज़ बना देगा। जो भी उस ग़ुरबत में मेरी ज़ियारत करेगा मेरे लिए ज़रूरी है कि क़यामत के दिन उसकी ज़ियारत को जाऊँ।

उस हस्ती की क़सम जिसने मोहम्मद[स॰] को रिसालत देकर इज़्ज़त दी और तमाम इन्सानों में से चुना! तुम में से जो भी मेरी क़ब्र के पास नमाज़ पढ़ेगा वह ख़ुदा से मुलाक़ात के वक़्त बख़शिश के क़ाबिल होगा।

उस हस्ती की क़सम जिसने रसूल[स॰] के बाद हमें इमामत देकर इज़्ज़त बख़्शी और वसीय्यत को हम से ही मख़सूस किया! यक़ीनन मेरी क़ब्र के ज़ाएर क़यामत में ख़ुदा के बेहतरीन मेहमान होंगे।''

इमाम[अ०] के बराबर

इमाम रज़ा[अ०] ने फ़रमाया है, ''ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रेगा कि तूस (मशहद) मेरे शियों और ज़ाएरों का मरकज़ बन जाएगा। याद रखो! जो भी मेरी ग़ुरबत में मेरी ज़ियारत करेगा वह क़यामत में मेरे दर्जे पर होगा और उसको बख़्श दिया जाएगा।''

एक दूसरी रिवायत में है कि जो भी ग़ुरबत में मेरी ज़ियारत करेगा वह क़यामत में हमारे साथ उठेगा और जन्नत के आला दर्जों में हमारे साथ होगा।

इमाम रज़ा[अ०] और इमाम हुसैन[अ०] का ज़ाएर

अली बिन महज़ियार कहते हैं कि मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से अर्ज़ किया, ''आप पर क़ुरबान हो जाऊँ! इमाम रज़ा[अ०] की ज़ियारत ज़्यादा अफ़ज़ल है या इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत?

इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि मेरे वालिद की ज़ियारत ज़्यादा अफ़ज़ल है क्योंकि इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत सारे मुसलमान करते हैं लेकिन मेरे वालिद की ज़ियारत ख़ास शियों के अलावा कोई नहीं करेगा।

जनाबे अब्दुल अज़ीम हसनी कहते हैं: मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी[अ०] से अर्ज़ किया कि इमाम हुसैन[अ०] की क़ब्र की ज़ियारत और तूस में आपके वालिद की क़ब्र की ज़ियारत के बारे में सोच कर मैं परेशान हूँ, आप ही कुछ बताइए। इमाम[अ०] ने फ़रमाया कि यहीं ठहरो! इसके बाद अंदर गए और जब बाहर आए तो आप[अ०] की आँखों से आँसू बह रहे थे, इसी हालत में आप[अ०] ने फ़रमाया कि इमाम हुसैन[अ०] की ज़ियारत करने वाले बहुत हैं लेकिन तूस में मेरे वालिद की क़ब्र के ज़ियारत करने वाले बहुत कम हैं।

यह ख़ुदावंदे आलम का लुत्फ़ व करम ही है कि आज ईरान में अहलेबैत[अ०] के चाहने वाले परवानों की तरह इमाम रज़ा[अ०] के रौज़े पर जमा हैं और अपनी मोहब्बत और अक़ीदत का सुबूत दे रहे हैं वह भी इस तरह कि दुनिया में शायद ही कोई दूसरी ऐसी बारगाह होगी जो इमाम रज़ा[अ०] की बारगाह की अज़मत और बुलंदी का मुक़ाबला कर सके।

ज़ियारत के लिए उठाई जाने वाली सख़्तियों की अहमियत

इमाम मोहम्मद तक़ी[अ॰] ने फ़रमाया है, ''ख़ुदा हर उस शख़्स के बदन को जहन्नम पर हराम कर देगा जो मेरे वालिद की ज़ियारत के लिए सख़्तियाँ बर्दाश्त करेगा जैसे बारिश, गर्मी या सर्दी का मौसम।

इमाम अली नक़ी[अ॰] ने फ़रमाया है, "क़ुम" और "आबे" वालों की बख़शिश हो चुकी है क्योंकि यह लोग मशहद में मेरे दादा इमाम अली रज़ा[अ॰] की क़ब्र की ज़ियारत करते हैं। याद रखो! जो भी उनकी ज़ियारत करेगा और इस राह में बारिश की एक बूँद (छोटी सी मुश्किल) भी बर्दाश्त करेगा, ख़ुदा उसके बदन को जहन्नम की आग पर हराम कर देगा।''

इमाम रज़ा[अ॰] ने भी फ़रमाया है, ''अगर कोई मोमिन मेरी ज़ियारत करे और उसके चेहरे पर बारिश की एक बूँद भी पड़ जाए तो ख़ुदा उसके बदन को जहन्नम की आग पर हराम कर देगा।[1]

---

[1] इमाम रज़ा[अ॰] की फ़ज़ीलत में बयान होने वाली तमाम हदीसें वसाएलुश्शीया की दसवीं जि० के बाब-८२ से बाब ८८ तक अबवाबुल मज़ार से ली गई हैं।

इमाम रज़ा[अ०] की कुछ हदीसें

1- पाकीज़गी पैग़म्बरों के अख़लाक़ में से है।

من اخلاق الانبياء التنظف

2- जब ख़ुदा कोई काम करना चाहता है तो बंदों की अक़्लों को उन से ले लेता है। इसके बाद अपना काम अंजाम देता है और अपने इरादे को पूरा करता है और फिर हर अक़्ल वाले की अक़्ल उसे वापस कर देता है। जिसके बाद वह कहता है: अरे! यह सब कैसे हो गया?

اِذَا اَرَادَ اللّٰه اَمراً سَلَبَ العِبَادَ عُقُولِهِم ، فَانفَذَ اَمرَه وَتَمّت اِرَادَتَه فَاِذَا انفَذَ اَمرَه رَدّ اِلی
كُلِّ ذِی عَقلٍ عقلُه فَیَقُول كَیفَ ذَا وَمِن اَینَ ذَا

3- ख़ामोशी मोहब्बत लेकर आती है और यह हर अच्छाई का रास्ता दिखाती है।

اِلصَّمتُ یَكسِبُ المَحَبَّةَ اِنّه دَلیلٌ عَلی كُلِّ خَیرٍ

4- हर इन्सान की दोस्त उसकी अक़्ल और उसकी दुश्मन जिहालत है।

صَدِیقُ كُلّ اَمرءٍ عَقلُه وَ عَدُوُّه جَهلَه

5- अपने घर वालों के लिए रोज़ी की तलाश में लगा रहने वाला ख़ुदा की राह में जेहाद करने वाले से बढ़कर है।

اِنَّ الَّذِی یطلُبُ مِن فَضلِ یَكُفُّ بِه عَیَالِه اَعظَمُ اَجرًا مِنَ المُجَاهِدِ فِی سَبِیلِ اللّٰهِ

6- सख़ी इन्सान दूसरों के खाने में से इसलिए खाता है ताकि दूसरे भी उसके खाने में से खाएं लेकिन कंजूस दूसरों के खाने में से खाता ही नहीं है कि कहीं वह उसके खाने में से न खा लें।

اَلسخِیُّ یَاكُلُ مِن طَعَامِ النَّاسِ لِیَاكُلُوا مَن طَعَامِه وَالبَخِیلُ لاَ یَاكُلُ مِن طَعَامِ النَّاسِ لِئَلَّا یَاكُلُوا مِن
طَعَامِه

7- एक ज़माना आने वाला है जिसमें ख़ैरियत के दस हिस्से होंगे: नौ हिस्से लोगों से दूर रहने में और एक ख़ामोशी में।

یاَتِی عَلَی النَّاسِ زَمَانٌ تَكُون العَافِیَه فِیهِ عَشرَةِ اَجزَاءٍ: تِسعَة مِنهَا فِی اِعتِزَالِ النَّاسِ
وَوَاحِد فِی الصُّمتِ

8- किसी कमज़ोर के लिए तुम्हारी मदद सदक़े से बढ़कर है।

عَونُکَ لِضَعِیفٍ اَفضَلُ مِنَ الصَّدَقَةِ

9- कोई भी उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त को नहीं समझ सकता जब तक कि उसके अंदर तीन ख़सलतें न हों: (1) दीन के बारे में समझ और शऊर (2) ज़िंदगी का सही सिस्टम (3) मुश्किलों और सख़्तियों में सब्र और अटल रहना।

لاَیَستَکمِلُ عَبدٌ حَقِیقَةُ الاِیمَانِ حَتّٰی تَکُونَ فِیهِ، خِصَالٌ ثَلاَثٌ: التَّفَقُّهُ فِی الدِّینِ وَحُسنُ التَّقدِیرِ فِی المَعِیشَةِ وَالصَّبرُ عَلَی الرَّزَایَا

10- अली बिन शुऐब कहते हैं कि मैं एक बार इमाम रज़ा[अ०] के पास गया तो आप[अ०] ने फ़रमाया, ''ऐ अली! किसकी ज़िंदगी सबसे बेहतर है?''

मैंने कहा, ''मौला! आप मुझ से बेहतर जानते हैं।''

इमाम[अ०] ने कहा, ''उसकी जिसकी ज़िंदगी में दूसरों की ज़िंदगी अच्छी हो।''

قَالَ عَلِی بنِ شُعَیب، دَخَلتُ عَلَی اَبِی الحَسَنِ الرِّضَا فَقَالَ لِی: یَا عَلِی مَن اَحسَنُ النَّاسِ مَعَاشاً؟ قُلتُ: یَا سَیِّدِی اَنتَ اَعلَمُ بِهِ مِنِّی فَقَالَ: یَا عَلِی مِن حُسنِ مَعَاشِ غَیرِهِ فِی مَعَاشِهِ

11- दो लोगों के अलावा क़नाअत पर कोई अमल कर ही नहीं सकता: एक वह दीनदार जो आख़िरत के अज्र की तलाश में हो और दूसरा वह बुज़ुर्गवार जो पस्त और गिरे हुए लोगों से दूर रहता हो।

لاَیَسلُکُ طَرِیقَ القَنَاعَةِ اِلاَّ رَجُلاَنِ اِمَّا مُتَعَبِّدٌ یُرِیدُ اَجرَ الآخِرَةِ اَو کَرِیمٌ یَتَنَزَّهُ عَن لِئَامِ النَّاسِ

12- सात चीज़ों का सात चीज़ों के बिना होना मज़ाक़ उड़ाने जैसा है:-

1) जो ज़बान से इस्तेग़फ़ार तो करे लेकिन दिल में शर्मिंदा न हो, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।
2) जो ख़ुदा से तौफ़ीक़ की दुआ तो करे लेकिन कोशिश न करे, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।
3) जो एहतियात तो करना चाहे लेकिन परहेज़ न करे, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।
4) जो ख़ुदा से जन्नत तो माँगे लेकिन सख़्तियों और मुश्किलों पर सब्र न करे, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।

5) जो जहन्नम की आग से पनाह तो माँगे लेकिन शहवतों को न छोड़े, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।

6) जो ख़ुदा को याद तो करे लेकिन उस से मुलाक़ात के लिए जल्दी न करे, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।

7) जो मौत को याद तो करे लेकिन उसकी तैय्यारी न करे, उसने ख़ुद अपना मज़ाक़ उड़ाया है।[1]

سَبعَةُ اَشيَاءِ بِغَيرِ سَبعَةَ اَشيَاءِ مِنِ الاَستهزَا: مَن استَغفَر بِلِسَانِه وَلَم يَندَم بِقَلبِه فَقَد استهزء بِنَفسِه وَمَن سَأَلَ الله التَّوفِيقَ وَلَم يَجتَهِد فَقَد استَهزَء بِنَفسِه وَمَن استَحزَمَ وَلَم يَحذَر فَقَد استَهزَءَ بِنَفسِه وَمَن سَأَلَ الله الجَنَّة وَلَم يَصبِر عَلى الشَّدَائِدِ فَقَد استَهزَءَ بِنَفسِه وَمَن تَعَوّذُ بِالله مِنَ النَّارِ وَلم يَترَک شَهوَاتَ الدُّنيَا فَقَد استَهزَءَ بِنَفسِه وَمَن ذَكَرَ الله وَلَم يَستَبِق اِلَى لِقَائِه فَقَدِ استَهزَءِ بِنَفسِه

13- बंदे की ख़ुदा से सबसे नज़दीक हालत वह है जब वह सजदे में हो और यह वही चीज़ है जिसके लिए ख़ुदा ने फ़रमाया है, सजदा करो और मेरे पास आ जाओ।[2]

اَقرَبُ مَا يَكُونُ العَبدُ مِنَ اللهِ عَزَّ وَ جَلَّ وَ هُوَ سَاجِدٌ وَ ذَلِکَ قَولِه تَبَارَکَ وَتَعَالَى وَالسَجِدُوا اَقتَرِبِ

[1] बिहारुल अनवार, जि०: ७५, पेजः ३५६, लेकिन हदीस की आख़िर वाली बात बिहार में नहीं है जिसे मादनुल जवाहर कराजकी से लिया गया है। साथ ही ऊपर बयान होने वाली तमाम हदीसें बिहार, जि०-७५, के ''इमामा रज़ा^{अ०} की नसीहतें'' वाले हिस्से से ली गई हैं।

[2] उयूनु अख़्बारिरज़ा[अ०], जि०: २, पेजः ७

बेग़ैरत और बे-तक़वा औरतों पर होने वाला अज़ाब

14- अपनी सनद से शेख़ सदूक़ इमाम मोहम्मद तक़ी[अ] से और इमाम तक़ी[अ] अपने वालिद इमाम अली रज़ा[अ] से और इमाम रज़ा[अ] अपने अजदाद से नक़ल करते हुए फ़रमाते हैं कि इमाम अली[अ] ने फ़रमाया है:-

मैं और फ़ातिमा[स] रसूल[स] के पास गए। देखा कि रसूल[स] बहुत ज़्यादा रो रहे हैं। मैंने कहा कि ऐ रसूले ख़ुदा[स] मेरे माँ-बाप आप पर क़ुरबान हो जाएं! क्या हुआ आप इतना क्यों रो रहे हैं?

रसूल[स] ने फ़रमाया कि ऐ अली[अ]! जिस रात (मेराज) मुझे आसमान पर ले जाया गया था, वहाँ मैंने अपनी उम्मत की कुछ औरतों को देखा था जो बहुत बड़े अज़ाब में घिरी हुई थीं। मुझे उन्हीं की हालत और उनके अज़ाब के बारे में सोच कर रोना आ रहा है।

मैंने एक औरत को देखा जिसको बालों से लटकाया गया था और उसका भेजा उबल रहा था।

एक दूसरी औरत को देखा जिसे ज़बान से लटकाया गया था और खौलता हुआ पानी उसके हलक़ में उंडेला जा रहा था।

एक और औरत को देखा जिसे उसकी छातियों से लटका दिया गया था।

एक औरत अपने ही बदन का गोश्त खा रही थी और उसके नीचे से आग निकल रही थी।

एक औरत के हाथों को उसके पैरों से बाँध दिया गया था और उस पर साँप-बिच्छू हमले कर रहे थे।

एक गूँगी-बहरी और अंधी औरत को आग के एक ताबूत में बंद कर दिया गया था। उसका भेजा उसकी नाक से बह रहा था और जुज़ाम व बर्स से उसका बदन बोटी-बोटी हो गया था।

एक औरत को आग के तंदूर में पाँव के बल लटका दिया गया था।

एक औरत के जिस्म के अगले-पिछले हिस्सों को आग की क़ैंचियों से काटा जा रहा था (या ख़ुद अपने हाथों से काट रही थी)।

एक औरत के चेहरे और हाथों में आग लगी हुई थी और वह अपने जिस्म के अंदर वाले हिस्सों को खा रही थी।

एक औरत को देखा कि उसका सर सुअर के सर के जैसा और बदन गधे के जैसा था जो हज़ार-हज़ार तरह के अज़ाब में घिरी हुई थी।

एक औरत कुत्ते के जैसी थी। आग उसके पीछे से दाख़िल हो रही थी और मुँह से निकल रही थी। फ़रिश्ते आग के गुर्ज़ से उसके सर और बदन पर वार कर रहे थे।

हज़रत फ़ातिमा[स०] ने कहा कि ऐ मेरे महबूब और मेरी आँखों की ठंडक! इन सब ने ऐसा क्या किया था कि ख़ुदा ने उनके लिए इतना सख़्त अज़ाब रखा है?

रसूल[स०] ने फ़रमाया कि जिस औरत को उसके बालों से लटकाया गया था, वह अपने बालों को मर्दों से नहीं छुपाती थी।

जिसको ज़बान से लटकाया गया था, वह अपने शौहर को परेशान करती थी।

जिसको उसकी छातियों से लटकाया गया था, वह अपने शौहर के साथ हमबिस्तरी से भागती थी।

जो पाँव के बल लटकी हुई थी, वह अपने शौहर की इजाज़त के बिना घर से बाहर जाती थी।

जो अपने बदन का गोश्त खा रही थी, वह ग़ैर मर्दों के लिए अपने बदन को सजाती-संवारती थी।

जिसके दोनों हाथ उसके पैरों से बंधे हुए थे और साँप-बिच्छू हमले कर रहे थे, वह सही तरह से तहारत नहीं करती थी। अपने कपड़े गंदे रखती थी, जनाबत और हैज़ (पीरियड्स) के बाद ग़ुस्ल नहीं करती थी, सफ़ाई का ख़याल नहीं रखती थी और नमाज़ को अहमियत नहीं देती थी।

जो गूँगी और बहरी थी, वह ज़िना के ज़रिए बच्चेदार होती थी और उन बच्चों को अपने शौहर की गर्दन पर डाल देती थी।

वह जिसका गोश्त क़ैंचियों से काटा जा रहा था (या ख़ुद अपने गोश्त को क़ैंची से काट रही थी), वह दूसरे मर्दों के लिए ख़ुद को पेश कर देती थी।

जिसके बदन और चेहरे में आग लगी हुई थी वह अपने अंदर के हिस्से खा रही थी, वह ज़िना के लिए दलाली करती थी।

जिसका चेहरा कुत्ते जैसा था और आग उसके पीछे से दाख़िल और मुँह से बाहर निकल रही थी, वह गाने-बजाने वाली और हसद करने वाली थी।

इसके बाद रसूल[स०] ने फ़रमाया कि वाए हो उस औरत पर जो अपने शौहर को ग़ुस्सा दिलाए और कितनी ख़ुश क़िस्मत है वह औरत जिसका शौहर उस से राज़ी हो।[1]

---

[1] उयूनु अख़्बारिर्रज़ा[अ०], जि०: २, पेज: ६ से ११ तक

नेकी की जज़ा

हज़रत इमाम रज़ा अ० ने फ़रमायाः

बनी इस्राईल में से एक आदमी ने अपने किसी रिश्तेदार को क़त्ल करके उसकी लाश बनी इस्राईल ही में से एक नेक शख़्स के घर के रास्ते पर डाल दी थी और फिर ख़ुद ही ख़ून का बदला भी माँग रहा था।

लोगों ने हज़रत मूसा[अ०] से कहा कि उस ख़ानदान ने उस आदमी को क़त्ल कर दिया है। बताइए क़ातिल कौन है?

हज़रत मूसा[अ०] ने कहा कि एक गाय ले आओ। जैसा कि क़ुरआने करीम ने भी बयान किया है, उन लोगों ने कहा कि क्या आप हमारे साथ मज़ाक़ कर रहे हैं?

हज़रत मूसा[अ०] ने कहा कि ख़ुदा मुझे जिहालत से दूर रखे!

अगर वह लोग किसी भी तरह की कोई भी गाय ले आते तो मामला आसानी से ख़त्म हो जाता लेकिन वह लोग बाल की खाल निकालने लगे। इसलिए ख़ुदा ने भी सख़्ती शुरू कर दी।

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा[अ०]! अपने ख़ुदा से पूछकर बताइए कि यह गाय कैसी हो?

कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि यह गाय न छोटी हो न बड़ी बल्कि मियानी हो। अगर वह लोग कोई भी गाय (मियानी) ले आते तो मामला आसानी से ख़त्म हो जाता लेकिन वह लोग बाल की खाल निकालने लगे। इसलिए ख़ुदा ने भी सख़्ती शुरू कर दी।

इसके बाद उन्होंने कहा कि ऐ मूसा! अपने ख़ुदा से कहिए कि उसका रंग भी बताए।

कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि ज़र्द रंग की ऐसी गाय लाओ जिसको देखकर इन्सान ख़ुश हो जाए। अगर वह लोग कोई भी गाय (आम ज़र्द रंग की) ले आते तो मामला आसानी से ख़त्म हो जाता लेकिन वह लोग बाल की खाल निकालने लगे। इसलिए ख़ुदा ने भी सख़्ती शुरू कर दी।

उन्होंने इसके बाद कहा कि अपने ख़ुदा से कहिए कि ज़रा और खुल कर बताए कि यह गाय कैसी हो क्योंकि अभी तक हम उलझन में हैं।

कहा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि ऐसी गाय हो जो न करोबारी हो, न ज़मीन जोते, न खेत सींचे और ऐसी साफ़-सुथरी कि उसमें कोई दाग़ धब्बा भी न हो।

बोले कि अब आप ने सही बात बताई है। इसके बाद ख़ुदा की बताई हुई ऐसी गाय की तलाश में निकल खड़े हुए। जैसी गाय चाहिए थी वैसी बनी

इस्राईल से एक जवान के पास मिल गई। उसने कहा कि मैं इस गाय को सिर्फ़ इस शर्त पर बेचूँगा कि इसकी खाल को सोने से भर दो।

उन्होंने हज़रत मूसा[अ०] से कहा कि वह ऐसा-ऐसा कह रहा है। हज़रत मूसा ने कहा कि उसने जो कुछ कहा है हक़ कहा है, ख़रीद सकते हो। वह लोग गाय को ख़रीद कर ले आए और जनाबे मूसा[अ०] के हुक्म के मुताबिक़ उसे ज़बह कर दिया। इसके बाद हज़रत मूसा[अ०] ने कहा कि उसकी दुम उस मुर्दे से छुआ दो वह ज़िंदा हो जाएगा। जैसे ही उन्होंने ऐसा किया वह ज़िंदा हो गया और बोला कि ऐ ख़ुदा के नबी[स०]! जिस पर इल्ज़ाम लगाया जा रहा है वह मेरा क़ातिल नहीं है बल्कि मेरा क़ातिल तो मेरे चचा का बेटा है।

हज़रत मूसा[अ०] ने अपने साथियों से कहा कि इस गाय के बारे में जानते हो?

उन लोगों ने कहा कि नहीं! आप ही बताइए!

कहा कि बनी इस्राईल में से एक जवान अपने बाप के साथ बड़ी मेहरबानी से पेश आता था। एक दिन उसने एक मरियल सी गाए ख़रीदी और पैसे देने के लिए जब घर में आया तो देखा कि चाबियाँ बाप के सर के नीचे रखी हैं और वह सो रहा है। मोहब्बत की वजह से वह अपने बाप को जगा नहीं सका और गाय ख़रीदने से इन्कार कर दिया। जब उसके बाप की आँख खुली और उसे सारी बात का पता चला तो उसने कहा कि शाबाश! इसके बाद एक मादा गाय अपने बेटे को दे दी और कहा कि यह उस गाय के बदले में जो तुम्हारे हाथ से निकल गई है।

यह वाक़िआ बयान करके हज़रत मूसा[अ०] ने कहा कि देखा! नेकी इन्सान को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है।[1]

यह वही गाय थी जिसको सोने से भरी हुई खाल के बदले में बेचा गया था। हक़ीक़त में उस जवान ने दुनिया और आख़िरत दोनों जगह के ख़ैर को अपने बाप के साथ नेकी करके ख़रीद लिया था

اَللّٰھُمّ صَلّ عَلی عَلِی بنِ مُوسَی الرَّضَا المُرتَضَی اَلاِمَامُ التَّقِیُ النَّقِی وَحُجَّتِکَ عَلی مِن
فَوقَ الاَرضَ وَمِن تَحتَ الثَّری الصّدِیق الشَّھِید صَلاۃً کَثِیرَۃً تَامَّۃً زَاکِیَۃً مُتَوَاصِلَۃً
مُتَوَاتِرَۃً مُتَرَادِفَۃً کَاَفضَل مَا صَلّیتَ عَلَی اَحَدٍ مِن اَولِیَائِکَ۔